राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

श्री खरतरगच्छीय ज्ञान मन्दिर, जयपुर

ग्रन्थाङ्क ५२

राजस्थानी साहित्य - संग्रह

भाग २

[देवजी वगडावतारी, प्रतापसिंघ म्होकमसिंघरो न वीरमदे सोनीगरारो वात]

प्रकाशक

राजस्थान राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत अखिल भारतीय तथा विशेषत: राजस्थानदेशीय पुराननकालीन
सस्कृत, प्राकृत, अपभ्र श, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्या सशोधन मन्दिर, पूना; गुजरात साहित्य-सभा, अहमदाबाद;
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-सस्थान, होशियारपुर; निवृत्त सम्मान्य नियामक—
(आनरेरि डायरेक्टर), भारतीय विद्याभवन, बम्बई ।

ग्रन्थाङ्क ५२

राजस्थानी साहित्य-संग्रह

भाग २

[देवजी बगडावतारी, प्रतापसिंघ म्होकमसिंघरी नै वीरमदे सोनीगरारी वात]

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थानी साहित्य-संग्रह

भाग २

सम्पादन कर्त्ता

पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम ए, साहित्यरत्न

राजस्थानी शोध सहायक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१७ | भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८२ | खिस्ताब्द १९६०

प्रथमावृत्ति १००० | मूल्य २ ७५

मुद्रक—श्री हरिप्रसाद पारीक साधना प्रेस जोधपुर

RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publicaion of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rajasthan in particular.

*

GENERAL EDITOR

ACHARYA JINA VIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

Honorary Member of the German Oriental Society, Germany, Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, Visvesvrananda Vaidic Research Institute, Hosiyarpur, Punjab, Gujarat Sahitya Sabha, Ahemdabad, Retired Honorary Director, Bharatya Vidya Bhawan, Bombay; General Editor, Gujarat Puratattva Mandir Granthavali, Bharatiya Vidya Series, Singhi Jain Series etc. etc.

* *

NO. 52

RAJASTHANI SAHITYA SAMGRAHA

Pt. 2.

WITH

INTRODUCTION, NOTES, APPENDIXES, ETC.

* * *

Published

Under the Orders of the Government of Rajasthan

By

The Director, Rajasthana Prachy Vidya Pratisthana

(Rajasthan Oriental Research Institute)

JODHPUR (RAJASTHAN)

V S 2017]

All Rights Reserved

[1960 A D

RAJASTHANI SAHITYA SAMGRAHA

Pt 2

Edited

WITH INTRODUCTION NOTES APPENDIXES ETC

By

SHRI PURUSHOTTAM LAL MENARIA, M A Sahity Ratna

Rajasthani Research Asst

Rajasthan Oriental Research Institute,
Jodhpur

Published

Under the orders of the Government of Rajasthan

By

The Director Rajasthan Oriental Research In titute
Jodhpur (Rajasthan)

V S 2017] [1960 A D

विषय - तालिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
१	सञ्चालकीय वक्तव्य	
२	सम्पादकीय प्रस्तावना	१–२४
३	देवजी वगडावतारी वात	१–१५
४.	प्रतापसिंह म्होकमसिंघरी वात	१६–६७
५	वीरमदे सोनीगरारी वात	६८–९९
६	परिशिष्ट	१००–१०८

सञ्चालकीय वक्तव्य

—०—

राजस्थानमे और अन्यत्र ज्ञान-भण्डारोमे सैकडो ही राजस्थानी कथाए प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थोमे लिखित प्राप्त होती है, जिनमे हमारी पुराकालीन रीति-नीति, आचार-व्यवहार एव मनोभावादिसे सम्बद्ध सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, भाषावैज्ञानिक और साहित्यिक परम्पराओके सुस्पष्ट दर्शन होते है, अतएव इन कथाओका हमारे साहित्यमे विशेष महत्त्व है।

अनेक राजस्थानी कथाए सस्कृत और अपभ्रशादि कथाओके अनुवादोके रूपमे प्राप्त होती है तथा अनेक कथाए मौलिक कल्पना और ऐतिहासिक घटनाओ एव चरित्रो पर आधारित हैं। अनेक कथाओका उद्देश्य धर्म-प्रचार और शिक्षा है तो कई कथाए मनोरञ्जन मात्रके लिए लिखी गई है। शैलीकी दृष्टिसे भी राजस्थानी कथाओमे विभिन्नताओके दर्शन होते है, जिनका विशेष अध्ययन हमारे विद्वानोके लिये अपेक्षित है।

राजस्थानी कथा-साहित्यके विशेष महत्त्वको दृष्टिगत रखते हुये हमने प्रतिष्ठानकी प्रमुख प्रकाशन-श्रेणी राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-मालामे राजस्थानी साहित्य-सग्रह भाग १के अन्तगत श्रीयुत प्रो नरोत्तमदास स्वामी एम ए द्वारा सम्पादित तीन वस्तुवर्णनात्मक राजस्थानी कथाओका प्रकाशन किया था।

"राजस्थानी साहित्य-सग्रह, भाग २"के अन्तगत तीन विशेष राजस्थानी कथाओ—१ देवजी बगडावतारो वात, २ प्रतापसिंह म्होकमसिंघरो वात और ३ वीरमदे सोनीगरारी वातका प्रकाशन किया जा रहा है जिनका सम्पादन हमारे शोध-सहायक श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया एम ए, साहित्यरत्नने परिश्रमपूर्वक किया है। पाठ सम्पादनमे यथासाध्य वार्त्ताओकी प्राप्त विविध प्रतियोका उपयोग किया गया है तथा पाठान्तर्गत टिप्पणियोमें आवश्यक ऐतिहासिक और भाषा-वैज्ञानिक ज्ञातव्य प्रस्तुत किये गये हैं, जिनसे सम्पादकके सम्बद्ध विषयोके

विशेष अध्ययन और योग्यताका परिचय मिलता है। साथ ही सम्पादकने वार्त्ताओंसे सम्बद्ध प्रतियो और विषयों पर परिशिष्ट एव भूमिकामे अध्ययन-पूर्वक विस्तारसे लिखा है जिससे पाठकोको अध्ययनमे विशेष सुविधा प्राप्त होगी।

प्रस्तुत पुस्तकके प्रकाशन-व्ययका अर्द्धांश केन्द्रीय भारत सरकारने प्रादेशिक भाषा-विकास-योजनाके अन्तर्गत प्रदान करना स्वीकार किया है तदर्थ हम आभार प्रदर्शित करते है।

आशा है कि राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके हमारे प्रिय पाठकोको प्रस्तुत प्रकाशन रुचिकर प्रतीत होगा।

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर

जयपुर,
ता० १२ अक्टूबर '६० ई

सम्पादकीय प्रस्तावना

साहित्य, संगीत, चित्र, मूर्ति और वास्तु कला आदिके माध्यमसे आत्माभिव्यक्ति करना मानव प्रकृतिकी एक प्रधान विशेषता रही है। साथ ही आप बीती कहना और पर-बीती सुनना भी मानव समाजकी नैसर्गिक प्रवृत्ति है, जिसके परिणामस्वरूप कथा साहित्यका उदय और विकास हुआ है।

पूर्व पुरुषों और अनुभवी व्यक्तियोंके ज्ञानका लाभ प्राप्त कर अपने अनुभव एवं ज्ञानका लाभ आने वाली पीढियोंको प्रदान करते रहनेकी परंपरासे मानव संस्कृति सदा ही विकासोन्मुख रही है। इस प्रक्रियाके लिये कथाओंका विशेष उपयोग हुआ है, क्योंकि कथाओंके माध्यमसे कोई भी विचार सुगम एवं सुबोध रूपसे प्रस्तुत किया जा सकता है। हमारे समाजमें साहित्य, दर्शन, इतिहास, धर्मशास्त्र आदि अनेकानेक विषयोंका ज्ञान कथाओंके माध्यमसे करानेकी अति प्राचीन परम्परा है, जिसके परिणाम-स्वरूप सम्बद्ध विषयोंकी कथाएँ प्रचुर परिमाणमें उपलब्ध होती हैं।

प्राचीन भारतीय कथा-साहित्य

वैदिक कालसे ही भारतमें कथा साहित्य किसी न किसी रूपमें प्राप्त हो जाता है। साथ ही प्राचीन भारतीय कथाओंका प्रचार विदेशोंमें भी हुआ है। उदाहरणके लिए पञ्चतन्त्रका प्रथम विदेशी अनुवाद पहलवी अर्थात प्राचीन ईरानी भाषामें ईरानके सम्राट खुसरोके दरबारी हकीम बुर्जुए द्वारा सन ५३१ से ५७९ ई० के बीच किया गया था[1]। इसके पश्चात् पञ्चतन्त्रके अनेक अनुवाद यूरोपीय और चीनी आदि भाषाओंमें हुए। पञ्चतन्त्र, हितोपदेश, कथासरित्सागर आदिका प्रभाव मध्य एशिया, यूरोप अरब, और चीन आदि देशोंके कथा साहित्य पर भी दृष्टिगत होता है।

ऋग्वेदके स्तुतिपरक सूक्तोंमें "अपालाकी कथा" प्राप्त होती है। हमारे उपनिषदोंमें भी कई कथाएं निगुम्फित हैं। उदाहरणके लिये केनोपनिषद्में देवताओंकी शक्ति परीक्षा, कठोपनिषद्में नचिकेताका साहस और छान्दोग्य उपनिषद्में सत्यकाम एवं जानश्रुति, बृहदारण्यकमें गार्गी और याज्ञवल्क्य, तैत्तिरीयमें भार्गवी तथा मुण्डकोपनिषद्में महाशाल्य, शौनक और अङ्गिराकी कथाएं कही गई हैं।

रामायण और महाभारतमें इतिहास धर्म और कल्पनाके आधार पर अनेक कथाओंका समन्वय हुआ है। रामायण और महाभारत सम्बन्धी कथाओं द्वारा कालान्तरमें कितने ही कमनीय काव्योंका प्रणयन हुआ है।

---

१ डा० एजर्टन द्वारा सम्पादित 'पञ्चतन्त्र रिकंस्ट्रक्टेड' और डॉ० वासुदेवशरण अग्रवालका वक्तव्य (पञ्चतन्त्र, राजकमल प्रकाशन दिल्ली) पृष्ठ सं० ६।

जिसने सर्वप्रथम वीर बगड़ावत बन्धुओंके विषयमें कीर्ति-श्लोक लिखे जिनकी संख्या १५००० बताई जाती है[1] ।

राजस्थानमें लोकमान्यतानुसार 'बगड़ावत' प्रति रात्रि तीन प्रहर गाया जाने पर ६ माहमें पूर्ण होता है । बगड़ावत काव्य वस्तुवर्णन, चरित्रचित्रण, इतिहास और काव्य-सौष्टवकी दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण है किन्तु अब तक इसका संकलन, सम्पादन और प्रकाशन तो क्या किसी भी साहित्यिक-इतिहासमें उल्लेख तक नहीं हुआ है । अब तक पूर्णरूपेण लिपिबद्ध न होनेसे इसमें क्षेपकोंका होना भी स्वाभाविक है ।

'देवजी बगड़ावतारी वात' के प्रारंभमें 'वीसलदे चहुवाण' के राज्य-कालमें बगड़ावतोंके मूल पुरुष "हररास चहुवाण" का उल्लेख है । वीसलदे चौहानको यदि अजमेरका विग्रहराज चतुर्थ मान लिया जावे तो उसका शासन-काल वि. स. १२१० से वि. स. १२२१ माना जाता है ।[2] तदनुसार बगड़ावतका निर्माणकाल १३ वीं सदी विक्रमी ज्ञात होता है । मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट सन् १८९१ ई०में भी देवजीका जन्म संवत् १३०० होनेका उल्लेख है ।[3] देवजीके जन्मसे पूर्व अवश्य ही बगड़ावत बन्धुओंकी वीरता और वैभवका प्रचार हो गया होगा, जिनके विषयमें प्रसिद्ध है—

माया माणी बगड़ावता, कै लाखै फूलाणी ।
रही सही सो माण गो, हर गोविंद नाटाणी ।।

अर्थात् माया (धन-ऐश्वर्य) का उपभोग बगड़ावतोंने किया । तदुपरान्त लाखा-फूलाणीने भी आनन्दोपभोग किया । तत्पश्चात् जो धन अवशेष रहा उसका आनन्द हरगोविन्द नाटाणीने प्राप्त किया ।

लाखा फूलाणी कच्छके प्रसिद्ध वीर और ऐश्वर्यशाली व्यक्ति थे[4] । हरगोविन्द नाटाणी जयपुर महाराजा सवाई ईश्वरीसिंहके दीवान थे[5] । उक्त दूहेमें 'कै लाखे फूलाणीके स्थान पर 'जग सार जाणी' पाठ भी मिलता है[6] ।

देवजी बगड़ावतका एक मन्दिर महाराणा सांगाने चित्तौड़में निर्मित करवाया था । कहते हैं कि उक्त महाराणाको देवजीका इष्ट था ।[7] राजस्थानमें 'बगड़ावत' और 'देवना-

---

1 Preliminary Report on the Operation in search of Mss. of Bardic Chronicals, Asiatic Society, Calcutta, Page 10

२ अजमेर हिस्टोरिकल एण्ड डिस्क्रिप्टिव (हरविलास शारदा) पृष्ठ १४८, १५३-१५४ ।

३ मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट सन् १८९१ ई भाग ३, पृष्ठ ४६ ।

४ श्रीयुत् प. गोपालनारायणजी बहुरा, एम ए. द्वारा सम्पादित और अनुवादित फार्बस कृत रासमाला" भाग प्रथम पूर्वार्द्ध पृष्ठ १०२–१०४ ।

५ जयपुर राज्यका इतिहास, लेखक पं. हनुमान शर्मा पृष्ठ १८१ ।

६ "राजस्थानके लोक देवता" प भावरमलजी शर्मा, मरुभारती, पिलानी वर्ष ३, अङ्क ३ ।

७ मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट सन् १८९१ ई भाग ३, पृष्ठ ४६ ।

रायण' सम्बन्धी लोक-नाटकोंका अभिनय होता रहा है, जिनका प्रकाशन भी हो चुका है[1]। देवजी बगड़ावतकी पूजा राजस्थानमें कई स्थानों पर होती है किन्तु इनकी पूजाका मुख्य केन्द्र आसीन्द मेवाड़में है। बगड़ावतों द्वारा निर्मित एक सरोवर फतहनगर (उदयपुर) के समीप गांव गवारडीमें है और एक बावड़ी बीलाड़ाके समीप है।

पाबूजीरा पवाड़ा, निहालदे सुल्तान आदि राजस्थानी लोक काव्योंकी भांति 'बगड़ावत' का पूर्ण सङ्कलन, सम्पादन और प्रकाशन भी अब तक संभव नहीं हो सका है। वास्तवमें इन काव्योंका सौष्ठव और ऐतिहासिक महत्त्व प्रसिद्ध 'पृथ्वीराज रासो' से न्यून नहीं है। यह कवि चन्द रचित 'रासो' भी 'बगड़ावत' आदि राजस्थानी काव्योंकी भांति प्रारंभमें मौखिक ही प्रचलित रहा और इस तथ्यकी ओर ध्यान नहीं जानेसे विद्वानोंने पृथ्वीराज रासोका निर्माण-काल १८ वीं शताब्दि तक निश्चित करनेका प्रयत्न किया है[2]। पृथ्वीराज रासोका निर्माण कवि चन्दने पृथ्वीराज चौहानकी वीरतासे प्रभावित होकर पृथ्वीराजके मृत्युकाल सं १२४९ विक्रमीके लगभग ही किया होगा। कई वर्ष मौखिक रहनेसे ही पृथ्वीराज रासोमें खण्डित और परिवर्द्धन हो गये जिससे उस पर अप्रामाणिकताके आक्षेप किये गये[3]। इस कथनके प्रमाणमें निम्नलिखित तथ्य संक्षेपमें विद्वानोंके विचारार्थ प्रस्तुत किये जाते हैं—

१ पृथ्वीराज रासोकी धारणोजमें लिखित प्रति संवत १६६४ वि० की उपलब्ध हो चुकी है जिससे इस कालसे पूर्व पृथ्वीराज रासोका निर्माण सर्वथा सिद्ध है। यह प्रति राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुरमें सुरक्षित है।

२ रासो अथवा "रास" शब्द ही मूलतः गेय काव्यका प्रतिबोधक है। राजस्थान मध्यभारत और गुजरातमें "रास" शैलीमें गेय काव्य लिखनेकी प्राचीन परंपरा है जिसके अन्तर्गत सकड़ो ही 'रास" कृतियां उपलब्ध होती हैं।

३ पृथ्वीराज रासोके मौखिक रहनेसे ही इसके लघुत्तम, लघु बृहत् और बृहत्तर रूप प्रचलित हो गये।

४ भारतीय ही नहीं कई विदेशी भाषाओंमें भी प्राचीन प्रारंभिक साहित्य मुख्यतः मौखिक वीर काव्यों (Ballads) के रूपमें प्रचलित रहा है।

५ मुनि श्री जिनविजयजी पुरातत्त्वाचार्यको "पुरातन प्रबन्ध संग्रह" में प्राप्त हुए पृथ्वीराज रासोके छन्दोंसे चन्द कविके प्रस्तुत काव्यकी प्राचीनता और लोकप्रियता सिद्ध होती है।

---

१ राजस्थानके लोक-नाट्य, श्रीयुत देवीलालजी सामर एम ए, पृष्ठ ५३ और "राजस्थानके लोक नाटक' श्रीयुत अगरचन्दजी नाहटा लोक कला भारतीय लोक-कला मंडल उदयपुर भाग १ अङ्क ३। श्री बंशीधर शर्मा किशनगढ़ने भी उक्त विषयमें दो ख्याल लिख कर प्रकाशित किये हैं।

२ श्रीयुत डॉ० मोतीलालजी मेनारिया, राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ ६।

३ श्रीयुत डॉ० गौरीशङ्करजी हीराचन्दजी ओझा—पृथ्वीराज रासोका निर्माणकाल (कोशोत्सव स्मारक ग्रन्थ काशी नागरी प्रचारिणी सभा काशी)।

संग्रह-ग्रन्थमें अधिकाधिक वार्ताओंको लिखनेके मोहसे प्रस्तुत वार्तामें चरित्र-चित्रण, घटना-विवरण और पृष्ठ-भूमि-अङ्कनका विस्तार नहीं दिया गया है। सम्भवतः लेखकने इनकी आवश्यकता वगटावतोंके व्यापक प्रभावके कारण भी नहीं समझी है।

प्रस्तुत वार्तामें कई भारतीय कथानक रूढ़ियों और अभिप्रायों (Motieves) का समावेश भी कलात्मक रूपमें हुआ है। जैसे दृष्टि-सम्पर्कसे गर्भ-धारण, नृसिंहरूपी बालकका जन्म, बालक-बालिकाओं द्वारा खेत हीमें विवाह कर लेना, उबलते हुए तेलमें गिरना और पारस होना, अन्यायकी आंच शेष नागके लगना, देवीका अवतार ग्रहण करना, कमलसे बालकका उत्पन्न होना, होनहार व्यक्ति पर सर्प द्वारा छाया करना, बालकको सिंहनी द्वारा दूध पिलाना, गायोंकी रक्षाके लिये युद्ध करना, आदि। उक्त प्रसङ्ग अनेक भारतीय कथाओंमें मिल जाते हैं। प्रस्तुत वार्तामें भी इन चमत्कारिक घटनाओंका कलात्मक रूपमें समावेश हुआ है।

प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ हरीसिंघोतरी वात

पुस्तकमें गृहीत दूसरी कथा 'प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ हरीसिंघोतरी वात' एक ऐतिहासिक वार्ता है, जिसका उपयोग स्व. डॉ. गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझाने भी राजपूतानाका इतिहास लिखनेमें किया है[1]। प्रस्तुत वार्ताकी हमें पांच प्रतियां उपलब्ध हुई हैं, जिनमेंसे दो प्रतियां (क और ख) राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुरके संग्रहालयसे, एक (ग प्रति) महाराजकुमार डॉ. रघुवीरसिंहजी एम. ए., डी. लिट्. एम. पी. के सौजन्यसे, श्री रघुवीर लायब्रेरी सीतामऊ द्वारा, एक (घ प्रति) श्रीयुत नारायणसिंहजी भाटी द्वारा राजस्थानी शोध-संस्थान, चोपासनीसे और एक प्रति (ङ) श्रीयुत गोपालनारायणजी बहुरा एम. ए. उपसञ्चालक रा. प्रा. वि. प्र. के सौजन्यसे श्री लाधूरामजी दूधोडिया द्वारा प्राप्त हुई है।

प्रतियोंका परिचय

प्रति – क

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुरकी प्रति, ग्रन्थ संख्या ७८७४। आकार ८.६×६ इञ्च। गुटका, पत्र संख्या ३०। प्रति पत्रमें पंक्ति संख्या १६, १७ और प्रत्येक पंक्तिमें अक्षर संख्या १४ से १७। लिपिकाल संवत् १८९५ चैत्र विद १३। लिपिस्थान-जयपुर। वार्ताके अन्तमें कर्ताका नाम इस प्रकार लिखित है—

"ईती श्रीरावत म्होकमसीघ हरीसींघोतरी बात म्हाराजधिराज म्हाराज श्री बहादुर-सीघजी कृत संपूर्ण किसनगढ राजस्थान।"

प्रतिके अन्तमें बहादुरसिंहजीके विषयमें तीन कवित्त, एक गीत और मुहणोत शिवदास कृत "सूर-सती-संवाद" एवं महाराज नागरीदास कृत चोसर दोहा है। तीनों कवित्तों और गीतोंसे बहादुरसिंहजीके विषयमें महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। प्राप्त प्रतियोंमें यह विशेष विश्वसनीय है इसलिये मुख्य पाठ इसी प्रतिका ग्रहण किया गया है।

प्रति – ख.

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुरकी प्रति, ग्रन्थ संख्या ६७१६। आकार ४.५×२.६ इञ्च। गुटका पत्र संख्या ७०। प्रति पत्रमें पंक्ति संख्या ७ और प्रत्येक पंक्तिमें

---

१. प्रतापगढ राज्यका इतिहास, वैदिक यन्त्रालय, अजमेर पृष्ठ १८५।

अक्षर सख्या १३ से १५ । लिपिकाल अज्ञात है । प्रतिमें कर्ताके नाम आदिका उल्लेख नहीं है और पाठ भी अशुद्ध है ।

प्रति–ग

श्री रघुवीर लायब्रेरी सीतामऊसे प्राप्त प्रतिलिपि । प्रतिलिपिके प्रारभमें निम्नलिखित उल्लेख है—

"श्री रघुवीर लायब्रेरी, सीतामऊके लिये प्रतापगढ़ राज्यमें प्राप्य प्रतिसे नकल करवाई गई ।"

सभवत स्व० डॉ० गौरीशङ्कर हीराचद ओझाने भी "प्रतापगढ़ राज्यका इतिहास" लिखनेमें इसी प्रतिका उपयोग किया हो ।[1] मूल प्रति २२ पत्रोंकी है जसा कि प्रस्तुत प्रतिलिपिसे प्रकट होता है । प्रतिके प्रारभमें ही कर्ताका नाम इस प्रकार लिखित है—

"म्हाराज बादरसिघजी किसनगढ़रा राजारी करी"

प्रतिमें लिपिकर्ता और लेखन-कालका उल्लेख इस प्रकार है—

"ईति श्री वारत समपुरण लीपीत म आह्मामण श्रोदीच मगनेस दौलतराम श्री कल्याणरस्तु सुभ भवस्तु ॥ श्री श्री ॥ सवत १९८ असाड सुद ३ भौतीया भोमवासर ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

॥ गाथा ॥

काठलधर कमनीये नगर प्रताप दुगजह नपती ॥
उदयसिंह अभिधांन ॥ भानुवस भूपन कुल रान ॥ १ ॥
या वार्ता भवाया मगनीरामरा हातसू लिपीणी ॥

प्रतिमें उक्त ज्ञातव्य महत्त्वपूर्ण होते हुए भी पाठ शुद्ध नहीं है ।

प्रति–घ

यह राजस्थानी शोध सस्थान, चौपासनी, जोधपुरसे प्रतिलिपि रूपमें प्राप्त हुई है । प्रतिलिपिके अतमें निम्नलिखित उल्लेख है—

"लिखितं महडू राजूराम जोधनयर मध्ये मवराजा श्री भारयदानजी वाचनाथ ॥ श्री ॥ समत् १९०३रा चत्र सुद ११ सोमवासुरे ॥ श्रीरस्तु ॥ सुभ भवत ॥ कल्यांण मस्तु ॥ वाच गुण तिणांस राजूमागरा श्री राम रांम बांचसी ।

राजस्थान रिसच सोसाइटीके लिये भगवतीप्रसादसिंघ बीमेन । जोधपुर, कातिक सुद ३, बुधवार, सवत १९९३ वि ता ३० अक्टूबर, १९३५ ।।"

इस प्रतिलिपिकी मूल प्रति अप्राप्य है । प्रतिलिपिका मूलसे मिलान नहीं हुआ है और पाठ भी सदिग्ध है ।

---

१ स्व० डॉ० गौ० ही० ओझाने इस बातका प्रारंभ होनेका उल्लेख किया है । प्रतापगढ़ राज्य का इतिहास अजमेर वैदिक यन्त्रालय पृष्ठ १८४ ।

प्रति–ङ

यह प्रति श्रीलाधूरामजी दूधोटियासे प्राप्त हुई है। प्रतिकी पुष्पिका इस प्रकार है:–

"ईति श्री रावत मोहकमसिंघ हरीसिंघोतरी वात संपूर्ण। मिति असाढ वदि १२ संवत्त १८६७रा फतेग [ढ] मध्ये: लिखितं वैष्णवं मगनीराम:"

वार्ता ६.५×७ इन्च आकारके १२ पत्रोंमें पूर्ण हुई है। प्रति पृष्ठ पंक्ति संख्या २६ और प्रति पंक्ति अक्षर सं० २५, २६ है। प्राप्त प्रतियोंमें यह प्राचीनतम है किन्तु इसके पत्र सं० ५, ६ और ६ अप्राप्त हैं। प्रति जीर्ण और तेलसे भरी हुई भी है।

उक्त कारणोंसे पूर्ण पाठ केवल क प्रतिका ही ग्रहण किया गया है और विशेष पाठान्तर अन्य प्रतियोंके दिए गए हैं।

पाठकी दृष्टिसे अ वर्गकी क और ख प्रतियां एक माताकी और आ वर्गकी ग घ ङ. प्रतियां अन्य माताकी पुत्रियां ज्ञात होती हैं। अर्थात् क ख. सगी बहिनें और ग घ. ङ सगी बहिनें हैं। अ और आ प्रतियां एक दूसरे वर्गकी मोसेरी बहिनें है।

वार्ता–लेखक बहादुरसिंहजी

राजस्थानके राज-परिवारोंमे अनेक व्यक्ति साहित्यकारोंके आश्रयदाता और साहित्यके प्रेमी ही नहीं स्वयं साहित्यकार भी हो गये हैं, जिनका रचित साहित्य प्रचुर परिमाणमें उपलब्ध होता है। ऐसे ही प्रतिष्ठित परिवारोंमें राजस्थानके मध्य भागमें स्थित किशनगढका राज-परिवार भी है, जिसमें प्रसिद्ध सन्त और साहित्यकार नागरिदास अपर नाम सावंत-सिंहका नाम विशेष उल्लेखनीय है। सांवतसिंहका जन्म सं० १७५६ वि० और मृत्यु-समय सं० १८१४ वि० है। इनकी छोटी-बडी ७७ रचनाओंका संग्रह प्रकाशित भी हो चुका है।

सांवतसिंह अपने पिता महाराजा राजसिंहजीके देहान्तके समय (सं० १८०५ वि०) दिल्लीमें थे। किशनगढ राज्यके उत्तराधिकारी होनेके नाते बादशाह अहमदशाहने नागरि-दासको किशनगढका शासक घोषित कर दिया। इसी समय किशनगढमे नागरिदासकी अनु-पस्थितिमे इनके लघु-भ्राता बहादुरसिंह राज्य-सिंहासन पर आरूढ हो गये और अपने बल एवं कौशलसे लगभग ३३ वर्ष (सन् १७४९ ई० से १७८२) ई० तक राज्य किया।[1]

उक्त बहादुरसिंह, किशनगढ महाराजा ही प्रस्तुत वार्ताके रचयिता थे, जो किशनगढ राज्यके संस्थापक किशनसिंह राठौडकी ५वी पीढीमें राज्यके उत्तराधिकारी बने। नागरि-दासकी सहायताके लिए आगत विशाल बादशाही सेनाको भी वीरवर बहादुरसिंहने पराङ्मुख कर दिया, जिससे इनके रण-कौशलका परिचय मिलता है। बहादुरसिंह ९ वर्ष तक अपने सिंहासनकी सुरक्षाके लिए सफल संघर्ष करते रहे। इसी बीच नागरिदासने राज्य-प्राप्तिकी आशा छोड़ कर वृन्दावनवास और साहित्य-सेवा स्वीकार की। तदुपरान्त नागरिदासके पुत्र सरदारसिंहकी सहायताके लिए चढाई कर आई हुई सेनासे बहादुरसिंहने नीतिपूर्वक संधि कर सरदारसिंहको सरवाड, फतहगढ और रूपनगरके परगने दे दिये और राज्यमे शान्ति स्थापित की। उक्त घटनाओंसे बहादुरसिंहके उदात्त चरित्र पर विशेष प्रकाश पड़ता है।

---

१ मारवाडका इतिहास, भाग २, प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ, पृष्ठ सं० ६८६।

क प्रतिके अन्तमें लिखे गये निम्न कवित्तादिसे भी बहादुरसिंहके चरित्रकी अनेक विशेषताएँ प्रकट होती है–

कवित्त– दुरजनसौं जीत, असजनसौं नीत,
गुरदरनसौं प्रीत, ताहि सुजस कृपानी का ।
धमनिका साधन अन्नमनिका बाधन
सु हरिका अराधिक पयोध सावधानीका ।
समरको सूर, दारिदसौं दूर,
सुभ गुनाको पूर, मान मिन अभिमानीका ।
हृगमभूपन, बहादुर नरेस बली
न्याय तेरा थमौ ज्यौं नवरो दूध पानीको ॥ १

गेर मजबूतीहूका रूप रापूतीहूका
चाहक समुद मन चाहक मुनीनका ।
ल्गिनो करया गान रूपको रिझरा
भूप परतिय तजिया अरु पालक दुननिको ।
थंभ पानसाहीको सिपाहीको पिन्नानहार
असी गत काहू मांझ काहू सुनी न की ।
हाय अब गुनहूरा लूट गो है दया तन
उठ गो बहादुरेस गाहक गुनीनको ॥ १[२]

छल बल नाके आग, दुजनकौं दाब लेह
तज सम सूर जाको राजत निदेसका ।
पुन्य नीत थाप क उथाप्यो पाप अवनीका,
दुष्टनकौं मार क उतारचो भार सबका ।
भारी गात बारे भूप चाहत है भार जाहू
प्रजाको पालक अरु नासक कलसका ।
काज सिद्ध माहिं जसे लीजिय गनस नाम
जुद्ध काज नाम त्यौं बहादुर नरेसका । १[३]

गीत– डड पानरो मेवास दिली आगरो स्याहूगा डडे
आन रोकी गिणा बिहु राहरो अतंक ।
माटीपणौं सोभादार सताराताधन् आप
हिंदुवामैं माटीपणौं राजानरो हेक ॥ १

छड पाव पाछा जगा पस दे छूटिया छत्री
आछा आछा दस नेम लूटिया अनूप ।
वहै सेनापती मै पहादरेस कीधा केई
भू लाक अनमी भा बहादुरेस भूप ॥ २

सोपारा अपाजा माहे सजिया न रोट किता
महावीर सारां माहे मनीया समान ।

प्रतापसिंहसे शेरबुलंदखांको शरण देनेका आग्रह किया। रावत प्रतापसिंहने महोकमसिंहके विशेष आग्रहसे औरङ्गजेबके कुपित होनेकी चिन्ता छोड कर शेर बुलंदखांको अपने आश्रयमें रख लिया। इस घटनासे रावत प्रतापसिंह और महोकमसिंहको विशेष ख्याति मिली प्रतीत होती है जिसका उल्लेख स्व० डा० गौरीशङ्करजी हीराचदजी ओझाने भी अपने इतिहासमें किया है।[1]

कथाकारने अन्तमें पीपलोदा गांवके उपद्रवी डोडिया राजपूतोसे हुए प्रतापसिंह और महोकमसिंहके संघर्षका वर्णन किया है। डोडिया राजपूताने प्रतापसिंहके दरबारसे दक्षिणाके रूपमें धन प्राप्त कर लौटते हुए एक पण्डितको मार दिया। रावत प्रतापसिंहके समझाने पर भी डोडियोंने विपरीत उत्तर ही दिया कि उदयपुरके महाराणा और मुगलशासक भी हमारा कुछ नहीं बिगाड सकते-

'राणजी अर सूबो अ भी म्हासु टालो दे छ। थारी धरतीम म्हे चाहा सो करां छा पण म्हांरो नाम न लें छे। रावतजीनु आवणो छ तो बेगा कीज असवारी। भली भात मन-धार करस्या'।

डोडियोंसे हुए संघर्षके प्रसंगमें कथाकारने अपनी युद्ध-सम्बन्धी जानकारीका विस्तृत परिचय दिया है। प्रस्तुत प्रसंगमें कथाकारके कविहृदयका परिचय भी भली भांति प्राप्त होता है। वार्तामें वीररसका परिपाक करने हेतु कथाकार वीररसमें उमङ्गित होकर अनेक गीत, दूहा और कवित्त लिख देता है।

उक्त युद्ध प्रसंगमें उत्तर मुगलकालीन युद्धोंकी प्रणाली और पतनोन्मुखी स्थितिका भी वास्तविक परिचय प्राप्त होता है। तब युद्धक्षेत्रमें सेनाके साथ दास-दासियों और तवायफोंकी संख्या सैनिकोंसे भी अधिक होती थी। इस विषयमें वार्ताकारने लिखा है—

'एक हाथसू गळबांही न्हाख्या एक हाथसू ही गोळी बाहे छ। × × × बंदुकां अर प्याला एकण साथ भर रह्या छ।'

अन्तमें कथाकारने महोकमसिंहकी युद्ध-क्षेत्रमें प्रकट हुई विशेष वीरता और विजयका सजीव चित्रण किया है।

वीरमदे सोनीगरारी वात

तीसरी कथा 'वीरमदे सोनीगरारी वात' अर्द्ध ऐतिहासिक है। मुसलमान इतिहासकारोंने अल्लाउद्दीन खिलजीकी जालोर विजयका संक्षिप्त उल्लेख मात्र किया है।[2] वास्तवमें जालोरका साका राजस्थान ही नहीं, समस्त पश्चिमोत्तरी भारतकी एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक

---

१ प्रतापगढ़ राज्यका इतिहास (वैदिक यन्त्रालय, अजमेर) पृष्ठ सं० १८५।

२ समकालीन मुख्य इतिहासकार जियाउद्दीन बर्नीने जालोर विजयका उल्लेख इन शब्दोंमें किया है—'रणथंभोर, चित्तोड मण्डलगढ, धार, उज्जैन मांडूगढ़, अलाईपुर, चन्देरी एरिज, सिवाना तथा जालोर जिनका गणना सुव्यवस्थित प्रदेशोंमें न होती थी वालियों तथा मुक्तों के सिपुर्द हो गए (तारीखे फीरोजशाही, पृष्ठ ८६ खलजीकालीन भारत सं० सैयद अतहर अब्बास रिजवी द्वारा सम्पादित)। वालीसे तात्पर्य प्रांतीय अधिकारीसे और

घटना है। इस युद्धके अवसर पर हजारों ही वीराङ्गनाओंको जौहर व्रतका पालन करते हुए अग्निप्रवेश करना पड़ा था और कान्हड़दे, वीरमदे, राणकदे जैसे अगणित वीरोंको मातृभूमिकी रक्षाके लिये आत्मोत्सर्ग करना पड़ा था। इस युगके विषयमें परम आदरणीय श्रीमान् मुनि जिनविजयजी, पुरातत्त्वाचार्यने, अपना मन्तव्य प्रकट करते हुए लिखा है—

'वह समय भारतके लिए बड़ा भयङ्कर प्रलयकाल सा था। भारतकी प्राचीन संस्कृति और समृद्धिका मर्दनाश करने वाला वह असाधारण विकराल काल था। उस कालदैत्यके कोपानलसे शताब्दियोंसे संचित और सर्जित भारतकी उस संसार-मोहिनी संस्कृति, समृद्धि, सार्वभौमता और पुरुषिनताका बहुत बड़ा भाग, कुछ ही क्षणोंमें भस्मीभूत-सा हो गया। पूर्व-देशका पाल-साम्राज्य, मध्यदेशका गाहड़वाल साम्राज्य, दिल्ली-लाहोरका तोमर-राज्य, अज-मेर-सपादलक्षका चाहमान राज्य, अणहिलपुरका चालुक्य महाराज्य, अवंती-मालवका प्रमार साम्राज्य, एवं दक्षिण-देवगिरिका यादव राज्य – इस प्रकार भारतके पूर्व, पश्चिम, उत्तर-दक्षिण जैसे चारों खण्डोंमें, कई शताब्दियोंसे अपनी दृढ़वान सत्ता जमाये हुये बड़े बड़े राज्य और उनके शासक राजवंश इस दुष्ट दावानलकी दुर्दैवी ज्वालाओंमें कुछ ही दिनोंके अन्दर देखते देखते दग्ध हो गये। अपार समृद्धिसे भरे हुए उनके अनंख्य राजभाण्डार घड़ियोंमें लुट गये।[1]

अलाउद्दीनने अपनी दूषित मनोवृत्तिसे प्रभावित होकर भारतमें अनेक युद्ध किये, जिनमें हुए रक्तपात, लूट और अत्याचार वर्णनातीत हैं। ऐसे भीषण संघर्षोंके अवसर पर भी राजस्थानमें चित्तोड़, रणथंभोर, सिवाना और जालोरके शूरवीरों तथा वीराङ्गनाओंने अनुपम आत्मोत्सर्ग कर अपनी मानमर्यादा एवं गौरवाभिमानकी रक्षा की थी। चित्तोड़, रण-थंभोर और सिवाना युद्धोंके विषयमें तो मुस्लिम इतिहासकारों और इनके अनुयायी अन्य यूरोपीय एवं भारतीय इतिहासकारोंने यत्किञ्चित् प्रकाश डाला है किन्तु जालोरयुद्धके विषयमें 'कान्हड़दे प्रबन्ध' के अतिरिक्त इस पुस्तकमें प्रकाशित 'वीरमदे सोनीगरारी वात', मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग १ (पृष्ठ सं० २१२ से २२६), वांकीदासरी ख्यात (पृष्ठ सं०

मुक्ताका अर्थ जागीरदार है। यह यावित अहमद सरहिन्दी नामक एक अन्य इतिहासकारने भी अलाउद्दीनकी सेना द्वारा जालोर विजयका उल्लेख इन शब्दोंमें किया है—'उसी वर्ष [७०० हि०, १३०००—१३०१ ई०] कमालुद्दीन गुर्गने [अलाउद्दीनका एक सेनापति] जालोर पर अधिकार जमा लिया और विद्रोही बरसलदेवको [कान्हड़देसे तात्पर्य है] नरक भेज दिया। [तारीखे मुबारकशाही, खलजीकालीन भारत सं० अनहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ २२४)। हमारे अन्य भारतीय और पश्चिमी इतिहासकारों ने भी भारतीय भाषाओंमें और मुख्यत. राजस्थानी भाषामें प्राप्त ऐतिहासिक सामग्रीकी उपेक्षा करते हुए उक्त विषयमें विशेष विवरण नहीं दिया है।

१. कान्हड़दे प्रबन्धका (राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर द्वारा प्रकाशित) प्रास्ताविक वक्तव्य, पृष्ठ ५६।

१५० - १५१) जैसे राजस्थानी इतिहास ग्रंथोंमें वर्णित प्रसगोंकी ओर अभी तक इतिहासकारोंका ध्यान नहीं आकर्षित हुआ है।[1]

उक्त संघर्षोंमें प्रकट किये गये राजस्थानी वीराङ्गनाओंके बलिदानसे प्रभावित होकर अनेक समय कवियोंने काव्य ग्रन्थोंके रूपमें अपने उदगार व्यक्त किये और अनेक गद्य लेखकोंने वार्ताओंकी रचना की। इनमेंसे प्रमुख उल्लेखनीय प्राचीन कृतियां इस प्रकार हैं —

विषय	रचना
चित्तोड युद्ध —	१ मुहम्मद जायसीकृत पदमावत (र का १५९७ वि० स०)
	२ हेमरतनकृत गोरा बादल पदमिणी चऊपई (र का १६४६ वि०)[2]
	३ लब्धोदयकृत पद्मिनीचरित (र का १७०२ वि० स०)
	४ जटमलकृत-गोराबादल वार्ता (ले का १८२८ वि० स०)[3]
	५ भाग्यविजयकृत गोराबादल चोपाई (ले का १८०३ वि० स०)
	६ अज्ञात कर्तृक-गोराबादळ कथा।
रणथभोर युद्ध —	१ नयचन्द्रसूरिकृत—हमीर महाकाव्यम (ले का १५४२ वि० सं०)
	२ जोधराजकृत—हमीर रासो अपर नाम हमीरायण (र का १७८५ वि० स०)
	३ ग्वालकविकृत—हमीर हठ
	४ चन्द्रशेखरकृत— हमीर हठ

---

१ बांकीदासरी ख्यात (सम्पादक श्रीयुत नरोत्तमदासजी स्वामी) और मुहता नैणसीरी ख्यात भाग १ (सम्पादक श्रीयुत बदरीप्रसादजी साकरिया) नामक ग्रथोंका प्रकाशन राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला'के अन्तर्गत राजस्थान प्राच्यविद्याप्रतिष्ठान जोधपुर द्वारा श्रीमान मुनि जिनविजयजी, पुरातत्त्वाचार्यके प्रधान सम्पादकत्वमें किया जा चुका है।

२ श्री रुद्रकान्तिकय प्रधान सपादक राजा बलदेवदास बिडला ग्रथमाला', नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसीने इस कृतिका रचनाकाल अनुमानत स० १७६० दिया है (बिडला ग्रथमालामें प्रकाशित छिताई वार्ता, परिचय पृष्ठ २८)। वास्तवमें इसकी रचना महाराणा प्रतापके दीवान भामाशाहके लघु भ्राता ताराचन्द कावड्याकी आज्ञासे सादड़ी नामक स्थानमे वि० स० १६४६ में हुई थी। स० १७६० प्रतिका लेखन काल हो सकता है। यह कृति राजस्थान पुरातन ग्रथमाला में प्रकाश्यमान है। बिडला ग्रथमालामें प्रकाशित उक्त वार्ताको देखनेसे प्रकट होता है कि कान्हडदेप्रबन्ध और हम्मीर महाकाव्यम जैसे इस विषयके प्रसिद्ध ग्रन्थोंकी जानकारी भी उक्त ग्रथमालाके सम्पादकको नहीं है।

३ जटमलकृत गोरा बादळ वार्ता' को श्रीरामचन्द्र शुक्लने अनुमानत वि स० १६८० का माना है। हिन्दी साहित्यका इतिहास पृष्ठ स ४२३ नागरी प्रचारिणी सभा काशी, नवां सस्करण।

जालोर युद्ध – १ कवि पद्मनाभकृत–कान्हडदे प्रबन्ध (र का १५१२ वि० सं०)
२ अज्ञातकर्तृक—वीरमदे सोनीगरारी वात
(लि का वि० स० १७६१)

सिवाना युद्धके विषयमें अब तक कोई रचना प्रकाशमें नहीं आई है। अल्लाउद्दीनके उक्त युद्धोंके विषयमें राजस्थानी भाषामें अनेक वीर गीत, कवित्त, दूहादि भी प्रचुर मात्रामें प्राप्त होते हैं, जिनमेंसे अधिकांश अप्रकाशित हैं।

'वीरमदे सोनीगरारी वात' के हमें ४ पाठ उपलब्ध हुए हैं। इनका परिचय निम्न-लिखित है—

प्रति–क

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुरके हस्तलिखित ग्रन्थसंग्रहमें गुटका क्रमाङ्क ३५५५में पत्र सं० १६२से १६८ तक लिखित। लेखनकाल वि० सं० १८२६। आकार ११×६५ इन्च। प्रतिपृष्ठ पंक्ति संख्या ३२। प्रति पंक्ति अक्षर संख्या २८–२६। यह पाठ प्राचीन कृतियोंके साथ शुद्ध रूपमें लिखित है अतः इसको आदर्श मानते हुए पूर्ण रूपमें लिया गया है।

प्रति–ख

राजस्थान प्राच्यविद्याप्रतिष्ठान, जोधपुरके हस्तलिखितग्रन्थसंग्रहमें गुटका क्रमांक १२७०६ में १३ पत्रोंमें लिखित। आकार ६×५.४ इन्च। प्रति पृष्ठ पंक्ति संख्या १६। प्रति पंक्ति अक्षर संख्या ३६–४०। इस गुटकेमें दो कृतियोंके अन्तमें लेखनकाल वि० स० १७६१ दिया हुआ है अतः लिपि भिन्नता होते हुए भी 'वीरमदे सोनीगरारी वात' का लेखनकाल भी यही ज्ञात होता है। इसके विशेष पाठान्तर टिप्पणियोंमें दिये गये हैं।

प्रति–ग

राजस्थानी ग्रन्थमाला, पिलानीके, प्रथम ग्रन्थ स्व० श्रीसूर्यकरणजी पारीक द्वारा सम्पादित 'राजस्थानी वाता' में, सन् १६३४ ई० में प्रकाशित चतुर्थ वार्ता। यह पुस्तक अब अप्राप्य है। वार्तामें प्रतिलिपिकर्ताकी भूलसे कुछ अंश छूट गये हैं। साथ ही वार्ता सम्बन्धी विशेष विवरण भी नहीं दिया गया है। यह पाठ किस हस्तलिखित प्रतिसे ग्रहण किया गया है, यह भी नहीं लिखा गया है। इसके विशेष पाठान्तर भी टिप्पणियोंमें ग्रहण किये गये हैं।

प्रति–घ

राजस्थानी शोध-संस्थान, चोपासनी, जोधपुरके हस्तलिखित ग्रन्थ-संग्रहमें क्रमाङ्क १२५ पर लिखित गुटका। आकार ६×५ इन्च। प्रतिपृष्ठ पंक्ति संख्या १४। प्रतिपंक्ति अक्षर संख्या १८–२०। लेखनकाल 'संवत १८३६ वर्षे फागुण वदि ११ बुधवासरे श्रीगुंदवच नगर मध्ये।' यह प्रति हमें श्रीयुत नारायणसिंहजी भाटीके सौजन्यसे प्राप्त हुई है। प्रयत्न करने पर भी यह प्रति हमें सम्पादनके समय नहीं मिल सकी अतएव इसका विशेष उपयोग नहीं किया जा सका।

प्रस्तुत वार्ता एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना पर आधारित है किन्तु इसके विकास क्रममें कल्पना एवं कथानक रूढियोंका भी प्रचुर प्रयोग किया गया है। कथाके प्रारंभमें ही एक प्रस्तर पुत्तलिकाके अप्सरा रूप प्राप्त करने पर पाठक चमत्कृत हो जाते हैं। तदुपरान्त कान्हडदेके अप्सरासे विवाह और कुमार वीरमदे उत्पन्न होने, अप्सराके पुनः अन्तर्धान होने, जसलमेरके भाटी रावल लाखणसीजी द्वारा सूचित होने पर कान्हडदेके विषपानसे बचने, कान्हडदे द्वारा अपनी कुमारीका रावल लाखणसीजीसे विवाह करने आदि घटनाओंका वर्णन हुआ है।

रावल लाखणसीजी अपनी प्रथम रानी सोढीके कहनेमें आ कर विवाहके समय सोनीगरोंको अपने अनुचित व्यवहारसे रुष्ट कर देते हैं। सोनीगरी राजकुमारी भी 'हयलेवो तो सोनीगरीरो सपरो पीण सोढीरी होड न कर।" सुन कर लाखणसीजीसे रुष्ट हो जाती है और श्वसुरालय जाते समय परम वीर नींबा सिवालोत द्वारा हरण कर ली जाती है। आगे लाखणसीजी द्वारा लोहाराको आज्ञा दी जाती है –

'इसो भालो घडो तिणसूं एक वठा निवलान मारा।'

कहने मात्रके लिए भाला तयार होता है किन्तु एक आशङ्का रहती है कि रावलजी वृद्ध हैं और नींबा युवक है। यदि कई मील दूरीसे मार जाने वाले भालेको नींबा छीन कर पुनः वार कर देगा तो क्या उपाय होगा? पुनः लोहाराको पारिश्रमिक दिया जाता है और जो भाला बना ही नहीं है उसको तुडवाये जानेकी आज्ञा दी जाती है। इस प्रकार—

रावलजी सोनिगरी गमाय वठा।

कथामें प्राप्त उक्त हास्य प्रसङ्गमें पाठकोंका अनायास ही मनोरञ्जन हो जाता है।

आगे बीजडिया सेवक जिसका पिता राजडिया नींबाजी द्वारा सोनीगरी-हरणके अवसर पर हुए संघर्षमें मारा जाता है नींबाजी पर प्राणान्तक प्रहार करता है और नींबाजी भी मरते मरते वीरतापूर्वक बीजडियाको मार गिराते हैं।

पाप दाव सिखाने वाला पजू पायक वीरमदेका विश्वासपात्र शिक्षक था और इसके द्वारा ही नींबाजी कान्हडदेके यहाँ उनकी दूसरी राजकुमारीके विवाहमें सम्मिलित हुए थे जहाँ उनको विश्वासघात कर मार दिया गया था। इस घटनासे वीरमदेके वीरचरित्र पर कलङ्क ही नहीं लगता वरन यह घटना जालोरपतन और सोनीगरोंके विनाशका मूल कारण भी बनती है। पंजू पायक रुष्ट होकर तत्कालीन दिल्ली सुलतान अलाउद्दीनके पास पहुँच जाता है और अपनी विद्याका प्रदर्शन करता है। वहाँ अलाउद्दीन पजूसे प्रसन्न होकर पूछता है कि तेरे बराबर रमने वाला कोई दूसरा भी है?

पजू उत्तर देता है कि जालोरके राव कान्हडदेका पुत्र वीरमदे मुझसे सीखा हुआ है किन्तु मुझसे भी बढ़कर है। यह सुनने पर अलाउद्दीन वीरमदे को दिल्ली आमन्त्रित करता है। वीरमदेसे रमते हुए पजू पायक मारा जाता है। वीरमदेकी रण चातुरी प्रसिद्ध होती है। इसी अवसर पर अलाउद्दीनकी पुत्री जिसका नाम नहीं दिया गया है वीरमदेसे अपना पूर्व भवका वयाहिक सम्बन्ध बताती हुई वीरमदेसे विवाहकी इच्छा प्रकट करती

है। इसी प्रसङ्गमें काशीके साहूकार पुत्रकी एक अन्तर्कथा भी दी गई है। विवश होकर अलाउद्दीनको भी उक्त विवाहके लिए अपनी सहमति देनी पड़ती है।

तदुपरान्त कान्हड़दे और वीरमदे विवाह-खर्चके नामपर प्रचुर धन ले कर जालोर आते हैं और दुर्ग-निर्माणके साथ ही युद्धकी तैयारी करते हैं। राणकदे थोड़े समय पश्चात् नगा मुगलको मारकर शाही नजरबन्दीसे अपने देववंदी घोड़े भींयड़े पर सवार हो जालोर भागता है। इसी बीच भींयड़ेके मरनेकी और भैंसेकी अन्तर्कथाएं दी गई हैं। बलखके बादशाहने दिल्ली एक मोटा भैंसा भेजा, जिसके सींग बढ़ कर पीठ तक आये हुए थे। बलखकी सूचनाओंके अनुसार दिल्लीका कोई भी अमीर उस भैंसेको भट्टेसे नहीं मार सका। लौटते समय जालोरके निकट वीरमदेने अपने पराक्रमसे भैंसेको सींग सहित काट दिया।

तदुपरान्त अलाउद्दीनकी चढ़ाईका और जालोरमें युद्धकी तैयारीका वर्णन है। बारह वर्ष जालोरका घेरा रहा किन्तु दुर्ग अजेय रहा। दुर्ग वालोंने एक युक्ति की। वीरमदेकी कुतिया ब्याई थी, उसके दूधमें खीर बनवाई और पत्तलोंके लगा कर नीचे शत्रुओंकी ओर गिराई। सुलतानने देख कर सोचा – अभी तक तो दुर्ग वाले खीर खाते हैं। यह दुर्ग नहीं जीता जा सकता। इस प्रकार अलाउद्दीन घेरा छोड़ कर पुनः दिल्लीकी ओर चल पड़ता है।

आगे कथा पुनः एक नवीन मोड़ ग्रहण करती है। वीरमदे और इसके बहनोई दहिया-राजपूतके प्रीतिभोजमें कहा-सुनी हो जाती है। भूल वीरमदेकी होती है, क्योंकि वह एक अपराधमें मार कर लटकाये हुए दो दहियोंकी ओर सङ्केत कर अपने बहनोई दहियासे व्यंग करता है। दहिया राजपूत जाकर अलाउद्दीनसे मिलता है और वह पुनः लौटकर दुर्ग घेर लेता है।

तदुपरान्त बाघा बानर आदि राजपूतोंके वीरतापूर्वक युद्ध और दुर्गके विजित होनेका वर्णन है। वीरमदे युद्धके अन्तमें पकड़ा जाता है किन्तु उसने अपना पेट काट लिया था, अतः मृत्युको प्राप्त करता है। शाहजादी हिन्दूरीतिसे वीरमदेके मस्तकको गोदमें ले कर सती होती है और इसके साथ ही कथा पूर्ण की जाती है।

उक्त जालोर-युद्धके विषयमें प्राप्त प्राचीनतम राजस्थानी-प्रबन्ध कवि पद्मनाभ-विरचित 'कान्हड़देप्रबन्ध' है। इस काव्यमें जालोर-युद्धका मुख्य कारण अलाउद्दीनकी सेना द्वारा गुजरात पर आक्रमण करना और सोमनाथ मन्दिरको तोड़कर मूर्तिको दिल्ली लेजाना बताया गया है। इस सम्बन्धमें कान्हड़देकी प्रतिज्ञा इस प्रकार है—

करी प्रतग्या राउल कान्हडि - तउ जिमीसइ धान।
मारी मलेछ देव सोमईउ अनइ छोडाविस वान॥ १८२[1]

'मुहता नैणसी द्वारा भी उक्त मतकी पुष्टि होती है—

'पातसाहरो डेरो सकराणै जालोररै गाव जालोरसूं कोस ६ हुवो। आ खबर कानडदेनूं हुई जु महादेव सोमइयानू बाधनै पातसाह सकराणै आय उतरियो; तरै पातसाह

१ कान्हड़दे प्रबन्ध, पृष्ठ ३८।

कन काधळ आलेचो रजपूत ४ बीजा भेळा मेलिया। ये पातसाहजीनू कहन आवो – जु अतरा हिंदुस्थान मार चक्कर महादेव सोमइयो बाधन म्हार गढ निजीक म्हार गाय उतरिया सु भली न की। मोनू रजपूत न जाणियो।'[1]

काधळ भी सोमनाथकी मूर्ति बंधी हुई देखकर प्रतिज्ञा करता है—

पाणी तो बिगर पिय सर नहीं नै धान राज छूटा खासां।'[2]

अलाउद्दीनकी सेनासे हुए कान्हडदेके प्रथम युद्धमें कान्हडदेकी विजय हुई। इस विषयमें नैणसी लिखता है—

पातसाहन भांजन कानडदेजी सोमइया कन आया। महादेवजीरी पींडी हाथ घाता उपाडिया सु तुरत उपडिया सु महादेवजीरो लिंग सकराण थापियो। ऊपर देहूरो करायो। कानडदेजी हिंदुस्थानरी बडी मरजाद राखी।'[3]

उक्त विवरणसे ज्ञात होता है कि युद्धके कारणमें वार्ता-लेखकका मत कवि पद्मनाभ और नणसीसे नहीं मिलता। सुलतान अलाउद्दीनके हरमम कणदेवो जसी कुछ हिंदू बेगमें भी थीं, उनमेंसे किसीकी शाहजादीका वीरमदे जसे वीरसे विवाह करनेकी इच्छा प्रकट करना अस्वाभाविक नहीं है।

फुतुहुस्सालातीन' नामक प्रसिद्ध खिलजीकालीन इतिहासग्रंथके लेखक 'एसामी' ने देवगिरीके राजा रामदेवकी पुत्री छिताईका अलाउद्दीनकी बेगमके रूपमें उल्लेख किया है।[4] इसी छिताईके विषयमें नारायणदास और रतनरंगने 'छिताई वार्ता' लिखी है।[5] छिताईका उल्लेख कवि केशवदास (१६१२–१६७४ वि० सं०) ने करते हुए लिखा है—

साहि छिताईको ल जाई।[6]

मलिक मुहम्मद जायसीने भी अपने पदमावतमहाकाव्यके बादशाहचढाई खण्डमें छिताईका उल्लेख किया है—

बालु न राजा आपु जनाई। लीन्ह उदगिरि लीन्ह छिताई।'[7]

---

१ मुहता नणसीरी ख्यात भाग १ राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर पृष्ठ २१६ १७।

२ वही पृष्ठ २१८।

३ वही पृष्ठ २१६।

४ खिलजीकालीन भारत, सयद रिजवी पृष्ठ २०८। चौहानकुलकल्पद्रुमम अलाउद्दीनकी पुत्रीका नाम सीताई' दिया गया है, जिसने वीरमदेसे विवाह करनेकी इच्छा प्रकट की।

५ छिताई वार्ता राजा चन्द्रदेवदास विड्ला प्रधमाना नागरी प्रचारिणी सभा काशी।

६ वीरसिंहदेवचरित छन्द सं० ३८.९ आर्यभाषा पुस्तकालय नागरी प्रचारिणी सभा काशी।

७ पद्मावत स० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल साहित्यसदन चिरगाव झांसी, पृष्ठ ४१२।

इसीप्रकार मुस्लिमकवि जानने "कथा छीताकी" लिखी जिसमें उक्त विषयका विवेचन है[1]। चन्द्रशेखरकृत हम्मीरहठमें अलाउद्दीनकी एक हिन्दू बेगम मरहट्टीका उल्लेख है—

"बेगम महति मरहट्टी माहताब जैनी"
जागती जुन्हाई जाके जोबन तरगमें। (छन्द स २६)

कवि जोधराजने हमीररासोमें अलाउद्दीनकी "चिमना" बेगमका उल्लेख किया है—

"चिमना बेगम एक और चितामनि गाही"[2]

अमीरखुसरोने भी गुजरातके राजा कर्णकी पुत्री देवलदेवी और अलाउद्दीनके शाहजादे खिज्रखा सम्बन्धी एक प्रेमाख्यानकी रचना की थी।[3]

आगे चल कर हिन्दू लेखकोंका यथार्थ अथवा कल्पनाके आश्रयसे अलाउद्दीनकी हिन्दू बेगमोंकी पुत्रियोंका सबध हिन्दू राजकुमारोंसे जोड़ना स्वाभाविक ही हुआ। अलाउद्दीन जैसे शासकोंकी क्रूरता और नृशसताके वातावरणमें अनेक जैन और मलिक मुहम्मद जायसी[4] जैसे सूफी सतोंने भारतीय प्रेमाख्यानोंके आधार पर प्रेम और सौहार्दकी धारा प्रवाहित की, जिससे अन्य लेखक विशेष प्रभावित हुए और इन्होंने स्वमतानुसार एतद्विषयक आख्यानों और काव्योंकी रचनाएं की। "वीरमदे सोनीगरारी वात" इसी प्रकारकी एक प्रमुख रचना है। इसका पूर्वार्द्ध कल्पना और यथार्थका मिश्रण है, जिसमें अनेक भारतीय कथानक रूढियोंका समन्वय हुआ है किन्तु इसका उत्तरार्द्ध ऐतिहासिक भित्ति पर आधारित है, जिसका समर्थन अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थोंसे होता है। उदाहरणार्थ वाकीदासरी ख्यात और नैणसीरी ख्यातको लिया जा सकता है। वाकीदासरी ख्यातका उल्लेख इस प्रकार है—

---

१. हिन्दुस्तानी एकेडेमी प्रयागके सग्रहमें सुरक्षित।

२. हमीर रासो, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी। नीलकण्ठ विरचित। 'चिमनीचरित्रम्' नामक एक सस्कृत प्रमाख्यान भी प्राप्त हुआ है, जिसका सम्बन्ध म्लेच्छाधीश अलावर्दी खानकी बेगम मानिकी और प० दयादेव शर्माके प्रेम-प्रसङ्गसे है। राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान ग्रन्थ-सग्रह, ग्रन्थाङ्क १२२६४।

३. फावर्सने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ रासमालामें लिखा है कि देवगढके (देवगिरिके) राजा शकरदेवने कर्ण वाघेलाकी पुत्री देवलदेवीका विवाह निश्चित हो गया था किन्तु वह अलाउद्दीनके सेनापति अलफखा द्वारा हरली गई और बादमें इसका विवाह खिज्रखासे कर दिया गया। भाग प्रथम, उत्तरार्द्ध, सम्पादक श्रीयुत् गोपाल नारायणजी बहुरा, मगल प्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ ३६३-३६६।

४ 'हिस्ट्री आफ दी खिलजीज' के लेखक डॉ० किशोरीशरण और श्री रामचन्द्र शुक्ल आदिने चित्तोडकी पद्मिनी सम्बन्धी कथाकी कल्पनाका श्रेय जायसीको दिया है जो सत्य नहीं जान पडता। वास्तवमें चित्तोडके वीरों और वीराङ्गनाओंके सघर्षकी कथा जनतामें प्रचलित हो गई थी जिसका आधार जैन, सूफी और अन्य अनेक लेखकोंने लिया। इसकी पूरी जानकारी श्री शुक्ल आदिको नहीं रही।

"१७७८ – चहुवाण कान्हड़दे सावतसिंघरो बेटो जिण सवत १३६८ वमाख सुद६ गुरुवार जाळोगढ़ साको कियो ।

१७८० – साचोर १, थिराद २, काकरणधर ३, वाराही ४, कच्छ ५, गेहड़ी ६, ऊमरकोट ७, वीरमपुर ८, जसलमेर ९, थघनोर १०, पारकर ११, पूगळ १२, मारोठ १३, साळकोट १४, जांगळू १५, जाजासहर १६, सारण १७, हासेर १८, थावरो १९, सोजत २०, डोडियाळ २१, रीणक २२, कावेन २३, त्रिसींगडो २४, ग्राबू २५, भीलडी २६, सिवाणो २७, तारगो २८, राडद्रह २९, सूधो ३०, मेहवो ३१, भाद्राजण ३२, मडोवर ३३, सूराचद ३४ इत्यादिक ठिकाणांसू कान्हडदे भड तेडाया ।

१७८१ – सोनगरा कान्हडदेसू जाळोररा महाजना अरज कीधी । रामो साफडियो बोलियो – मूग चोखा जव काठा गेहू साठ वरस ताई हू पूरीस । जतसी दोसी कहै – कपडा साठ वरस हू पूरीस । भोळ साह कहचौ – असी वरस तेल हू पूरीस । मोलहण साह बोलियो – तीस वरस इधण हू पूरीस । भीम साह कहचौ – म्हार इता गुळ है, अठार वरस ताई छाकली गुळरा हौज गोळा चनावो । सादू साह कहै – म्हार दहीरा पहल भरिया है ।

१७८२ – जाळोररो गढ़ दहिय बीक भेळायो अलाउद्दीनरा नायवासू मिळन ।

१७८३ – सोनगरा कान्हडदरा भड – भाई मालदे १, बेटो वीरमदे २, जत बाघेलो ३, जत दवडो ४, लूणकरण माल्हण ५, सोभित देवडो ६, अन्सी ७, सहजपाठ ८ इत्यादिक ।'[1]

मुहता नणसीरी ख्यातसे भी वार्ताके उत्तरार्द्धका पूर्णरूपेण समर्थन होता है । साथ ही जालोर टूटनेकी तिथि 'स० १३६८ वमाख सुदि ५ बुधवार' दी गई है । युद्धमें मारे जाने वाले प्रमुख योद्धाग्रोंके नाम भी 'सोनगरा जाळोररा धणियांरी ख्यातवार्ता' के आधार पर दिये गये हैं ।[2]

इस वार्तामें अलाउद्दीनको बहुत उदार और हिन्दुओंके प्रति सहानुभूति रखने वाला लिखा गया है । वास्तवमें वार्ताकार मुगल सम्राट अकबर अथवा जहांगीरकी उदारतासे प्रभावित है । इसीलिये अलाउद्दीनके लिये 'पातसाहिजी' जैसा सम्बोधन है और उसके 'सिरोपाव' देनेका तथा कान्हडदे द्वारा उसके समुख 'पातिसाह दीन दुनीरा धो । हू पाधरियो घररो धणी रजपूत हू' आदिका उल्लेख है । प्रस्तुत वार्तासे स्पष्ट होता है कि मुगलकालके मध्यमें हमारे अनेक लेखक अलाउद्दीनके अत्याचारोंको भूल चुके थे और हिन्दुओं एव मुसलमानोंके बीच पारस्परिक सौहार्द सम्बन्धोंको दृढ़तर करनेमें संलग्न थे ।

---

१ वातांरागी ख्यात सपादक श्रीयुत नरोत्तमदासजी स्वामी, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर पृष्ठ १५ ।

२ मुहता नणसीरी ख्यात भाग १ सपादक श्रीयुत बद्रीप्रसादजी साकरिया राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर पृष्ठ २१६ से २२६ ।

हमारे लेखकोंका यह प्रयत्न किसी सीमा तक सफल भी हुआ था और तब हमारे देशमें हिन्दू – मुस्लिम संघर्षका अन्त हो गया था ।

अन्तमें हम पुस्तकमें प्रकाशित वार्ताओंकी प्रमुख विशेषताओंकी ओर पाठकोंका ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं—

१ कथाओंका प्रारंभ परम आकर्षक रूपमें हुआ है । "देवजी बगडावतारी" और "वीरमदे सोनीगरारी" वार्ताओंके प्रारंभमें क्रमशः दृष्टि-दोषसे तपस्विनीके गर्भ रहने और पाषाण पुत्तलिकाके सजीव अप्सरा रूप होनेके प्रसङ्ग हैं तो "प्रतापसिंघ म्होकमसिंघरी" वार्तामें वर्णनात्मक राजस्थानी ढूहे और अन्य सरस प्रयोग हैं ।

२ इन कथाओंमें लौकिक और अलौकिक घटनाओंका प्रसङ्गानुसार सफल सामञ्जस्य हुआ है । "देवजी बगडावतारी" और "वीरमदे सोनीगरारी" वार्तामें अलौकिक घटनाओंका बाहुल्य है जिसका प्रधान कारण सम्बद्ध कथा-वस्तुओंकी प्राचीनता है । परन्तु कथानक – रूढियोंका सफल प्रयोग एवं सामञ्जस्य भारतीय कथाओंकी प्रधान विशेषता रही है । तदनुसार सम्बद्ध कथा-लेखकोंके लिये "असंभव" जैसी कोई घटना नहीं है प्रसङ्गानुसार ऐसी घटनाओंका औचित्य सिद्ध कर पाठकों अथवा श्रोताओंका विश्वास प्राप्त करना कठिन होता है । उक्त दोनों ही कथाओंके अज्ञात लेखकोंको इस कार्यमें पूर्ण सफलता मिली है ।

३ तत्कालीन ऐतिहासिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियोंका सरल, सरस एवं स्वाभाविक यथातथ्य चित्रण भी इन वार्ताओंमें मिलता है और सम्बद्ध विषयोंके अध्ययनमें इनसे पूर्ण सहायता प्राप्त होती है ।

४ तीनों ही वार्ताएं मूलतः राजस्थानके भिन्न-भिन्न भागोंमें लिखी गई हैं । जैसे– "देवजी बगडावतारी वात" पर बीकानेर क्षेत्रका, "प्रतापसिंघ म्होकमसिंघरी" वात पर जयपुर-विजयगढ़ क्षेत्रका और "वीरमदे सोनीगरारी वात' पर जैसलमेरका प्रभाव लक्षित होता है किन्तु इसमें इन वार्ताओंके राजस्थानी भाषा-सौन्दर्यमें कोई अभाव नहीं परिलक्षित होता और न अनेकताके ही दर्शन होते हैं ।

५ वास्तवमें तीनों ही वार्ताओंकी भाषा पूर्ण साहित्यिक राजस्थानी है और कुशल लेखकों द्वारा लिखित है । 'प्रतापसिंघ म्होकमसिंघरी वात' तो राजस्थानी भाषाकी एक परम उत्कृष्ट कृति है । इस वार्ताकी ग और घ प्रतियोंके अनुसार इसमें सर्वत्र दवावैतका प्रयोग हुआ है । रघुनाथ रूपक[1] और रघुवरजसप्रकास[2] जैसे ग्रन्थोंमें गद्यबंध और पद्यबंध नामक दो प्रकारके दवावैतोंका विवरण मिलता है । हमारी रायमें राजस्थानी भाषामें दवावैतका प्रयोग फारसी 'दुवेती' के प्रभावसे हुआ है । गद्यमें तुक मिलानेकी प्रवृत्ति इस्लामी साहित्यके प्रभावको भी सूचित करती है ।[1] वार्तामें अथसे इति तक दवावैतका स्वाभाविक निर्वाह कुशल कलाकारका ही कार्य होता है ।

६ प्रस्तुत कथाओंमें विशुद्ध भारतीय कथा-शैलीके दर्शन होते हैं । कालान्तरमें भारतीय कथा साहित्यका विकास राजस्थानी भाषामें लिखित ऐसी सहस्त्रों विभिन्न विषयक

---

१ विशेष देखिये – दवावैत सञ्जक हिन्दी रचनाओंकी परंपरा, श्रीयुत् अगरचन्दजी नाहटा, भारतीय साहित्य, विश्वविद्यालय, आगरा, अप्रेल १९५६, पृष्ठ २१७ । तारीख फिरोजशाहीमें भी उल्लेख है कि दिल्ली सुलतान जलालुद्दीन खिलजी "दुवेती" लिखता था । खिलजीकालीन भारत, पृष्ठ १५ ।

कथाओंमें ही परिलक्षित होता है। भारतीय कथा लेखकोंको पश्चिमी कथा शैलीके अन्धानुकरणको छोड़ कर ऐसी ही भारतीय कथाओंसे मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिए जिससे वे भारतीय मौलिकताकी रक्षा करते हुए अपनी रचनाओंको अनपेक्षित विदेशी प्रहारसे रक्षा कर सकें।

७ पश्चिमी शैलीमें लिखित कथाएं ८-१० वर्षोंमें ही समयके विपरीत 'असामयिक' हो जाती हैं किन्तु ऐसी राजस्थानी कथाओंका सौन्दर्य एवं आकर्षण सैकड़ों ही वर्षोंसे बना हुआ है। आधुनिक युगकी संक्रान्तिकालीन परिस्थिति एवं चकाचौंधमें भी प्रस्तुत कथाएं पाठकोंका मनोरञ्जन कर उन्हें उद्देश्यके अनुरूप प्रभावित करनेकी क्षमता रखती हैं। श्रेष्ठ कलाकृति सदा ही प्रभावशाली बनी रहती है।[1] ऐसी कथाओंकी श्रेष्ठताका इससे अधिक क्या प्रमाण हो सकता है?

८ इन कथाओंसे पाठकोंका कोरा मनोरञ्जन ही नहीं होता वरन् जीवन क्षेत्रमें कर्तव्यपरायणता, कष्टसहिष्णुता, आत्मत्याग एवं बलिदान, सत्यनिष्ठा, वीरता, वचननिर्वाह, विद्याप्रेम, नीतिमत्ता कौशल कलाप्रेम और न्यायप्रियता आदि सद्गुणोंकी सहज प्रेरणा भी प्राप्त होती है। आधुनिक पश्चिमी शैलीकी कथाओंमें प्रायः ऐसे तत्त्वोंका अभाव होता है।

९ राजस्थानी कथाओंमें प्रसङ्गानुसार पद्यांश देनेकी प्रवृत्ति भी परिलक्षित होती है। प्रस्तुत कथाओंमें भी यथाप्रसङ्ग एवं यथास्थान पद्यांश लिये गए हैं और इनसे कथा प्रवाहमें अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न करनेमें लेखकोंको सहायता मिली है।

१० इन कथाओंमें पात्रोंका चरित्र चित्रण और घटना संगठन पूर्ण मनोवैज्ञानिक रीतिसे हुआ है। घटना विकास अथवा चरित्र-विकासके पूर्व कारण स्पष्ट हो जाते हैं जिनसे पाठकोंको किसी प्रकारकी अस्वाभाविकताका बोध नहीं होता।

११ रूप-वर्णन और दृश्य चित्रणमें लेखकोंको विशेष सफलता मिली है। ऐसे प्रसङ्गोंके अवसर पर लेखकोंने चित्रकार जैसी सूक्ष्म अभिव्यक्तिका अवलम्बन लिया है। वस्तु-नाम परिगणनासे कहीं-कहीं ऐसे शब्द चित्र बोझिल अवश्य बन गये हैं किन्तु परम्परानुसार ऐसे प्रयोग पाठकोंको अरुचिकर नहीं प्रतीत होते।

१२ कथा अथवा कहानीकी प्रमुख विशेषता यह है कि उसको सुन कर भी आनन्द प्राप्त किया जा सके। कहानीसे तात्पर्य यही है कि वह कही जा सके। प्रस्तुत राजस्थानी कथाएं इस कसौटी पर भी खरी उतरती हैं क्योंकि इनको मौखिक परम्परासे ही हमारे लेखकोंने प्राप्त किया है। ऐसी हजारों कथाएं हमारे विद्याप्रेमी पूर्वजोंके प्रशंसनीय प्रयत्नोंसे लिपिबद्ध हुई थीं और हजारों कथाएं अब तक मौखिक परंपरासे प्रचलित हैं।

राजस्थानी कथा साहित्यमें भारतीय ज्ञान विज्ञानका अखण्ड कोष आज भी सुरक्षित है और यह इस यान्त्रिक युगमें प्रकाशनकी प्रतीक्षा करता हुआ धीरे धीरे कालके कराल गालमें समाता जा रहा है इसलिए सम्बद्ध समस्त व्यक्तियोंको तुरन्त ही तत्परतासे प्रयत्नशील हो जाना चाहिए।

---

१ क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः। —कालिदास अभिज्ञान शाकुन्तल।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान द्वारा राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके अन्तर्गत राजस्थान सरकार और केन्द्रीय शासनकी संयुक्त सहायतासे चालू आर्थिक वर्षमें ही प्रस्तुत पुस्तकका प्रकाशन किया जा रहा है। पाठान्तर्गत शब्दार्थ, टिप्पणियाँ और परिशिष्टमें आवश्यक ज्ञातव्य पाठकोंकी सुविधाके लिए प्रस्तुत किये गये हैं।

प्रतिष्ठानके सामान्य संचालक परम श्रद्धेय पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजीने राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग २ के अन्तर्गत प्रस्तुत पुस्तकको प्रकाशित करनेकी अनुमति प्रदान कर मुझे प्रोत्साहित किया है जिसके लिए मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। साथ ही प्रतिष्ठानके उपसंचालक श्री गोपालनारायणजी बहुरा, एम. ए. ने इस कार्यमें मेरा मार्ग-प्रदर्शन किया है तदर्थ मैं उनका विशेष आभारी हूँ। पुस्तक-सम्बन्धी सामग्री प्रदान कर सम्पादनमें सहयोग देने वाले सज्जनोंके प्रति भी मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर, दशहरा पर्व, सं० २०१७ वि०

पुरुषोत्तमलाल मेनारिया,
एम. ए., साहित्यरत्न

वात देवजी बगडावतांरी

अथ वात[1] देवजी[2] बगडावतांरी[3]

सहर अजमेर वडौ गढ। तेथ राजा वीसलदे चहवाण[4] राज्य करे। वीसलदेरे वाम[5] हरराम चहवाण रहै। सु वडौ सिकारी, शबदवेधी[6]। सु सिकार नित्य खेलै।

तिण नगर माहै कोको साह रहै। तिणरे बेटी नाम लोना। सु बालरड[7]। तिका तपस्या करै पोहकररा पाहडा माहे[8]। सु इसडी[9] तपस्या करै। मास मास अन न खावै। निरवस्त्र रहै। धूप सीत वरषा माथै[10] सहै।

एक दिन पाछिलो राति लीला पोहकरजीमे स्नान करि नीसरी।

---

१ वात – स वार्ता कथा राजस्थानी गद्य साहित्यका एक प्रकार। राजस्थानी साहित्यमें हजारो ही वार्ताए लिपिबद्ध और मौखिक रूपमे प्राप्त होती हैं।

२ देवजी – देवनारायण, राजस्थानके एक लोक-देवता जिनकी उपासना मुख्यत राजस्थान मध्यभारत और गुजरातके गूजर जातिके स्त्री-पुरुष करते हैं। देवजी बगडावतोंमें प्रमुख भोजाकी गूजर स्त्री सढूके पुत्र थे। देवजीका विवाह परमार क्षत्रिय कन्यासे हुआ था।

३ बगडावतारी – बगडावतोकी अजमेरके हरराम चौहानका एक पुत्र बाघा हुआ। बाघाके २४ पुत्र स बाघापुत्र >बाघापुत्त> बाघाउत> बाघावत> बगडावत नामसे प्रसिद्ध हुए। बाघका पुत्रसे अथवा बाघ रावत' से बगडावत कहे गये। बगडावत बन्धुओंके वीर चरित्रसे सम्बन्धित एक महाकाव्य राजस्थानमें आज भी गाया जाता है।

४ वीसलद चहवाण – अजमेरका प्रसिद्ध चौहान शासक विग्रहराज जो वीसलदे रासका नायक भी है।

५ वाम – स निवास यहां सरक्षणमे रहनेसे तात्पय है।

६ शबदवेधी – शब्द ध्वनि सम्बन्धी स्थान पर अचूक निशाना लगाने वाला।

७ बाल ड – बालविधवा।

८ पोहकररा पाहडा माहै – पुष्करके पहाडोंमें।

९ इसडी – ऐसी।

१० माथ – मस्तक पर।

आगै हररांम सीह मारि माथौ वाढि[1] ले सांम्हौ विपरीत रूप आयो। ईयैरी[2] नजर पडीयो। ईयैरै पेट गरभ रह्यौ। परमेश्वरजीरी आग्या हुई ताहरा[3] पेट वधीयौ[4]। ताहरा लोका मांहे वात हुई। कथ-कथ हुई[5]।

युं करता राजा वीसलदेनुं खवरि हुई। ताहरां कहै—राजा आ वात किसी जु लीलानु गरभ छै। जिका इसडी तपसिण तिकेनु गरभसु कासूं जांणीजै।

ताहरां राजा लीलानुं वोलाई[6]। वोलाइ नै वात पूछो। थारी तपस्यामे भंग क्यु हुवौ। मोनु[7] साच कहि। ताहरा लीला कहै। महाराज जो होणी हुती सो हुई पिण मोनुं दोप नही लागै छै। श्री परमेसरजी रची सु क्यु मिटै।

ताहरां राजा कहै छै। कहौ। ताहरा लीलां कहै। हुं पाछिली राति उठि नै श्री पोहकरजी स्नांन करी नै तीर्थ महा नीसरी। तिण समईयैं[8] एक पुरुप विपरीत रूप हुयौ सीहरो माथो लीयै मोनु मिलीयौ। तीयेरे दरसणसु[9] मोनुं गरभ रह्यौ।

राजा विचारी जु कासू रूप ओ। लोक हजूर[10] कहण लागा। माहाराजा परमेस्वरजीरी लीला कौण जांणै। कीयैं[11] ठाकुरांरी गति पाई छै। ताहरां राजा कहै। खवर करो जु कुंण मरद हुतौ। ताहरा सिगळांनु[12] खवर हुती जु सीह एक हररांम चहवांण मारीयौ

---

१. वाढि – काट कर।
२ ईयैरी – इसकी।
३ ताहरां – तब, तदुपरान्त।
४. वधीयौ – वर्द्धित हुआ, वढा।
५. कथ-कथ हुई – वार-वार चर्चा होने लगी।
६ वोलाई – बुलाई।
७. मोनु – मुझे।
८ तिण समईयैं – उस समय।
९ तीयेरे दरसणसु – उसके दर्शनसे।
१० लोक हजूर – दरबारी लोग।
११. कीयैं – किसने।
१२. सिगळांनु – सबको।

हुतौ। मास ५-६ हूवा। आ वात सरव[1] लोक जाणै छै।

ताहरा राजा कह्यौ जु हरराम चहवाणनु बुलावौ। ताहरा हररामनु बुलाय ल्याया। हरराम आय राजारो मुजरो कीयौ[2]। ताहरा राजा हररामनु पूछीयौ जु हरराम तै सीहरी सिकार कीया कितरा मास हूवा। कह्यौ माहाराजा मास ५।६ हुवा। कह्यौ माहाराजा हु सिकार रोज करू छु। दिन ऊगतै मु सिकार करि अपूठौ आऊ छु[3]। ताहरा राजा कहै। सीह मारीयौ तीयै दिन तै क्यु दीठौ। ताहरा हरराम कहै। माहाराजा लीला तपस्विण स्नान करि तीथ महा नीसरतो दीठी। सीहरौ माथौ लीयै हु दीठौ।

ताहरा राजा विचारीया जु हररामसु लीलानु गरभ रह्यौ। ताहरा राजा हररामनु कहै। हरराम तु आ घरे वास[4]। घरे ले जाह ज्यु थारै दुहुवारी पण रहै[5]।

ताहरा हरराम कहै। माहाराजा मोमै[6] दोष कोई छै नही। श्री परमेश्वरजी जाणै छै। हु किसै वासते ईयैनु ले जाऊ। ताहरा राजा कहै म्हाहरौ कह्यौ मानि ईयैनु घरे ले जाह। ताहरा हरराम घरे ले गयौ। हिव[7] लीला ख्रूणै[8] बैठी रह।

पूरा दिन हूया ज्यु बेटो जायौ। ज्यु छोर[9] दीठो मुहडौ[10] सीहरौ पिंड[11] मनुष्यरो। ताहरा दाया नाठया[12]। कह्यौ ओ कौण सरूप। ताहरा सिगळा सुणायौ। कह्यौ जी कपडै लपेटि नाखि द्यौ[13]। ताहरा लपेटि नै

१ सरव – सब सभी।
२ मुजरो कीयौ – अभिवादन किया।
३ अपूठौ आऊ छु – उलटे मुह आता हू।
४ आ घरे वास – इसको घरमें बसा इसके साथ घर-वास कर।
५ थारै ... रहै – तुम दोनोंका प्रण रहे।
६ मोमै – मुझमें।
७ हिव – अब।
८ ख्रूण – कोनमें।
९ छोर – बालक।
१० मुहडो – मुह, मुख।
११ पिंड – शरीर।
१२ नाठया – भागी।
१३ नाखि द्यौ – डाल दो।

जांगलमै नाखि आया । ईयै ऊपरि समली[1] छाया कीधी । नाग आय माथै छत्र करीयां । अगूठो चूसण लागां ।

तितरै लोके दीठां । गांव माहै खबर हुई । लोक देख-देख आवै । सीह जायौ सहर माहे । लोक मरव कहण लागा । राजानु खबरि हुई । अस्त्री सीह जायो[2] ।

ताहरां राजा हररामनु बोलायो । पूछीयो । हरराम हकीकत कही । ताहरा राजा कहै । हरराम टाबर[3] ले आवौ । नांखों नां । ताहरा हरराम अरज की । महाराजा श्री मोटो हुसी । सवारे पून करिसी । ताहरा महाराजा मारिस्यां । ताहरा म्हाहरो वास छूटि[4] । सीहिवारु काची व्याधि छे[5] । परही मरां । म्हांनु कोई दुख न सुख ।

ताहरां राजा वीसलदे कहै । म्हांनु देखणो छै । देपा श्री कासूं ऊपजै । किसड़ो हुवै । तैरै वास्तै रापा छा । थे निसक पालो । थानु ईयैनु तीन गुनह[6] रोज माफ छै ।

ताहरां हरराम बांह बोल[7] लेनै घरे आयौ । आयनै वात कही । जायनै जंगळ महासु ले आयौ । धाय रापी । ईयनु पाळीयो । मोटो हूवौ । रमै-पेलै[8] । छोकरां नास जाय[9] । कोई बीहतो[10] बोलै नही ।

वरस १०।११ रो हूवौ । सावणरी तीज आई । छोकर्यां रमण नीसरीया[11] । आगै हीडा[12] हुता सु वाघै ऊचा नांखि दीया[13] ।

---

१ समली – सावली, चील ।
२ अस्त्री सीह जायो – स्त्रीने सिंह उत्पन्न किया ।
३ टाबर – बालक ।
४ वास छूटि – निवास, घर छूट जावेगा ।
५ सीहिवारु काची व्याधि छै – सिंहका बालक अभी कच्ची व्याधि है ।
६ गुनह – गुनाह, अपराध ।
७ वाह बोल – प्रण, वचन, प्रतिज्ञा ।
८ रमै-पेलै – खेलता है ।
९ नास जाय – भाग जाते हैं ।
१० बीहतो – डरता हुआ, भयसे ।
११ छोकरया रमण नीसरीया – लडकियां खेलने निकली ।
१२. हीडा – झूले ।
१३ नाखि दीया – डाल दिये ।

दावड्या[1] आया ईयनु कहै। वाघा म्हानु हीडण दे। दात काढै। निहोरा करै[2]।

ओ कहै आडे आक[3] हींडण न देऊ। ताहरा छोकरचा सलामा करै। वह हीडण दे। ताहरा कहै हीडण कहीं देंही। ताहरा ओ कहै मो दोना फेरा त्यौ[4] तौ हु हींडण देऊ। ताहरा छोकरचा कह्यौ। लेम्या। अर कह्यौ घरे जायनै वात मत कह्या। तौ कह्यौ जिके परणिया छै तिके पसवाडे[5] हुठो। कवारचा छै तिके जुया हुवौ।

ताहरा छोकरचा वाघै दोला फेरा च्यार लीया। ताहरा वाभण १ पागुलौ ओथ पटीयौ हूतौ[6] तिकेनु वाघै कह्यौ। रे तू वाभण छै। जे भणीयौ[7] छै तौ तू वेद पढ। का मागीम। ताहरा वाभण वीहतै[8] क्यु भणीयौ।

ताहरा हीड उतारि दी। छोकरचा हीडण लाग्या। रमण पेलण लाग्या। रम पेल घरे गया।

हिवै ईयाग माहा सूझै नही[9]। घणु ही[10] ढूढि घाया। वरस १।२ हूवा। छोकरचारा साहा ऊघडै नही[11]। ताहरा लोक चितातुर हूवा। लोकानु वडा सोच हूवौ। साहो सूझै नही।

ताहरा वडेरा[12] लोक एकठा हूवा। दावड्या तेडीया[13]। वात

१ दावड्यां – लड़कियां।
२ निहोरा कर – आग्रह करती हैं, गरज करती हैं।
३ आडे आक – कभी नहीं, किसी भी अवस्थामें, आंक' स तात्पर्य विधाताके लेखोंसे है अर्थात विधाताके लेख विरुद्ध होने पर भी।
४ मो [illegible] त्यो – मेरे चारों ओर फेरे लो। फेरा-प्रदिक्षणा, विवाह सम्बन्धी एक प्रथा।
५ पसवाड़े – पीछे।
६ पांगुलौ ... हूतौ – परोंसे क्षीण उस स्थान पर पड़ा था।
७ भणीयौ – पढ़ा हुआ।
८ वीहतै – डरते हुए।
९ ईयांरा ... नहा – इनके विवाह-लग्न नहीं दिखाई देते।
१० घणु ही – बहुत ही।
११ ऊघड़ नहीं – निकलते नहीं, प्रकट नहीं होते।
१२ वडेरा – बड़े।
१३ तेड़ीयां – बुलाया।

पूछी । घणौ आग्रह कीयौ । ताहरा दावडचा कहै । एक दिन म्हांनु चीता आवै छै[1] । जु ईयै वाघलै डाकिण पावै[2] म्हांनु कह्यौ जे झाडपौ दोळा फेरा ल्यो तो थानु हीडण देऊ । ताहरा मै भोल्यां समझ्या नही । ओ झाडपौ पकड़ि ऊभौ । म्हानु कह्यौ फेरा ल्यो । ताहरां म्हा फेरा लीया । पछै हीड उतारि दी । म्हे हीडं हीडीयां । एक उ वात चीता आवै छै । वीजी[3] काई जाणा नही ।

ताहंरा लोक एकठा हूवा । जाइनै[4] राजा वीसलदे आगै पुकारीया । राजा तो तीन गुनहा[5] माफ कीया हुता सु राजा कासू कहै । ताहरा राजा कहै ईयारै भागरी वात । एक टावर[6] मर जाह छै । जाणीया मरि गया । अै टावर ईयैनु द्यौ ।

ताहरां हररामनु तेड़ीयौ । तेडाइनै कह्यौ । थारै वेटे ईयारचा[7] वेटचां दोला फेरा लीया । हिवै हुवणहार । अै दावडचां थारै वेटैनु परणाय[8] नै ईयारौ भरण पोपण तू कर । ताहरा हररांम सोच कीयौ जु राजा तौ आ वात कही । हिवै हरराम घरे आयौ । आइनै चिता करण लागौ । इतरचांनु पवाडीजै कठा[9] । कपडा कठा दीजै । वैठौ सोच करै छै ।

ताहरा वाघो आयौ । कहण लागो । चिता न करौ । हु भलां करीस । म्हारी दाड आइसी[10] तितरचां परिणीजीस । वाकी रया छोडि देईस । कुवारी सौ वरां ।

ताहरा अै राजी हूवा । भली कही । ताहरां सरव लोक जाइ

---

१ म्हानु छै – हमें याद आती है, हमें स्मरण होता है ।
२ डाकिण खावै – दुष्ट, डायन द्वारा खाये गये, अपशब्दोके रूप में एक प्रयोग ।
३ वीजी – दूसरी, द्वितीय स >वेय>वीजी ।
४ जाइनै – जा करके ।
५ गुनहा – अपराध ।
६ टावर – वालक ।
७ ईयारचा – इनकी ।
८. परणाय नै – विवाह करके, परिणय सं –परणवो राज ।
९ खवाडीजै कठा – भोजन कहासे दिया जावे ?
१० दाड आइसी – सुविधा होगी, इच्छा होगी ।

आपरचा दावडचा ले आया। आणि ऊभ्या कीया[1] । ताहरा इयै उवा छोकरचा महा १३ टाळिया । वीज्यानु मूगा पुसी भराय न[2] छोटि दीया । कह्यौ जावौ । मै थामु काम कोई नही ।

ताहरा वामण दौडीयौ । कह्यौ मै वेद भणीयौ हुतो । सु मोनु ही काई दे । ताहरा वाघो बोलीयौ । कह्यौ अै १३ छै । ईया महा एक तू लै टाळिनै । ताहरा ईयै वाभण एक जाइनै फूटरी[3] देपिनै टाळि लीधी। वाभण पोडो हुतौ तिकै आणिनै घर वासी[4]। पछै उवा जातरी ढेढणी[5] हुई । तीयैरै पेटरा गरुडा हूवा । ढेढारा गुरु हूवा । ईये वारह १२ परणी । तीयारा वेटा २४ हूवा । अै वधीया घणा हूवा ।

हिवै ईयै वाघेरा वेटा २४ हूवा छ। सु ईयारी सगाई कोई न करै। ताहरा राजा कहै[6] गया । जाइ राजासु अरज की । महाराजा म्हासु सगाई कोई न करै। ताहरा राजा सिंगळानु[7] पूछीयौ। सु कहै। ईयासु सगाई कहै न करा। ताहरा राजा गूजर[8] तेडीया । कह्यौ ईयानु वेटचा द्यौ। ताहरा अै वेटी न दे। ताहरा राजा जोर घालीयौ[9] । कह्यौ इयानु परणावौ छोडु नही ।

ताहरा गूजरा हाकारो भणीयौ[10] । कह्यौ रे एक छोरू[11] मरि जावै छै । राजा कहै छै तौ परणावौ । ताहरा कह्यौ जी परणाविस्या । ताहरा राजा गूजर छाडीया । पछै वघडावतासु गूजरा सगाया[12]

---

१ ऊभ्या कीया – खडी की ।
२ मूगा भराय न – मूग (एक प्रकारका रत्न) हाथोंमें दे कर ।
३ फूटरी – सुन्दर ।
४ घर वासी – घरमें बसाया ।
५ ढेढणी – एक प्रकारकी पिछडी जातिकी ।
६ कहै – पास, समीप ।
७ सिंगळानु – सभीको ।
८ गूजर – गूजर एक जाति जो मुख्यत कृषि और पशुपालनका काम करती है ।
९ जोर घालीयौ – जोर डाला दबाव डाला ।
१० हाकारो भणीयौ – स्वीकार किया ।
११ छोरू – बालक ।
१२ सगाया – विवाह सम्बन्ध ।

कीयां। साहौ[1] थापि परणाया। अै परणिया। हिवै वधीया[2]।

आदमी घणा हूवा। अजमेर माहि मावै नही। ताहरां वास करणनु ठोड जोवण लागा[3]। ताहरा राण भणाय[4] राणो वाघट पडिहार[5] राज करै। ऊवंनु जाय मिळीया। कह्यौ म्हांनुं वास करणनुं २४ ठाम[6] द्यौ। म्हे थाहरी चाकरी करिस्या नं हासिल[7] ही देस्या।

ताहरा राणेजी दीठौ। आ वात भली। चाकरी करै नै हासल पिण देवै। अै रजपूत भला वासीजै। ताहरा रांणै घणी दिलासा[8] देनै सिरपाव देनै वासीया। २४ सांनु चौवीस थंडा मडाइ दीया[9]। ईया २४ गांम वसाया। तिके २४ से वघडावतांरा गोठ[10] कहीजै। ईयारै घणी भेसि घणी गाइ वडौ वधारौ साहिवी करै छै।

हिवै एक अतीत[11] पाहडां माहे तपस्या करै। वडौ सिध। ईयैरी सेवा भोजौ करै। सिगळा भाईयां माहे वडैरौ[12] भोजौ छै। सु अतीतरी सेवा करै। एक दिन अतीत कह्यौ। भोजा "मै चलुगा। तु परभाते का आए।"

औ सवारो ही ऊठिनै अतीतरै दरसणनु गयौ। आगै अतीत ऊभौ छै[13]। कडाहै माहे तेल ऊकळै छै[14]। तेल लाल रंग हूवौ छै। आगै अतीतरे पगे लागै। अतीत कह्यौ। बाबा भोज आव। कह्यौ नाथ

---

१ साहौ – लग्न।
२. हिवै वधीया – अब बढे।
३ ठोड···लागा – जगह देखने लगे।
४. भणाय – भिनाय, अजमेरके समीप एक प्राचीन जागीरी ठिकाना।
५ पडिहार – परिहार, एक क्षत्रिय जाति।
६ ठाम – स्थान स >थाण>ठांम।
७ हासिल – कृषि कर।
८. दिलासा – तसल्ली।
९. थडा' दीया – निवास-स्थान बनवा दिये।
१० गोठ – सं गोष्ठि, यहा समूह या मिलनसे तात्पर्य है।
११. अतीत – तपस्वी।
१२. वडैरै – बडा।
१३. ऊभौ छै – खड़ा है।
१४ ऊकळै छै – उबलता है।

"मै आया।" ताहरा जोगी कहै। भोज तीन फरा ले ज्यु मै 'तुझकु' विद्या देऊ।

ताहरा भोज कहै "नाथजी पहली फेरा गुरु लै नै मुझकु दिखावै तौ मे लेऊ।" ताहरा जोगी फेरा लैण लागौ। ताहरा भोज जोगीनु कडाह माहे नापि दीयौ[1]। पडतौ जोगी कहै छै मैं तौ तोनु घात घाली हुती[2] पिण तू समथो (ध्यौ) पिण म्हारो मायौ साबतौ राषे[3]। हाथ पग वाढे[4]। फेर आइ जासी थारा वडा भाग। हु सोनैरो पोरसौ[5] हुईस।

जोगी तेल माहे पडीयौ। सोनैरौ पोरसौ हूवौ। हिवै ईया पोरसौ घरम आणि राषियो। सोनो वेचीजे। खाईजै विढ़वीजै[6]। हिवै दारू काढीजै[7]। भठ्या राति दिन तपता रहै[8]। अध्रम[9] कीजै। बाकरा मारीजै[10]। दारू पीजे। आठ पहर छकीया रहै। डूम गावै। आगा हूआ हाले। राणी ही पातरमे आणै नहीं[11]। ईया निपट अन्याव माडीयो। समरै माथै जारनै अगनि लागी[12]।

ताहरा परमेश्वरजी आगै पुकार हुई। जु मृतलोक माहा बघडावत बुरी चाल चालै। ईयानु सभा दोजै। ताहरा बीडो फिरीयौ। ताहरा माताजी बीडो झालीयौ[13]। हु ईयानु छेतरीस[14]। पिण ईयारो

---

१ नापि दीयौ – डाल दिया।

२ तोनु [illegible] हुती – तुझे मारना निश्चित किया था।

३ साबतौ राप – साबित, पूरा सुरक्षित रखना।

४ वाढे – काटना।

५ पारसौ – पारस पत्थर। लोक-मान्यतानुसार पारसके लगनेसे लोहा भी सोना हो जाता है।

६ विढ़वीजै – बाँटते।

७ दारू काढीजै – मदिरा तयार करते।

८ भठ्या [illegible] तपता रहै – मदिरा तयार करनेकी भट्टियाँ रात दिन गरम रहती।

९ अध्रम – अधम।

१० बाकरा मारीजै – बकरे मारते।

११ राणी ही [illegible] – रानियों ([illegible]) को भी [illegible] नहीं रखते।

१२ समरै [illegible] लागी – [illegible] मस्तक पर जाकर अग्नि लगी।

१३ बीडो झालीयौ – बीड़ा ग्रहण किया, काम करना स्वीकार किया।

१४ हुं [illegible] छेतरीस – मैं इनको छलूंगा।

वैर कुण लेसी । ताहरा ठाकुरां फुरमायौ हु लेईस । ताहरां मातांजी ईहड सोलंकीरै घरे अवतार लीयौ ।

यु करतां माहे वरस १२ री हुई । ताहरां सगाईरी अटकळ माडी[1] । ताहरां राणे भणायरे धणीनु नाळेर मेल्हीयौ[2] । रांणे नाळेर झालीयौ । हिवै वीमाह साहो थापि मेल्हीयौ[3] ।

ताहरां रांणे जान[4] करि परणीजणनु चालीयौ । ताहरा वगडावतांनु आदमी मेल्हीयौ जु रांणैजी परणीजणनु चढीया छै । थे वैंगा[5] आवौ । ताहरां ईया कहायौ म्हे आविस्या पिण म्हाहरो सभाव छै । वीजी तरहरौ छै । म्हे परचिस्यां । दाम पीस्यां । थे मांसहिस्यौ नही[6] । म्हांनु मता ले जावौ । ताहरां रांणे कहाडीयौ[7] जे थे खरचिस्यौ तौ सोभा म्हांनु हुसी । थे वेगा आयौ ।

ताहरां अै वणाव करि आपरौ साथ लेनै हालिया[8] । आइनै रांणैजीरो मुजरौ कीयौ । सु ईयं भातर[9] आया सु राणैरौ साथ छिप गयौ । नजर आवै नही । अै हीज दीसै । आपरो साथ पसवाडै[10] चालै । डेरा पिण जुदा करै[11] । क्यु रांणै विच ईयांरी साथ भलौ दीसै । ईयु करता ईहडरै गाम जाय पहुता[12] ।

सांमेहळो[13] पिण आयौ सांम्हा । इतरैमै जेलू[14] पिण दीठौ ।

---

१. अटकळ माडी – युक्ति की ।
२ भणायरे ''मेल्हीयौ – भिनायके स्वामीको नारियल भेजा ।
३ हिवै' मेल्हीयौ – अब विवाह-लग्न निश्चत कर भेजे ।
४. जान – वरात, सं यान ।
५ वैंगा – वेगसे, तुरन्त ।
६ मांसहिस्यौ नही – सहन नही करोगे ।
७ कहाटीयौ – कहलाया ।
८ हालीया – चले ।
९ ईयै भाँतर – इस भातिसे ।
१० पसवाडै – पीछे ।
११ डेरा ' करै – ठहरनेका स्थान भी अलग करते ।
१२. जाय पहुता – जा पहुँचे ।
१३. सामेहळो – सामने जाकर स्वागत करनेकी प्रथा ।
१४. जेलू – ईहड सोलकीकी पुत्री जो देवीका अवतार मानी गई है । जेलू अथवा जेळू आगे वगड़ावतोके विनाशका कारण वनी जिससे कहावत प्रचलित है—'जेळू थें तौ घणा वगडावत खपाया' जेळू ! तुमने बहुत वगडावतोंका विनाश कर दिया ।

भोज बावळी[1] घोडी चढीयौ दीठौ। ईया माथ दीठौ ताहरा जेलू कहै। हु भोजैनु परणीजीस।

इयु करता आगे तोरण वादीयो[2]। सु जेलू परणीजणमैं राणैनु नही जाणै। भोजनु परणीजु। ताहरा हठ घणौ ही हूवौ।

ताहरा भोजै जेलूनु कहायौ। थे हठ न करो। राणेनु परणीजौ। परणीया पछै हु थानु ले जाईस। ताहरा जेलूरी छोकरी हीरू तिका विच फिरै। वाता करै। ताहरा भोजै वाह बोल दीया[3]। हु थानु पछै ले जाईस। वचन दीयौ। ताहरा जेलू राणैनु परणीया। यु करता भोजौ परवाह[4] राणैमु तूणी दिन्ही।

हिवै हालीया। राण भणाय आय पहुता। हिवै पैमारो[5] करि राणौ घरे गया। हिवै जेलू भोजैसु परधानो[6] करै। थारै बोलीयेनु पाल करि। ताहरा भोजै भाइ पूछिया। ताहरा भाइ कहै जे जेलू आवै छै तो आवण द्यौ। आपे अपूठी नही फेरा[7]।

ताहरा ईया वाह बोल दीया। जेलू इयार घडी भरि[8] आई। इया आधी[9] लीधी। राणौ फौज करि आयौ। लडाइ हुइ। २३ भाइ काम आया[10]। एक भाइ तेज नामै तिको नायौ। बीजा सरब काम आया।

दूहो–बूढा हूवा हो तेजा जेठजी, थाहरै सल पडीया गाले।
रदे न आया पाहुणा, दलपती ए ढालै॥ १

भाजो पडीयो ताहरा जेलू भोजरो माथौ लेनै ऊडी। ले जाइनै

१ बावळी – कोई घोड़ी (?)
२ तोरण बांदीयो – तोरण बांधा विवाह सम्बन्धी एक प्रथा।
३ बाह बोल दीया – प्रतिज्ञा से वचन दिया।
४ परवाह – हार।
५ पैमारो – से प्रकार यहाँ विवाह के बाद गृहप्रवेश सम्बन्धी प्रथा से तात्पर्य है।
६ परधानो – परामर्श, बातचीत।
७ अपूठी नही फेरां – विमुख नहीं करना।
८ घडी भरि – घड़ी भर कर।
९ आधी – आग।
१० काम आया – मारे गये।

ठाकुरां आगै मेल्हीयो। कह्यो हुं काम करि आई छूं।

ताहरा भोजै लारै सेढू[1] सती होवण आई। सत कीयो हुतो। ताहरां जेलू आयनै कह्यौ। तु सती मता हुए। थारै बेटो हुसी। ताहरा सेढू कहै। म्हारै बेटौ कठा होसी। हु तौ जनमरी बाझ। सु ताहरां जेलू कहै तू बाग माहे धूप दीप ले जाए। कमलरो फूल लेनै एकैनुं तले रापे। एक फूल उपरह तू बैसे। जाहरां बाळसद[2] हवे ताहरा तू उठिनै उरहौ लेई[3]। तू पाळे। थारो बेटौ हुसी। सपरो[4] हुसी। वैर लेसी।

ताहरा आ जायनै बाग माहे वयठी। ज्यु जेलू कह्यौ हुतौ त्यु कीयौ। आप आयनै धूप दीप कीयौ। घड़ी १ हुई। त्यु बाळकरो साद[5] हूवौ। ईग्रैरै आंचले पान्हौ[6] आयौ। ईयै उठिनै उरहो लीयौ। फूल महा बाळक नीसरीयौ। नांम उदेराव काढीयौ। साढू माता लेनै घरे आई। एथ[7] औ ईयेनु पाळै। मोटौ करै।

जीयै घडी उदैरावरौ जनम हूवौ तीयै घडी प्रोळिरा कांगरा गिड पड्या[8]। ढोलीयैरा साल ४ भागा[9]। ताहरां राणै पूछीयौ। औ किसो उपद्रव। ताहरां पडित तेडाया। कह्यौ औ किसौ उपद्रव। ताहरां पडिता कह्यौ बघडावतांरै भोजेरै बेटो जायौ[10]। ताहरां बाभण मेल्हीयौ। पवर कराई। कह्यौ जावौ मारौ।

ताहरा बांमण आइनै साढूनू पूछीयौ। माता बघडावतांरै बेटौ

---

१ सेढू – भोजकी गुर्जर जातिकी स्त्री। यही देवनारायणकी मां हुई।
२ बालमद – बाल शब्द, नवजात शिशुका रुदन।
३ उरही लेई – पासमें लेना।
४ सपरो – श्रेष्ठ, अच्छा।
५ साद – रुदन।
६ पान्हौ – वात्सल्यके कारण स्तनोंमें होने वाला दुग्ध-प्रवाह।
७. एथ – यहां।
८ प्रोळिरा ” पड्या – द्वार परके कंगूरे गिर पडे। प्रतापी शिशुके जन्म पर बातोमे ऐसा कहने की प्रथा है।
९. ढोलीयैरा ‘ भागा – पलग के पायोके छिद्रमेंका भाग टूट गया।
१०. जायौ – उत्पन्न हुआ।

जायौ छै। नाम कढाय[1]। म्हानु दिपाय। माता साढू कहै। म्हारै बेटौ काह[2]। हु जनमरी बाझ छु। बेटो काह। ताहरा बाभण रसोई मागै। द्यौ। ताहरा कहै माता रसोई देसु। तहरा बाभण कहै। म्हे यु रसोई न त्या। ये आप जाय जळ आणो[3] तो रसोई करा।

आप छोकरया[4] लेनै पाणीनु गया। औ बाभण घर सोभण गया[5]। आगै माहे पैस[6] देपै तौ पालणैमै बाळक हीडै छै[7]। ऊपर नाग उन करिनै वैठौ छै। पालणै दोळा[8] सरप लपटाणा छै। ताहरा ईया सरप छेडीयौ। ताहरा सरपे बाभण पाधा।

इतरैम माता आई। रै ठाला भूला[9]। था बाळकनु कामू कीयौ। ताहरा ईयौ कह्यौ। म्हा म्हाहरी कमाई पाई। हिवै म्हानु बचावौ[10]। ताहरा बाळक हसीयो। बाभण छुडाया। बाभण परह्या गया[11]। जाय राणैनु वात कही। ओ वाळक न मर।

ताहरा माता साढू मालवैनु कासीद हुलायौ[12]। पीहरसु आया। आइनै ल गया। ओथ[13] जाइ वसीया। गाया ग्वाळ सरब ले गया। माळवै जावता ऊवा[14] विचारीयौ वाळक नापि द्यौ[15]। आपे माल वैठा पामा। ताहरा पालणौ नापि टावर मेल्हि परहा गया।

---

१ नाम कढाय – नाम निकलवाओ नामकरण संस्कार करवाओ।
२ काह – कहां।
३ आणो – लाओ।
४ छोकरया – दासियां।
५ सोभण गया – देखनके लिए गये।
६ मांह पैस – भीतर प्रवेश करके।
७ पालणमैं बाळक हीडै छै – पालनेमे बालक झूलता है।
८ पालण दोळा – पालनके चारों ओर।
९ ठाला भूला – निकम्मे और भूल हुए।
१० बचावौ – बचाओ।
११ परह्या गया – चल गये परे, दूर चल गये।
१२ मालवेनु हुलायौ – मालवेमें दूत भजा। माता सांढूका पीहर मालवेमें था।
१३ ओथ – वहां।
१४ ऊवां – उन्होंने।
१५ नापि द्यौ – डाल दो।

जाहरां मातारै हाचले पान्ही आयौ[1] । कह्यौ बाळक ल्यावो ज्यु चूघावां[2] । ताहरा कहै माता बाळक म्हा नापि दीयौ । ताहरां माता साढू पाछी घिरी । आगै देपै तौ छवरे हेठे[3] पालणो रापीयौ तीसु सीहणी[4] आय चूघावण लागी । ताहरा माता साढू दीठौ । ताहरा कहै हे सीहणी तै म्हारो बाळक विनासीयौ । ताहरां सीहणी अळगी हुई[5] ऊभी रही । ईये जाय टावर उरहौ लीयौ । पालणौ भीलारै[6] काधे दीयौ । आघा हालीया । पीहर गई । उथ सुपसु रहै ।

एक दिन वांभणनुं टोघडा[7] दीया । पछै भाटानु दान दीयो । मोटौ हूवो । वरस १० रो हूवौ । ताहरा अपूठा ठिकांणै आया । आवतो पमारे परणीयो[8] । हिवै अठै रहै । यु करता गायां चरै । सु जगळमै गाया घास चरै । सु लोक पुकारै म्हांहरो घास सरव[9] चरि गया ।

ताहरां गाया राणेरै आदमीए रातै कोटमै रोकीयां[10] । ताहरां देवधरम राजा चढीया । ताहरां लडाई हुई । राणेरा लोक मारीया । गाया छुडाया । राणौ भागौ ।

ताहरा आप तौ भागौ पाछै न जावै । ताहरा भुणेनु[11] कह्यौ । भुणा ईयेनु पकडि ल्याव । ताहरां भोणो रांणैनुं पकडि ल्यायौ । रांणैनु मारीयो । आप पाछा आया ।

---

१. हाचले पान्ही आयौ – आंचलमें दूध आया ।
२ चूघावा – दूध पिलावें । बालकको स्तन-पान करावें ।
३. छवरे हेठे – पेड़ की छायाके (?) नीचे ।
४. सीहणी – सिंहनी ।
५. अळगी हुई – दूर हुई ।
६. भीलारै – भीलोके, भील=जाति विशेष ।
७. टोघडा – गायके बछडे (?)
८. आवतौ पमारे परणीयो – लौटता हुआ परमार क्षत्रियकी कन्यासे विवाह किया ।
९ सरव – सर्व (स), सब, सारा ।
१० राणेरै · रोकीया – राणाके अर्थात् भिनाय शासकके आदमियोनें रातमें गढ़में रोक ली ।
११. भुणेनु – भूणेको । भूणा, रावत भोजाका पहली स्त्रीका पुत्र ।

दडावट राजथान[1] तेथ आया। नीलावर[2] घोडे चढीया आया। आईनै घोडे चढीया आलोप हूवा[3]। देव धरम राजा आज लोक पूजा हुवै छै। वडो देव छै।

---

१ दडावट राजथान—दडावत या घडावट मेवाड़में आसींदके निकट एक गांव है। दडावट नामक स्थान बगड़ावतोंकी राजधानीके रूपमें प्रसिद्ध रहा है (मरु भारती पिलानी ; वर्ष ३ अङ्क ३ में 'राजस्थानके लोक देवता'' नामक श्री झाबरमल्ल शर्माका निबन्ध)।

२ नीलावर—एक रंग विशेषका घोड़ा।

३ आलोप हूवा—लुप्त हुए।

प्रतापसिंघ म्होकमसिंघरी वात

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ[1] रावत प्रतापसिंघ[2] म्होकमसिंघ[3] हरीसिंघोतरी[4] वात लिख्यते

वात[5]

देवगढ[6] रावत प्रतापसिंघ हरीसींघोत राज करै। जिको किसोहेक[7]।

---

१. ख प्रतिके जीर्ण होनेसे प्रारंभका पाठ स्पष्ट पढनेमें नहीं आता। संभवत: "अथ रावत प्रतापसिंघरी वात" है। "रावत प्रातपसिंघ ने ग मोहोकमसिंघ हरीसिंघोत देवगढरा धणीरी महाराज बादरसिंघजी किसनगढरा राजारी करी"। "अथ रावत प्रतापसिंघ मोहकमसिंघरी घ [हरी] सिंघोत देवगढरा धणीरी वात लिख्यते"।

२. रावत प्रतापसिंघ – राजस्थानकी एक पूर्व रियासत देवलिया-प्रतापगढके वि. स. १७३० (ई.स. १६७३) से स. १७६५ (ई.स. १७०८) तक शासक रहे। इन्होंने अपने नाम पर वि. स. १७५५ (ई. स. १६९९) में प्रतापगढ नामक नवीन नगरकी स्थापना की, जिससे प्रतापगढ देवलिया-प्रतापगढ रियासतकी राजधानीके रूपमें प्रसिद्ध हुआ। "रावत" अथवा "महारावत" प्रतापगढ-नरेशोंकी उपाधि है। रावत शब्द संस्कृतके "राजपुत्र" शब्दसे विकसित हुआ है। जैसे–राजपुत्र>राजपुत्त> राजउत>रावउतसे रावत।

३ म्होकमसिंघ – रावत प्रतापसिंघका भाई जिसकी वीरताका प्रस्तुत वार्तामें विशेष वर्णन किया गया है। प्रतापगढका सालिमगढ नामक ठिकाना म्होकमसिंघ और उसके वंशजोंके ही अधिकारमें रहा है (प्रतापगढ राज्यका इतिहास, स्व. डॉ. गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा, पृष्ठ स. १६५)।

४. हरीसिंघोतरी – हरिसिंघके पुत्रोंकी। हरिसिंघ-पुत्र>हरिसिंघउतसे हरिसिंघोत बना है। हरिसिंह वि. स. १६८५ (ई. स. १६२८) से वि. स. १७३० (ई. स. १६७३) तक देवलियाके शासक रहे। (वही)।

५ वात – वातके स्थान पर सर्वत्र ग घ में दवावैत पाठ है। दवावैत–रघुनाथरूपक (संपादक–श्री महतावचन्द्र खारेड, काशी ना. प्र. स.) और रघुवरजसप्रकास (सम्पादक–श्री सीताराम लाळस, राज० प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर) के अनुसार—दवावैतके गद्यबंध और पद्यबंध दो भेद हैं। प्रस्तुत वार्ता में गद्यबन्ध दवावैत का प्रयोग हुआ है।

६ देवगढ – प्रतापगढ राज्यकी प्राचीन राजधानी देवलियासे तात्पर्य है। यह देवगढ मेवाड़के प्रसिद्ध ठिकाने देवगढसे भिन्न है जहांके शासकोंकी उपाधि भी "रावत" ही रही है।

७ जिको किसोहेक – इसके स्थान पर ग और घ प्रतिमें "तिको षटदरसणरा दाळद्र हरे" पाठ है। षटदरसणसे यहां तात्पर्य, षड्दर्शनाचार्यों आदिसे है।

पातसाहासू आडो[1]। कवारी घडारो लाडो[2]। अड सग्रामरो नाटसाल[3]। चक्रवर्ता जिसडी चाल। आथरो माणीगर[4]। पट भाषारो जाणीगर[5]। दातार सूर। जलाहल नूर[6]। वीराधिवीर। आजाने वाह[7]। सरणाई सधीर[8]। नारारो नाह[9]। गज घडा मोडण[10]। वाका मैवासा तोडण[11]। जिण प्रथ्वीरै ऊपरै वडा वडा जुद्ध कीधा। रिणखेत[12] माहे आय चवदत हुवा[13] तिकानू मार लीधा। जिणारै कनै साप सापरा[14] रजपूत रहै। जिके पडतै आसमाननू भुजा सहै। स्यामरा[15] सहायक धरारा किवाड[16]। भावतारा भावता। अण

---

१ आडो – माग रोकन वाला विरोधी। रावत प्रतापसिंह वास्तवमे मुगल शासकोंका सहायक रहा है। प्रतापसिंहके नाम लिखे गये बादशाही फरमानोंसे इस मतकी पुष्टि होती है। (विशेष देखिये–प्रतापगढ़ राज्यका इतिहास, डॉ गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा)

२ कवारी घडारो लाडो – कुमारी सेनाओंका अर्थात जिस सेनासे युद्ध नहीं किया गया हो, उनका प्यारा। राजस्थानी कथाओंमे इस विशेषणका कई बार प्रयोग हुआ है।

३ अड सग्रामरो नाटसाल – धीरता-पूर्वक युद्ध करने वाला।

४ आथरा माणीगर – अर्थ धन-वभवका उपभोग करने वाला।

५ पट भाषारा जाणीगर – षट भाषाओंका ज्ञाता। षट भाषाओंमें सस्कृत प्राकृत मागधी शौरसेनी, पशाची और अपभ्रशका समावेश किया जाता है (षडभाषा चन्द्रिका)

६ जलाहल नूर – सूर्यकी भाँति कातिमान।

७ आजाने वाह – आजानुबाहु। घुटनो तक लम्बी बाहों वाला।

८ सरणाई सधीर – शरणागतोंकी धीरतापूर्वक रक्षा करने वाला।

९ नाह – नाथ, स्वामी।

१० गज घटा मोडण – हाथियोंके समूहको मोड देने वाला।

११ वाका मवासा तोडण – शत्रु पक्षके सुरक्षित स्थानोंको तोड देने वाला।

१२ रिणखेत – रणक्षेत्र, युद्ध भूमि।

१३ चवदत हुवा – प्रसिद्ध हो गया।

१४ साप सापरा – शाखा-शाखावे। राजपूतोंकी मुख्य शाखाए ३६ मानी गई हैं (मुहता नणसीकी ख्यात भाग २ नागरी प्रचारिणी सभा, काशी पृष्ठ ४८१)।

१५ स्यामरा – स्वामीके।

१६ धरारा किवाड – धरतीके रक्षक।

भावतारा जडा उपाड़[1] । इण भांतरा तो कनै[2] रजपूत । इसड़ो ही आप पिडा[3] मजवूत ।

दोहा[4]–धर बकी बंको धणी, वंका भड़ बरहास[5] ।
अरि बंका सूधा करै, वंका रिण बाणास[6] ॥ १

अड़ियो रांणा अमरसूं, अंण गंज[7] रहियो आप ।
तड़िता[8] सिर त्रिजड़ां जड़ी[9], वो रावत परताप ॥ २

अरि धंम[10] भाला उधमै, अंग षत्रवाट अमाप[11] ।
अनड़[12] षगां वगां[13] अचल, वो रावत परताप ॥ ३

मरद छतो[14] आपह मतो[15], थप्पै[16] मोटी थाप ।
रावत वट रतो रहै, वो रावत परताप ॥ ४

संक मनावै सत्रुवां, असंक सदा रिण आंप ।
वयण अटंका[17] बोलणो, वो रावत परताप ॥ ५

---

१. उपाड़ – उखाड़ने वाला ।
२. कनै–पासमें, समीप ।
३. पिंडा – स्वय । ग घ. "आप पिंडा" के स्थान पर "आपै" पाठ है ।
४. दोहा – ग घ दुहा । राजस्थानीमें दोहा छन्दके लिये एक वचन दूहो और बहु. वचन दूहा या दुहा प्रचलित है ।
५. वरहास – घोड़ा ।
६ वाणास – तलवार ।
७ अण गंज – अजेय ।
८. तडिता – बिजली ।
९ त्रिजडा जडी – तलवार मारी, तलवारसे प्रहार किया ।
१०. धम – धर्म ।
११ पत्रवाट अमाप – अतुल क्षत्रियत्व, बड़ी वीरता ।
१२. अनड – अनम्र, नहीं झुकने वाला ।
१३. वगा – वाग, घोड़ेकी लगाम, यहां सवारी करनेसे तात्पर्य है ।
१४. छतो – क्षिति, पृथ्वी या छत्रधारीसे तात्पर्य है ।
१५. आपह मतो – अपने ही मतसे चलने वाला ।
१६. थप्पै – स्थापित करता ।
१७. अटका – बिना तोलके, वीरतापूर्ण ।

वात[1]

ईण भातरो रावत परतापसिंघ। जिणरे छोटो भाइ म्होकमसिंघ। जिको किसटोहेक रजपूत। श्राग श्रजाग[2]। तापो[3] नाग। पाग नै त्याग विपै[4] जगहीमो वढती वाग। रीज[5] पर सारो ही त्याग। कई वार निवल्यौ कनारी घडाम वढि। समहर[6] भडासू वढि। डारो धणी पण कई वार श्रकेलो ही लोहा मिल्यौ[7]। सोरमै पण रजक[8]। तिण भात रजपूतीरी तीपरो तप भप[9]। तिणरो रजपूतीरी तीप। तिको धणी तीपानै[10] पण मीप। रेवणनै राड श्राया थका वधाई वटै। श्रर विलकुल नै घणो तातो मिलै। प्रिथिमै घडी पिलरो[11] मिजमान[12] हुवो थको भिलै[13]।

दोहा—मरण गिणै तिल मान[14], हाथ जीव हाजर रहे[15]।
श्रो घट[16] घाट[17] श्रताल, निराताल[18] न्हापै[19] निडर ॥ १

---

१ वात — ग घ प्रतियोंमें दवावैत।
२ श्राग श्रजाग — श्रागोंमें वज्रकी भांति तेज धारण करने वाला।
३ तापो — तीक्ष्ण, तेज।
४ पाग न त्याग विप — शस्त्र सञ्चालन श्रौर दानके सम्बन्धमें। ग प्रतिमें 'पागनै त्यागरै विच तापो नाग' पाठ है।
५ रीज — रीझ, प्रसन्नता।
६ समहर — समान।
७ लोहा मिल्यौ — शस्त्र धारण कर श्रथवा शस्त्रधारियोंसे युद्ध किया। लोहेसे तात्पर्य शस्त्र है।
८ सारम पण रजक — युद्धमें भी श्रानन्द लेने वाला।
९ तप भप — सज धज।
१० तीपान — तेज लोगोंको वीरोंको।
११ घडी पलरो — घडी पलका, थोडे समयका।
१२ मिजमान — मेहमान।
१३ भिल — शोभित होता है।
१४ तिल मान — तिल मात्र, तिल बराबर सामान्य।
१५ हाथ जीव हाजर रह — प्राण सदा हाथमें लिये रहता है, मरनेके लिए सदा प्रस्तुत रहता है।
१६ घट — शरीर।
१७ घाट — स्थान।
१८ श्रताल निराताल — शीघ्र बहुत।
१९ न्हाप — डाल देता है।

झोकै झाझी झाल[1], काल चाल झटकै कमो[2] ।
भटकै क्रोध भुजाल[3], षटकै उर षूंदालमौ[4] ॥ २

समहर बागां सार[5], आंम्हा सांम्हां आहुड़[6] ।
बधि[7] म्होकम जिण वार, षाग झटां[8] षेलै षलां[9] ॥ ३

चष[10] मुष अरुण सचोल[11], बिलकुलतो[12] वाकारतो[13] ।
धीवझड़ां[14] धमरोल[15], अरि दल ढाहै हरिंदउत[16] ॥ ४

वात

ईसडो[17] तो भाई म्होकमसिंघ । अर ओर भी भाई भतीजा वडा वडा रजपूतवटरा सुभाव लीधा थका रावत प्रतापसिंघरी हजूर रहै । बडी वडी रीझां मोजां हमेसा लहे[18] । तिके किसडा हेक ।

---

१ झाझी झाल – अधिक ज्वाला ।
२. कमो – म्होकमसिंह ।
३. भुजाल – भुजाओ वाला, वीर ।
४. षूदालमौ – खूंदने वाला, उपद्रवी ।
५. समहर वागा सार – समान व्यक्तिसे तलवार बजने पर, समान व्यक्तिसे लड़ाई होने पर ।
६. आहुड़ै – पलटते, युद्ध करते ।
७. बधि – वर्द्धमान हो, बढ़ कर ।
८. झटा – प्रहार ।
९ पला – शत्रु ।
१० चष – नेत्र ।
११ सचोल – लाल ।
१२. बिलकुलतो – शीघ्रता करता हुआ ।
१३. वाकारतो – पुकारता हुआ ।
१४. धीवझडा – प्रहार ।
१५. धमरोल – युद्ध ।
१६. हरिंदउत – हरीन्द्रपुत्र, हरिसिंहका पुत्र ।
१७. ईसडो – ऐसा ।
१८. लहे – लेते ।

दोहा–सोहा हदा छावडा[1], धसँ समुध पग धार ।
वाहै[2] लजरा विटिया[3], सीस गयदा[4] सार[5] ॥

वात

तिण समँ[6] भीलामँ एक भील मुदायत[7] । तिको घणारो आटायत[8] । सो देवगढरी धरतीरो विगाड करै । तद रावतजी वैनु[9] मारणरो हुकम कीधो । सो ओ भी एक जायगा न रहै जिण आटै[10] न मरै । जे फोजवधी कर चढै तदि तो ओ भाखरामैं[11] पैठै[12] । जे दगो विचारै जदि ओ भी सावधान होय वैठै । भील तीस चालीसेकमु घणी अगम[13] विषम जायगा रहै । माथरा भील पण वडा आटा पेटारा[14] करणहार । निसक हुवा थका दोडे अरु मुलकरा[15] धन लहै ।

दोहा–पग छुटा[16] पैरू[17] निसा, धरिया कर धानख[18] ।
रखवाला मँवासका[19], येहा भील असक ॥

---

१ छावडा – पुत्र ।
२ वाहै – चलाते ।
३ लजरा विटिया – आवेष्ठित ।
४ गयदा – हाथियोंके ।
५ सार – तलवार
६ तिण सम – उस समय ।
७ मुदायत – मुखिया ।
८ घणारो आटायत – बहुतोंको कष्ट देने वाला ।
९ वनुं – उसको ।
१० जिण आट – जिसके कारण ।
११ भाखराम – पहाडोंमें ।
१२ पठ – प्रविष्ट हो चला जावे ।
१३ अगम – अगम्य, कठिनाईसे पहुचनेकी ।
१४ पेटारा – आखटोंसे, प्रहारसे ।
१५ मुलकरा – मुल्कका देशका ।
१६ पग छुटा – छूटे हुए परोंसे, चल हुए ।
१७ परू – पहरेदार सावधान रहने वाले ।
१८ धानख – धनुष ।
१९ मवासका – जगलके ।

वात

ईण भांत घणा तापडा पणांसु[1] रहै अर टणकापणरी[2] वातां चोडै[3] कहै।

एक रजपूत रावतजीकी हजूर रहै। जको आदमी तो पाधरो सो[4]। पण मोटियार पगछूंटो सो। रावतजी उणनु देप पोतारियो[5]। किण वास्तै। ईणनु पोतारतां ओर भी किणीनु चोप[6] तीप[7] लागै तो उण भीलनु अगो अग[8] मारै। दूज्यू ओ मरै नही। अर मारणौ सही।

एकण दिन रावतजी दरवार किया वैठा था। तद भीलरी वात चाली। जद उण रजपूतनू पौतार कहियो। ओर तो कोई दीसै नही[9] जिकौ उण भीलनू मारै। जे मारै तो ओहीज[10] रजपूत मारै।

जिण वेला सीसौदियौ जसकरण जौगीदासोत[11] वैठौ थो सौ जसकरण वडो वीराधवीर[12]। जिसडो धीर पंडीर[13]।

दोहो—केई बेलां[14] धसियो[15], कल रसियो वग रंग[16]।
अरिहां[17] उर वसियो रहै, वो जसियो[18] अण भंग[19]॥

---

१. तापडापणांसु – वल लिये हुए।
२. टणकापणारी – सामर्थ्यपूर्ण।
३ चोडै – खुलेआम, स्पष्ट।
४. पाधरो सो – सीधा-सा, सरल।
५. पोतारियो – वढावा दिया।
६. चोप – श्रेष्ठता, भलाई।
७. तीप – तीक्ष्णता, तेजी।
८. अगो अग – द्वन्दमें, स्वयं युद्ध कर।
९. दीसै नही – दिखाई नहीं देता।
१०. ओहीज – यही।
११. जसकरण जौगीदासोत – जोगीदासका पुत्र जसकरण।
१२. वीराधवीर – वीराधिवीर, वीरोंमें भी वीर।
१३. धीर पडीर – शरीरका धीरजवान, धीर पुंडरि नामक सामन्त जैसा।
१४. वेला – समय।
१५ वसियो – प्रविष्ट हुआ।
१६. कल ' रग – असि-चालनमें आनन्द प्राप्त करने वाला श्रेष्ठ रसिक।
१७. अरिहा – शत्रुओंके।
१८. जसियो – यशस्वी, जसकरणसे तात्पर्य है।
१९. अण भग – अभंग, नहीं भग्न होने वाला, वीर।

वात

सो जसकरण बोलियो। दीवाण[1] ईसडी काइ कहो छो। किण ही रजपूतरी परप[2] भी लहो छो। रावत हरीसिंघरा घर माहे इसडो रजपूत नही जको उण भीलडैनु मारै। सो दीवाण तो छत्रपती छो। पण हरीसिंघरा घर माहे ओर भी सपरा[3] रजपूत छै जिके उणनु अकेलो पैठ अगो अग मारै। अर वात उवारै[4]। जिणसू दीवाण ईसडी किण वाय[5] कहणी आवै। आ वात सुणी थकी किणनु भावै। इण भीलडारो वूतो[6] कासू[7]। सो नजर चढिया अडै म्हासू। जिण परे आप इतरी फुरमावो। इणनु मारणो होय तो किण ही एकणनु[8] कहीजे। थे ओ काम करि आवो। रावला[9] घर माहे छै एक एक इसा रजपूत। जिको बाधै दिली नै चीतोडसू लडवारो[10] सूत[11]। जिणसू किणहीनै फरमाय[12] हाथ देपीजै[13]। कै तो मारि आवा कै पकड लावा तो रजपूत लेपीजै[14]।

---

१ दीवाण – मेवाडके महाराणाओंकी उपाधि 'दीवाण' कही जाती है क्योंकि मेवाडका राज्य एकलिंग महादेवका और महाराणा उनके दीवान माने जाते हैं। देवलिया प्रतापगढ़का राज्यवंश भी मेवाडके महाराणा मोकलके पुत्र और महाराणा कुंभाके भाई क्षेमकर्ण (अपर नाम क्षेमसिंह, खेमा या खींवा) से प्रारंभ होता है। इस प्रकार प्रतापसिंहको भी दीवाण कहा गया है।

२ परप – परीक्षा।

३ सपरा – श्रेष्ठ।

४ उवार – उद्धार करे, पालन करे।

५ किण वाय – किस प्रकार।

६ वूतो – आधार।

७ कासू – किससे क्या।

८ एकणनु – एकको।

९ रावला – आपके सरकारके।

१० लडवारो – लडनेका।

११ सूत – सूत बांधनेका यहां तात्पर्य युद्ध करनेके विचार या उपक्रम करनेसे है।

१२ फरमाय – फरमा कर कह कर।

१३ देपीज – देखिये।

१४ लेपीज – जानिये।

ईण तरै ईणरो रोस देष साचवट पेप[1] रावतजी वोलिया। ठाकुर थेई सदा छो। हू पातसाह किना दीवाणसू पेटो धारू[2]। ईण भीलड़ैरै उपरा थांनू कामू पोतारू[3]। हूं तो म्हारै रावत हरीसीघरा घरकी वात कहूं छु। अर ईण भीलरी वात सुण मन मांहि रोस धार रहूं छू। सो हरीसीघरो नाव सुणता ही भांई म्हौकमसिंघ वैठौ थो सो ईसो[4] भभकियो। जाणे दारूरा गज[5] माहे आगरी चिणगी[6] पडै। किनां वलती[7] आग माहै घ्रत न्हाषियो झांल आकास जाय ऊड़ै। रुकिये[8] हाथीनु रोस चड़ै किना उकलता[9] तेल मांहे पांणीरी वूद पडै। जिण भांत षिजाये[10] नागरी[11] नै दकालियै[12] वाघरी नांई[13] बोलियो। नै मन माहि रोसरो नै जोसरो ताव हूंतो सो चौड़ै षोलियो।

दोहा—कथ[14] इम सुण कोपे कमों[15], अंग अंग प्रगटी आग।
बांणी ईण बिध बोलियो, जांण षिजायो नाग॥

बात

कहियो दीवाण ईसडी[16] काह[17] कहो छो। किण ही रजपूतरी

---

१. साचवट पेप – सचाई देख कर।
२. पेटो धारु – युद्धका, संघर्षका विचार रखता हूं।
३ पोतारु – वढावा दूं, प्रोत्साहित करू।
४. ईसो – ऐसा।
५. दारुरा गज – मदिराके संग्रहमें।
६. चिणगी – चिनगारी।
७. वलती – प्रज्वलित होती हुई, जलती हुई।
८. रुकिये – वलात रोक रक्खे गये।
९. उकलता – उवलते हुए।
१० षिजाये – चिढाये हुए।
११ नागरी – सांपकी।
१२. दकालियै – ललकारे हुए।
१३. नाई – तरह।
१४ कथ – कथन।
१५. कमो – महोकमसिंह।
१६. ईसडी – ऐसी।
१७ काह – क्या

परख[1] भी लहो छो। कहो छो रावत हगीसिंघरा घर माहे ईसडो रजपूत नहीं सौ उण भीलड़ैनु मारै। सो दीवाण तो छत्रपती छो पण उणरा घर माहे वी सपरा[2] सपरा रजपूत छै जिके उणने अकेलो पैठ अर अगो अग मारे। अर बात उबारे।

ईण तरै सुणनै जिण वेळारो[3] म्होकमसिंघरो जोम नै रोस देख रावतजी बोलिया। बाप बाप हू थानु तो न कहू छू। हू तो म्हारा पिंडरी[4] कहू छू।

इनरी वह मोहकमसिंघनु थथोपियो[5]। पण ओ तो कोपियो सो कोपियो। मुहडै[6] अण मापरो रोस व्यापियो[7]। मन माहि भीलडैनु मारणरो दाव रोपियो[8]। ईण सकोचसू बोलियो तो नही। जाणियो दीवाण जावण न देसी[9]। हर[10] जाणसी जाय छै तो ही गया थका पाछो बुलाय लेसी। ईण भात दिन पाच सात आडा घातनै[11] एक तो साथ रजपूत अर येक चाकर सो भी मजबूत। दोय आदमी साथ लेनै जिण मवासामै[12] भील रहता तठै ही[13] आप जाय पहौतो[14]।

पछै रावतजीनु खबर हुई सौ पाछो बुलावणरो तलास तो घणो ही कीवो। पण ईणरो सोध[15] किण ही न लीधो।

---

१ परख – परीक्षा। परख<परक्ख परीक्खा <परीक्षा।
२ सपरा – श्रेष्ठ।
३ जिण वेळारा – जिस समयका।
४ म्हारा पिंडरी – मेरे शरीरकी स्वयंकी।
५ थथोपियो – स्थिर किया शान्त किया।
६ मुहडै – मुह पर।
७ व्यापियो – व्याप्त हुआ फला।
८ रोपियो – निश्चित किया।
९ जावण न देसी – जाने नहीं देंगे।
१० हर – और।
११ आडा घातनै – सामने डाल कर व्यतीत कर।
१२ मवासामै – वन प्रान्तमें, जंगलमें।
१३ तठै ही – वहीं।
१४ पहौतो – पहुचा।
१५ सोध – शोध खोज।

अर भीलनै पवर हुई। म्होकमसिंघ इण वंनीमै[1] आदमी दोयसू[2] आयो छै। सो ओर तो कांम कोय दीसै नही[3] मोनै ही मारणनुं ध्यायो छै[4]। पण अवरकै[5] पवर पड़सी। देपा किण वाय[6] मोसू अडसी[7]। तीन आदम्यारी कासू वात। जिके मो मारीसा[8] छळ वळ दाव जाणै जिकणसू[9] करै घात।

ईतरी वात धार रावत प्रतापसिंघनु कहायो। ईसा दावांसू[10] तो हू न मरस्यू। ओ म्होकमसिंघ जीकु हांसीमें[11] जहर चापै छै[12]। अै तो मोटा सिरदार छै। पण ठीकरी घडानु फोड़ न्हापै[13] छै। सो म्होकमसिंघ तो वडी धक[14] अर तलासमै लाग रह्यो छै। झाड झाड पहाड पहाड़ हेरता थकां[15] रात दिन एक सौ क्रोधमै जाग रह्यो छै। पण एक दिन ईसडो दईव सजोग[16] हुवो सो म्होकमसिंघ तो हिरणरी सिकार मूळ[17] वैठो थो। अर साथरो रजपूत हिरण टोळवानै[18] वन

---

१ वनीमै – वनमे।
२. आदमी दोयसू – दो आदमियोके साथ।
३ कोय दीसै नही – कोई दिखाई नही देता।
४. मारणनु ध्यायो छै – मारनेको दौडा है।
५. अवरकै – अवकी वार।
६ वाय – भाति, तरह।
७. मोसू अडसी – मुझसे अडेगा, मुझसे लडेगा।
८. मारीसा – जैसे।
९ जिकणसू – जिससे।
१० दावासू – दावो से, चालोसे।
११. हासीमैं – हंसीमें।
१२ चापै छै – चखता है।
१३ ठीकरी न्हापै – मिट्टीके वर्तनका एक छोटा टुकडा भी घडेको तोड देता है। एक कहावत है, जिसका तात्पर्य है कि सामान्य व्यक्ति वलवानको हरा सकता है।
१४ धक – जोश, उत्साह।
१५ हेरता थका – ढूढते हुए।
१६ दईव सजोग – दैवयोग।
१७ मूळ – शिकारगाह, शिकार करनेका स्थान।
१८ टोळवानै – घेरनेके लिये। शिकारमे जानवरको घेरा डाल कर या आवाज कर शिकारगाहके पास लाया जाता है।

माहि पैठो थो। चाकर कनै[1] थो जिकण कना जामगी[2] कळरै[3] लागी थी। अर भीलरी काळरी घडी आय वागी[4] थी। इतरामें वो भील अचाणचको[5] उण हीज गेलै[6] आयो। चाकर देपियो अर मन भायो। चाकर कन वदूक थी। अर जामगी कलरे लागी थी। सो रोसरी वकधार[7] अर कही। रावतजी सलामत ओ भीलडो हरामपोर। प्रथीरो चोर। काळरो पादो। मोतरी जेवडीरो वाधो[8]। ओ आवै। ईणनू देपीजे। अर हुकम होय तो गोळीरी दीजे। तद वा देपनै कहियो। गोळीरी तो न देणी। इण लौंडरी[9] भी मजबूती देपणी। साचवटमू[10] अगो अग[11] वाकारन[12] मारणो। अरु प्रथी[13] प्रतीप चोपको[14] वचन उवारणो।

---

१ कनै – निकट।

२ जामगी – मध्यकालीन तोप या बन्दूकको चलानेके लिये उसमें भरी हुई बारूदको बारूद लगे हुए धागेसे जलाया जाता था। ऐसे बारूद लगे हुए धागेको जामगी कहा जाता है।

३ कळरै – कलके बन्दूकके चलने वाले भागके।

४ वागी – बजी।

५ अचाणचको – अचानक। अचानक शब्दका सम्बन्ध "अज्ञान" से जोड़ा जाता है जैसे अचानक<अजाणक<अज्ञानक<अज्ञान। एक मतसे अचानकका सम्बन्ध 'अचाणक्य' से भी माना जाता है अर्थात ऐसा कार्य जिसकी सूचना चाणक्य जैसे तीव्र बुद्धि व्यक्तिको भी न हो। वास्तवमें 'अचानक' उर्दू शब्द है।

६ गेलै – मार्गमें।

७ रोसरी वकधार – क्रोधके आवेगमें।

८ मोतरी वाधो – मौतकी रस्सीसे बंधा हुआ। मूंज या सण की बनी रस्सी को जेवडी कहते हैं।

९ लौंडरी – लौंडकी सामान्य लड़केके लिये तिरस्कारयुक्त अभिव्यक्ति।

१० साचवटमू – सचाईसे।

११ अगो अग – अगसे अग भिड़ा कर शरीर-युद्धमें।

१२ वाकारन – ललकार कर सचेत कर।

१३ प्रथी – पृथ्वी।

१४ प्रतीप चोपको – प्रत्यक्ष सचाईका।

दोहा–चित जिण मोटी चूक[1], अरि विन वाकारे अड़े ।
विढियो[2] न्हाप[3] वंदूक, इण आंटै हरियद तण[4] ॥ १
असमर[5] वोड़ण साह[6], मारण पिसणां[7] मलफियो[8] ।
म्होकमरा मन मांह, चोप तणी अति चटपटी ॥ २

वात

ईण भांत वंदूक न्हाप ढाल तरवार लेनै भीलरै सांम्हो हीज धायो नै पांवडा बीस तीससू वाकारियो। रोसरो रूप परतप[9] धारियो। सो वाकारतां ही भीलड़ो भी पर मालारो पाणहार[10]। उधारा आंटारो लेणहार[11]। देस देसरा आटा पेटा[12] जारिया[13] वैठो थो सो जोमरो मारियो[14] नै रावतरो अध्रियावणै रूप[15] होय सामोहीज आयो। नै वाह चढाय धणी चठठाय[16] रावत सांम्हो तीर चलायो। सो अछटरो[17] रावतरा पगरै फूट पार जाय पडियो। अर तीर चलाय सांम्हो ही पडियो[18] तीर पगरै फूटा थका जिण भात आकाससूं वीज तूटै[19] तिण

१. चूक – भूल, अपराध ।
२. विढियो – वढियो, आगे वढा, लड़ा ।
३ न्हापै – डाल कर, गिरा कर ।
४. हरियंदतण – हरिसिंहतनय म्होकमसिंह ।
५. असमर – तलवार ।
६. वोडण साह – वादशाहको, भी हरा देनें वाला ।
७. पिसणा – पिशुनोको, शत्रुओंको ।
८. मळफियो – उछला ।
९ परतप – प्रत्यक्ष ।
१० पर मालारो पाणहार – पराये मालका खाने वाला ।
११. आटारो लेणहार – वैरका वदला लेने वाला ।
१२ पेटा – लड़ाई ।
१३ जारिया – किये हुए ।
१४. जोमरो मारियो – गर्वसे भरा हुआ ।
१५ अध्रियावणै रूप – भयङ्कर रूप ।
१६ धणी चठठाय – धनुष पर तीर चढानेकी ध्वनि कर ।
१७. अछटरो – छूटते ही ।
१८ पडियो – चला ।
१९ वीज तूटै – विजली गिरे ।

भात भीलरै माथै[1] तूटि पड़ियो। जिण वेळा[2] आईहो[3] म्होकमसिंघ आसमान जाय अडियो। भील तरवार वाही[4]। सो तो ढाल उपरा लीधी अर भीलरै माथै तरवाररी वाह कीधी[5]।

दोहा—अति पोरस धरि[6] धप उमग[7], पग बाहो कर पीज।
अरो तणा[8] सिर उपरै, वज्ज[9] पडे किना बीज[10] ॥ १

अणचग असमर आछटी[11], हरियद सुतन हटाल[12]।
पिसण तणौं[13] सिर पाधरो[14], तूट पड्यो तिण ताल[15] ॥ २

मटका जेहो मूडडो[16], पड्यो पाछटे पाग[17]।
तोउ उछटे तूबडो[18], दडो कि दोटे लाग[19] ॥ ३

वात

इण भात भीलनू मार भीलरी साथ दोय च्यार आदमी था जिकांनू भी जाय अडिया। जिके भीलडा भी टूकडा टूकडा होय पडिया।

---

१ माथै – मस्तक पर सिर पर।
२ जिण वेळा – जिस समय।
३ आईहो – अहिहो एसा।
४ वाही – चलाई।
५ वाह कीधी – प्रहार किया।
६ पोरस धरि – पौरुष धारण कर।
७ धप उमग – उमंग में भर कर।
८ अरी तणा – शत्रु के।
९ वज्ज – वज्र, इन्द्र का शस्त्र।
१० किना बीज – अथवा बिजली।
११ अणचग आछटी – तलवार का अपूर्व प्रहार किया।
१२ हरियद हटाल – हरिसिंह के हठी पुत्र।
१३ पिसण तणौं – शत्रु का।
१४ पाधरो – सीधा।
१५ तिण ताल – उस समय।
१६ मटका मूडडो – मटके, मिट्टी के गोल बरतन जैसा मुंह।
१७ पाछटे पाग – तलवार के लगने पर।
१८ तोउ तूबडो – तो भी तुम्बे की तरह वह उछलता है।
१९ दडो कि लाग – जैसे गेंद प्रहार होने पर उछलता है।

तिका भीलांरा माथा काटि रावत प्रतापसिंघरा हाथ्यारां मूढा आगैं[1] नपाय दीया[2] । सो ईसडा तो चोप तीपरा तमासा म्होकमसिंघ किताई कीधा । अर ईण भीलडारा प्रवाडारी[3] वात म्होकमसिंघरी जिताई[4] सो तो एक चोप तीपरी वात याद आई । दूज्यूं[5] उणरी रजपूती दीठां[6] ओ तो कांसूं[7] प्रवाडो । उणांरा तो असंक प्रवाड़ा पण ईण वात मांहे येक ही चाव । ज्यू माठारै वागै चामठी तातारै लागै घाव[8] । ईण भांत उण रजपूतनू पोतारतां[9] नै तीप चोपरो वचन उचारता[10] ईणरै तीपरो वचन जाय लागो । तिणसूं अगो अंग जाय वागो ।

दूज्यू ओ तो वडी वडी वातानू वाथ मारै[11] । जे आकास षड़हडै[12] तौ एक वार तो आधारै[13] । जिणरै वडै भाई वीजनु कटारी वाई[14] ईणरी मनमैं तो उणसू ही तीप सवाई । तिण समै पातसाह अवरंगजेव पातसाही करै । तिण दोय तीन पातसाहानु तो पकड़ लीधा । अर कितराहेकनु पकड़ण अर मारणरा दाव दीधा । तिणरी धाक ईरांन तूरांन रूम स्यांम फिरग रूस चीन्ह म्हाचीन्ह[15] ईण देसादेसारा पातसाह ईणरा हुकमरा आधीन सारा डरै । परहरै[16] । डड भरै[17] ।

---

१ हाथ्यारा···आगैं – हाथियोके मुंह आगे ।

२. नपाय दीया – गिरवा दिया ।

३ प्रवाडारी – प्रवादकी, युद्धकी ।

४. जिताई – विजितकी, जताई, बताई ।

५ दूज्यू – यो फिर, दूसरी बातय ह है कि ·· ।

६. दीठा – देखने पर ।

७. कासू – क्या, कौनसा ।

८ माठारै···घाव – एक कहावत, जिसका तात्पर्य है कि व्यंग्यपूर्ण बात शान्त व्यक्तिको छड़ीकी भाँति लगती है किन्तु तेज व्यक्तिके उससे घाव हो जाता है ।

९. पोतारता – प्रोत्साहित करते हुए, 'हाथियो को पोतारना' प्रसिद्ध है ।

१० उचारता – उच्चारण करते हुए, बोलते हुए ।

११. वाथ मारै – हाथमें लेना, सर पर लेना ।

१२ पडहडै – टूट पड़े ।

१३. आधारै – आधारित कर ले, रोक ले ।

१४. वीजनुं वाई – बिजली पर भी प्रहार किया ।

१५. म्हाचीन्ह – लेखकका तात्पर्य संभवतः हिन्द चीनसे है जो दक्षिण-पूर्वी एशियामें है ।

१६ परहरै – भागते हैं ।

१७. डड भरै –जुर्माना देते हैं ।

ईणनू रुसाय[1] कुण आगवण करै। ईणसू आदमी कुण जो अडै। जिणसू देव दाणव ही विमुहा पडै[2]।

दोहा–सके बका सात्रुहर[3], सूर पराक्रम सेर।
अवरग साह अवलिया, जग सहो कीधो जेर[4] ॥ १
राह दला रपे रजा[5], पहो मनह पेपाण[6]।
अभग नवू पड[7] उपरा, अवरग फेरी आण ॥ २

वात

ईसडो अवरगसाह पातसाह। तिणरो पोतो[8] अजीमसाह[9]। नरनाह। विजाई[10] पातसाह।

दोहा–भारथ पारथ ज्यू भिडै[11], सकजापणरी सीम[12]।
गुमर न दूजाचो गिणै[13], एहो स्याह अजीम ॥

वात

जिकण अजीमसाहनु बगालारो सोबो[14] दे विदा कीधो। जिण बगालामै साठ हजार पठाणारो फसाद उठियो तिकणनू मार लीधो। तिकणरी तईनातीमें नाजर[15] १ पातसाह कीधो। जिका पातसाहरो

---

१ रुसाय – क्रोधित कर।
२ विमुहा पड – मुंह फेर कर भागते हैं।
३ बका सात्रुहर – बांके शत्रु।
४ जग जेर – जिसने सारे जगतको व्यथित कर दिया है।
५ रप रजा – सेनाको अपनी आज्ञासे रास्ते पर अर्थात व्यवस्थित रखता है।
६ पोह पपाण – मन में जबरदस्त मान करने वाला।
७ नवू पड – पृथ्वीके नव खण्ड भारत इलावत किंपुरुष, भद्र केतुमाल, हरि हिरण्य रम्य और कुरु।
८ पोतो – प्रपौत्र।
९ अजीमसाह – औरगजेबके शाहजादे मुअज्जमका द्वितीय पुत्र अजीमुश्शानसे तात्पर्य है।
१० विजाई – दूसरा ही।
११ भारथ भिडै – युद्धमें अर्जुनकी तरह लड़ता।
१२ सक जापणरी सीम – परम पराक्रमी।
१३ गुमर गिणै – किसी दूसरेका गर्व नहीं मानता।
१४ बगालारो सोबो – बंगालका सूबा।
१५ नाजर – शाही महलों में प्राय नपुसक नाजिरका (निरीक्षकका) काम करते थे।

दसतूर जिकाही वसत[1] वा आदमी दोढीमे[2] जाय जिणांनू देखनैं जावा देवै। घणो हाजर रहै। किणहीसू स्याहजादो छांनी[3] वात करै तद ओ भी आय कान देवै। स्याहजादाकी दोढी प्र घणो तकरार करै[4]। स्याहजादो ईणनू तकरार कर कहै। थे तकरार करो छो पिण कैंदी पातसाह वा कैंदी स्याहजादारो दसतूर छै। हू मोवो साधृ नैं सरहद वांधू। तिणरी दोढी पर तकरार न पटावै[5]। अठै तो केई तरैका जुवाव साल[6] आवै।

इण तरह मनै कीधो[7] तो भी न मांनी। ओ तो रापै अवरगजेवकी मरजीदानी[8]। तरा[9] स्याहजादै उकीलांनै[10] लिप तलास कर इणनू तगीर करायो[11]। सो पातसाह कनें जाय वहाल होय वाहीज षिजमत[12] लेर फेर उठै हीज आयो। तिणनु आवतो सुण स्याहजादै माथौ धूण्यो[13] नै सिरविलदपानू[14] कहियो। ओ नाजर आवै छै। ईणनु मारो। पण पातसाह न जाणै तिका तरह विचारो। तरै स्याह-जादारो हुकम माथै धारियो। नै धीर जमीदार हुतो तिणरो नाव[15]

---

१. वसत – वस्तु, चीज।

२ दोढीमै – ड्योढीमें, द्वारमें। महल अथवा घरके मुख्य प्रवेश द्वारको ड्योढी कहा जाता है। क्योंकि इनमें मुड कर भीतर जाते हैं, सीधे नहीं।

३ छानी – छिप कर, गोपनीय।

४ दोढी प्र[पर] घणो तकरार करै – ड्योढ़ी पर बहुत तकरार करता है।

५. न पटावै – नहीं निभती।

६ जुवाव साल – जवाव-सवाल, प्रश्नोत्तर।

७ मनै कीधो – मना किया।

८. मरजीदानी – कृपापात्रता।

९. तरा – तब।

१० उकीलानै – वकीलोको।

११ तगीर करायो – बुलाया।

१२. वाहीज षिजमत – वही खिदमत, वही सेवा।

१३ माथौ धूण्यौ – सिर धुना।

१४ सिरविलदपानु – शेर बुलदखाको। यह ओरंगजेबके शाहजादे मुअज्जमके द्वितीय पुत्र अजीमुश्शानका एक सेवक था।

१५ नाव – नाम।

ले'उण नाजरनू राहमें हीज मारियो। पण वो तो पातसाह अवरंगजेव। जिणसूं छिपै नहीं किणहीरा मनरो फरेब। किणहीरा मनमें जिकोई काम आवै जिको औ अवलिया थकौ पहली हो पाय जावै। अर हलकारा[1] घडी घडीरी खबर हजूर गुजरावै[2]। तिकासूं किण भात छिपै आ वात। हलकारा, वाकानवीस, कुफियानवीस, डाक चौक्या[3] अरज लिखै दिन रात। सो पातसाहसु छिपी अरज पहोती[4]। सिरबिलदपासूं रीस ठाणी[5]। अर कैद कर किलै चढावणरी मन माहि आणी। पण अजीमसाह आ मरजी पिछाण सोच कीधो अप्रमाण[6]। स्याहजादो ईणनूं किणरै सरणै म्हेलै[7]। अवरंगजेबरी क्रोधानळ कुण सीस झेलै। ईण भात विचार करनै कहियो। पातसाहरो पूनी आगै भी म्होवतपा देवगढ हीज सरणै रहियो। दूजा राजा राणा राव सो तो पातसाहासूं कोई न रोपै पाव[8]। आ वात स्याहजादारै मन भाई। तद देवगढनै सारी हकीकत लिख चलाई। तिको देवगढरो धर किसो हेक ?

दोहा—सकज दिली चितोडसूं, आडो सदा अभंग[9]।
रिण गहलो धर रावता[10], जद तद मडै जंग[11]॥

वात

सो देवगढनूं हकीकत लीपी। सरबुलदनै सरणै रापीजै। अर

---

१ हलकारा—हरकारा खबरनवीस।
२ गुजराव—विदित करें।
३ वाकानवीस डाक चौक्या—मुगलकालमें समाचार वाकयानवीस खुफियानवीस (गुप्तचर) और डाक चोकियों द्वारा प्राप्त किये जाते थ।
४ पहोती—पहुचो।
५ ठाणी—ठानी निश्चित की। ठाणी, ठाण थाण थानक आदि शब्दोंका विकास संस्कृत शब्द स्थान' से हुआ है।
६ सोच अप्रमाण—असीम चिन्ता की।
७ किणरै म्हेल—किसको शरणमें रक्खे।
८ पातसाहासूं रोपै पाव—बादशाहके विरोधमें कोई खडे नहीं होते।
९ सकज अभंग—सदा ही अपने कामके लिये दिल्ली और चित्तौडका विरोध करने वाला।
१० रिण रावता—युद्धके लिये उन्मत्त रावतोका घर (प्रतापगढ)।
११ जद जंग—जब तब, बार-बार युद्ध करता है।

मोसू ईतरो आसान दाषीजै[1] ।

आ हकीकत देवगढ आई । तरा कितराहेक तो विचार सोच कीधो । अर म्होकमसिंघ सुणनै पहरिया[2] वैठो थो सो सरपाव[3] अर घोडो घणो[4] धन पवरदारनू दीधो । सो आं तो म्होकमसिंघ उधारा आंटांरो लेणहार[5] । सरणै आयांरो साधार ।

दोहा—मंडै रिणथट मेलवै[6], कांटा काढणहार[7] ।
कल सिर उपरा टांकमौ[8], आंटा लेय उधार[9] ॥ १
राव राजा सरणै रषै, महि असहां घड़ मोड़[10] ।
अभंग झिलै जग उपरां[11], अईवो कमां अरोड़[12] ॥ २

वात

सो म्होकमसिंघ जाय नै उणहीज वेळा[13] रावत प्रतापसिंघनु कहियो ।

श्री दीवाण[14] हू घणां दिनासू मनमै वाछतो[15] थो तिको मनरो मनोरथ हमै[16] लहिये । मन मांहि आधप[17] थी सो अवरंगजेवसू हर

१. मोसू·· दापीजै – मुझ पर इतना अहसान प्रकट कीजिये ।
२ पहरिया – पहिने हुए ।
३ सरपाव – शिरोपाव, वस्त्राभूषण । 'सरपाव' की भेंट आदरसूचक मानी जाती है ।
४ घणो – बहुत ।
५ उधारा आटारो लेणहार – शत्रुताका बदला लेने वाला ।
६. मडै · मेलवै – युद्ध आयोजित कर मेल कराता है ।
७ काटा काढणहार – कांटे निकालने वाला अर्थात् खटकने वाली शत्रुताको नष्ट करने वाला ।
८ कळ···टाकमौ – सिर पर युद्धको धारण किये रहने वाला ।
९. आटा· ·उधार – उधार शत्रुता लेने वाला ।
१० महि···मोड – संसारमें शत्रुओंकी सेनाको पराजित करने वाला ।
११ अभग · उपरा – धरती पर अखण्ड रूपमें सुशोभित होता है ।
१२ अईवो·· अरोड – महोकमसिंह ऐसा वीर है ।
१३. उणहीज वेळा – उसी समय ।
१४. श्रीदीवाण – हे शिशोदिया रावत प्रतापसिंह,।
१५ वाछतो – वाञ्छना करता, इच्छा करता ।
१६ हमै – अब ।
१७. आधप – प्रबल इच्छा ।

भात चकमाली कर अडा लडा[1] तो कै तो सुरगनु पडा[1] कै पड विहड होय पतमै पडा[3]। हर रजपूतीरा जवाहरानू रूपकामै जडा[4]। तिका परमेसुर अणचीती[5] थकी कीवी। मन माहे चाहै छा जिका ही आज आण वधाई दीधी। अवै मरवुलदपानु हू जायनै त्याउ। उणनै सरणै रापीज। अरु मौनै हरोल कीज[6] नै अवरगजेवमू लडाई अर आटारी वात दापीजै[7]। जिण वेळारो म्होकमसिंघरो तेज अरु उछाह[8] ईसडो दरसावै तिणरा कवेसुर वापाण करै[9] तो ही उछाह अरु प्राकमरो[10] पार न पावै।

कवित–कथ साभल[11] ईम[12] कमो, विहद उछाह वधारे[13]।
वरण अरुण बिलकुले[14], सूरपण सरण सधारे[15]॥
वण नव जोवन बनौं[16], चौंप बीबाह करण चित[17]।
किना जीत सग्राम बले, पल भाज लीध पित[18]॥

---

१ चवमाली लडा – छडछाड कर भिडें और लड़ें।
२ पडा – जावें चलें।
३ पड पडा – टुकड-टुकड हो कर रण-क्षत्रमें पड़ें।
४ हर जडा – और राजपूती शूरवीरता रूपी रत्नोंको काव्य रूपी आभूषणामें सुशोभित करें।
५ अणचीत – बिना सोची हुई कल्पनातीत।
६ मौन कीज – मुझे युद्धके अग्रभागमें रखिये।
७ दापीज – कहिये।
८ उछाह – उत्साह।
९ कवेसुर कर – कवीश्वर बखान करें।
१० प्राकमरो – पराक्रमका।
११ साभळ – सुन कर।
१२ ईम – ऐसे।
१३ विहद वधारे – बहुत उत्साह बढाता है।
१४ वरण बिलकुले – लाल वर्ण, ददीप्यमान होता।
१५ सूरपण सधार – शरणमें आए हुएकी रक्षा करे।
१६ वण वनौ – नवयौवनसे युक्त दूल्हा बन कर।
१७ चौंप चित – चित्तमें विवाहकी आकांक्षा धारण कर।
१८ किना पित – अथवा युद्धमें विजयी बन कर और अपने बलसे शत्रुओंको नष्ट कर धरतीको लता है।

उगियो बदन वारह अरक[1], बीर रूप सोभा वरण[2] ।
देषियां हीज आवै वणे[3], तिण वेलां हरियंद तण[4] ॥ १
अग रोम ऊल्हसै[5] तेज, चप मुष रातवर[6] ।
मूंछ भुहारां मिल[7], पांव नह लगै धरा पर[8] ॥
भुजा कध उभार, उवर उछाह न मावै[9] ।
अधर हास वोपवै[10], छोह छक[11] अति दरसावै ॥
उफणै उमग गहमह[12] अनत, बीर रूप सोभा वरण[13] ।
बे[दे]षियां हीज आवै वणे[14], तिण वेला हरियंद तण ॥ २
पताहूं त पाधरै, अरज कोधी तिण ओसर[15] ।
चित सदा चाहतो, मिल्यौ तिसड़ो हीज मोसर[16] ॥
अवरंगसूं करि आंट[17], अड़ण पागां दाषीजै[18] ।

---

१. उगियो·· अरक – बारह सूर्योके तेजसे समता वाला उसके मुंहका तेज उदित हुआ ।
२ ग घ प्रतियोमे 'बीर साद वोले वयण' पाठ है ।
३. देषिया· वणे – देखते ही बनता है ।
ग. घ. प्रतियोमें 'इळ वीच ऋीत राषण अमर' पाठ है ।
४ हरियद तण – हरीन्द्र तनय–हरिसिंहके पुत्र महोकमसिंहका ।
ग. घ प्रतियोमे यह पाठ है–'गमर सीस लागौ गयण ।'
५ ऊल्हसै – उल्लसित होता, सुशोभित होता ।
६ चप रातवर – लाल नेत्र और मुह ।
७ मूछ·· मिळै – मूछें भोहोसे मिलती हैं ।
८. पाव· पर – उत्साहमे पैर पृथ्वी पर नहीं टिकते हैं ।
९ उवर · मावै – उरमे अर्थात् हृदयमें उत्साह नहीं समाता ।
१०. अधर · वोपवै – ओठो पर हास्य सुशोभित होता है ।
ग घ. प्रतियोमे 'वोपवेके' स्थान पर 'ओपवे' पाठ है ।
११ छोह छक – पूर्ण उत्साह ।
१२. उफणै गहमह – समूहमें उत्साह उफनता दिखाई देता है ।
१३ अनत वरण – अद्वितीय वीरता, रूप और वर्णकी शोभा ।
१४ ग. और घ. प्रतियोमें 'आवै वणे' के स्थान पर 'वण आवही' पाठ है ।
१५. पताहू त·· ओसर – उस अवसर पर सीधा प्रतापसिंहसे निवेदन किया ।
१६. तिमडो हीज मोसर – वैसा ही अवसर ।
१७ आट – वैर ।
१८ अडण पागा दापीजै – तलवारोसे लड़ना देखिये ।
ग घ प्रतियोमे 'दाखीजै' के स्थान पर 'आषीजै' पाठ है ।

बिलद जिसो बरयाम[1], राज सरणँ रापीजैं[2] ॥
ससार की न रहसी सिथर[3], सत्रा दहण रिण साररी[4] ।
जावसी नहीं जाता जुगा, अै बाता ईण वाररी[5] ॥ ३

वात[6]

सौ म्होकामसिंघ इसी मोटी वातानू वाय[7] मारै। नित वारणा आहीज वारै। कलिमैं[8] वात उवारै। जिण तिण वेढमै[9] ईणरी हीज पहल होय। इणरी जा जळ न आवै कोय।

एक दिनरै समे जोग रावत प्रतापसिंघ कनै[10] एक पडित पुराणीक[11] आयो जिकण वडा वडा ग्रथारो समुद्रको सो[12] पार दरसायो। तिणसू रावत धरम सास्त्र पुराण विद्या पडिताईकी चरचा कराई।

---

१ बिलद जिसो बरयाम – शेरबुलदरा जसे धीरको।
ग प्रतिमे धीरत घर उर धीच' पाठ है।
२ ग प्रतिमें 'रसा कीरत रापोज' पाठ है।
३ ससार सिथर – ससारमें कुछ भी स्थिर नहीं रहेगा।
की न' के स्थान पर ग में कीत' और घ में माफ' पाठ है।
४ सत्रा साररी – युद्धमें तलवार चलाने और शत्रुओको मारनेकी।
ग में रिण सार' के स्थान पर उरसाल' पाठ है और घ में सत्रा साररी' के स्थान पर अभग सार आचाररी' पाठ है।
५ ईण वाररी – इस बारकी, इस समयकी।
६ ग घ प्रतियोंमें वातसे पूर्व निम्नलिखित सोरठा दूहा हैं—

कवियां दाळद काय लाखां लाख पसाव दे।
उ रावत परताप हद वाता हरियदलण ॥ १
के केवी सिर काप, देवी हूता भय दिया।
ऊ रावत परताप सापजादां सरण रख ॥ २
जग रावण जम थास जु गम पता मोहकम सिंघ।
ईहणां पूरण आस हद भोपा हरियदलणा ॥ ३

७ वाय – बान प्रवृत्ति। वायरे स्थान पर बाथ" (बाहु) पाठ अधिक उपयुक्त है।
८ कलिम – कलहमें युद्धमें।
९ वेढमे – युद्धमे।
१० कन – पास समीप।
११ पुराणीक – पौराणिक, पुराणोंका जानकार।
१२ समुद्रको सो – समुद्रकी भांति गहन।

जिका सारी ही सभाकै अर पडिताकै दाय आई[1] । कितराहेक दिना पडतनु राप घणौ धन दांन दिपणा[2] दे विदा कीधौ । पडित भी राजी होय आसीरवाद[3] दीधो । मन माहे घणो सिहायो[4] । विदा होय आपरा घरानु धायो ।

जठे येक पीपलोद गाव मैवासा माहे[5] । जठै रहै डोडिया[6] रजपूत । जिकारै गढ नै मैवासो भी मजवूत । जिके मैवासी हुवा थका दोड धाडा[7] करै । जिण किणहीसूं न डरै । टणकापणामै[8] तो भला रजपूत । पण मैवासारै सबव करै चोरी गोहरीरो पण सूत[9] । तिके छत्री धरम[10] तो न विचारियो । उण पडतनु मारियो । घणो धन देण लेणरो लोभ धारियो ।

आ बात रावत प्रतापसिंघ कनै आई । सो सारा हीनू न सुहाई । तद रावत वानू कहायो थे ओ कासू[11] कर्म कीयो । ईसा पडतानु मार धन लीयो । आ रजपूतीकी रीत नही जको या लोगानै लूट अर मारै । यानै तो दान दिपणा देवो ही विचारै । थे मैवासी छो तो ओर जायगां दोडा-धाड़ो करो । म्हारै कनै आवै जावै जिकणसू तो डरो । याको[12] धन तो परो दिरावो[13] । अरु ब्रह्महित्याको प्राछत करावो[14] । नही तो पछै ही पिछतावस्यौ[15] । निदान मारचा जावस्यौ[16] ।

---

१. दाय आई – समझमे आई, स्वीकार की गई ।
२ दिषणा – दक्षिणा ।
३ आसीरवाद – आशीर्वाद ।
४ सिहायो – सराहना की ।
५. मैवासा माहे – जगलमे, पहाडोमे ।
६. डोडिया – राजपूतोकी एक शाखा ।
७ धाडा – डाका, चोरी ।
८. टणकापणामे – सामर्थ्यमें ।
९ चोरी · सूत – चोरी-डाकेका कार्य भी ।
१० छत्री धरम –क्षत्रिय-धर्म ।
१२ कासू – कैसा ।
१२. याको – इनका ।
१३ परो दिरावो – दे दो ।
१४ अरु करावो – और ब्रह्म-हत्याका प्रायश्चित कराओ ।
१५ पिछतावस्यौ – पछताओगे ।
१६ निदान 'जावस्यौ – अन्तमें मारे जाओगे ।

जिका तो कयो[1] न कीनौ। हर करडो ही उतर पाछो दीनो[2]। कह्यो रावतजी म्हारै उपरै आयनै कासू पाटसी[3]। म्हारी राड छै कालरी झाट सी[4]। राणौजी अरु सूबो[5] अै भी म्हासु टाळो दे छै[6]। वारी[7] धरतीमै म्हे चाहा सो करा छा पण म्हारो नाव[8] न ले छै। रावतजीनु आवणो छै तो वेगा[9] कीजै असवारी। भली भात मनवार करस्या[10]। अठै तो सदाई रहै छै जिण तिणसू गोठरी तयारी[11]। इण भात उतर दे मेलियो[12]। रावतजीरो हुकम माथै न झेलियो[13]।

मो सुण रावतनु अपरती रीस[14] चढी। तिका रावतनु तो आगै ही रीस चढी थी। ईण आगै कासू मैंवासो नै कासू गढ गढी थी। पण मोटारी[15] आ ही रीत। चालै मास्त्र हीकी रीत। जिणनु मारणौ होय तिणनु[16] एक वार तो कहावै। समझ जाय तो भलाई नही तो सज्या[17] तो पावै ही पावै। ईण रीतरे वासते कहायो। न्ही तो उणनु तो उणहीज वेळा रोस आयो। आ वात सुणता ही डेरा

---

१ कयो – कहा हुआ।
२ हर ... दीनो – और फिर कठोर उत्तर ही दिया।
३ पाटसी – कमायेंगे प्राप्त करेंगे।
४ म्हारी राड ... झाट सी – हमारी लड़ाई कालके झटकेकी भाँति है।
५ राणौजी अर सूबो – उदयपुरके महाराणा और मुगल-साम्राज्यके सूबेदार।
६ टाळो दे छ – टलते हैं, बचते हैं।
७ वारी – उनकी।
८ नांव – नाम।
९ वेगा – तुरन्त जल्दी।
१० मनवार करस्यां – मनुहार करेंगे, युद्ध करेंगे।
११ गोठरी तयारी – गोष्ठिकी तयारी। सम्मिलित आनन्द भोजको राजस्थानमें गोठ कहा जाता है। यहां युद्धसे तात्पर्य है।
१२ मेलियो – भेजा।
१३ न झेलियो – नहीं रखा, नहीं स्वीकार किया।
१४ ऊपरती रीस – तेज क्रोध।
१५ मोटारी – बड़ोंकी।
१६ तिणनु – उसको।
१७ सज्या – सजा दंड।

वारै कीधा[1]। अर गढ तोडवाका[2] सारा ही मामांन साथ लीधा। वडी वडी तोपा घणा जूटां स्त्री [थी] पीची हालै[3]। जिकारै पाछै मस्त हाथी टला[4] देणनू चालै। वाणारा ऊट ठाठड्यांका थाट[5]। जिकांमै वडी छोटी केई घाट[6]। वडा ऊंचा रिण गढ। तिकांमू गढरै लगायनै घणा छछोहा[7] रजपूत होय जिके तुरत ही जाय चढ। नीसरणिया[8] गाडा ऊटां उपरा धराई। दारु[9] सीसा[10] लोह सिणरी[11] गाडियां ऊपरतै भार[12] भराई। वेलदार अर कुहाड़ी वरदार[13] जिकारी जमात दस हजार। जिके वनकटी[14] करै अर मोरचा वणावै। सुरगां पोदै अरु दमदमा[15] चुणावै। रुईरी वरकियांरा[16] गाडा। जिके पढक भरवानू आवै आडा[17]। लकड़ियांरा तिवाव[18]। तिकांसू भुरजा[19] षोदवारा दाव। छकडा भरिया जालियां[20] फेर देणी कितराहेक

१ डेग वारै कीधा – तम्बुओंको वाहर निकाला।

२. तोडवाका – तोडनेके।

३. घणा…हालै – वहुत समूहोंमे खींचने पर चिने।

४ टला – धक्का।

५. वाणाका…थाट – वाणोंसे लदे हुए ऊंट और ठाठडियोंके समूह। ठाठडियोंमें तीर भरे जाते थे।

६. केई घाट – कई प्रकारकी।

७. छछोहा – तेज, चचल।

८ नीसरणिया – सीढियां।

९. दारु – वारूद (दारूका अर्थ मदिरा भी होता है किन्तु यहा वारूदसे तात्पर्य है)।

१०. सीसा – शीशे अर्थात् जस्तसे वनी गोलियोंसे तात्पर्य है।

११ सिणरी – सनकी, जूटकी। तोपो और वन्दूकोको भरने आदिके लिये इसकी आवश्यकता होती है।

१२. ऊपरतै भार – निकलते हुए वोझेमें, वहुत।

१३. वेलदार वरदार – मजदूर और भारवाही आदि।

१४ वनकटी करे – जगलोकी कटाई आदि।

१५. दमदमा – एक प्रकारकी तोपें।

१६ वरकियारा – रुईके जमे हुए परत।

१७ आवै आडा – सहायक वनें।

१८ तिवाव – तिपाये।

१९ भुरजा – वुर्जे।

२० जालिया – सामान लादने, वांधने आदिके लिए जालियोकी (वकरीके वालोकी अथवा खीपकी वुनी पट्टी) आवश्यकता होती है।

वणसटियारा ढोल[1] । महतावा छीकादार अरु चोरमार[2] । जिका पर आदमी तईनात पयादा अर असवार[3] । गोफणियारी[4] देणी च्यार तरफासू भाट भोट[5] । जिकारै वीच वोच फिरगी हुकारी[6] पण चोट । सुरगा उडावणरो मुसालो[7] । तिका लीन्हा हाजर फिरगी रसालो[8] । जिका फिरगी हीज गोलदाज । ज्या आगै गढ तोडवारा केई ईलाज । गढ तोटवारा जूना न नवा उपाव[9] । तिकारी तयारी करै रावत लागो थको चाव । घणा समर-पडित तिके नवा नवा अपरा[10] करै । त्यानू देपिया नै सुणया बडा बडा गढपती थरहरै । भात भातरा ईलाज साजरी नवी नवी उपगा[12] उठावै । जके उणहीज वेळा नवी नवी रीझा मोजा पावै । जको म्होकमसिंघ सारो सरंजाम आणनै दीठो[10] । सो ओ तो सदाई रोपातो नै निरकुसतो दीठो[13] । तिका देपनै मन माहि इण भात आणी । रावतजी तो ईतरो[14] घाट कीधो पण म्हे तो देपता ही गढ उड पडस्या । जिण भात उड पडै वेदाणी[15] । ओ तो थाट सारो पड्यौ हीज रहसी । उठे तो कूद पडिया पछै कोरडी तरवार हीज वहसी[16] ।

---

१ वणसटियारा ढोल – वणके (कपासके पौधोंके) डठलोंके भार । स० वणयष्टि ।
२ महतावा चोरमार – महतावें जिनको लटका कर प्रकाशित किया जाता और चोरोंको मारा जाता ।
३ पयादा अर असवार – पदल और घुडसवार ।
४ गोफणियारी – गोफनोंकी पत्थर फेंकनेका एक साधन ।
५ भाट भोट – बहुत लगातार, तडाभडी ।
६ फिरगी हुकारी – हुक्केकी आकृतिक विलायती शस्त्रकी ।
७ मुसाला – मसाला बारूद आदि ।
८ फिरगी रसालो – विलायती अश्वारोही सैनिक टुकडी ।
९ गढ उपाव – गढ़ तोडनके प्राचीन और नये उपाय । तब तक कई यूरोपीय शस्त्र और अन्य युद्धके साधन भी भारतमे प्रचलित हो गये थे ।
१० अपरा – अम्बर लिखित योजनासे अथवा अखाडा या व्यूह रचनासे तात्पय है ।
११ उपगा – उपाङ्ग युद्ध-सज्जाके विभिन्न अङ्गोंसे तात्पय है ।
१२ सराजाम आणन दीठो – सरजाम अर्थात सामान और प्रबन्ध आकर देखा ।
१३ रोपातो दीठो – रोपायत क्रोधी, घडबडाने वाला और हठी ।
१४ ईतरो – इतना ।
१५ वेदाणी – बाज पक्षी ।
१६ कोरडी वहसी – केवल तेज तलवार ही चलेगी ।

इण भांत म्होकमसिंघ देष हसनै चल्यो गयो। मूढासू[1] तो काई वात न कही। पण मरजीदान[2] था जिकां मनरी लही। म्होकमसिंघ गढ देषता ही उड पडसी। अर ईणरै माथै घणा असामां सीरोहीयांरो फूलधारारो वाढ झडसी[3]। म्होकमसिंघ डेरै जाय जांगड्या अर ढाढी[4] गवाया। जको मरजीदान जिका केयक षमायची अर केयक सीधूरा दूहा सुणाया[5]। तिण वेळा माथ्यारै छक[6] आवै छै। तोणानु दूणा त्यांणा अमल करावै छै[7] अर म्होकमसिंघरा मनकी उमग न मावै छै। उण वेळांरो रूप अर चोप देष्या ही बणि आवै छै। ज्यौ छकियो छैल पर गैलरा साथियानु चौप चाव चितावै छै[8]। ईण भांत हसतो हसावतो उमग उफणावतो थको निपट ताता झांप षाता टापा उपर टापा देता काछ्या पर चढ्या[9]। अरु फोजसू वढ्या जिका घोडा असवारारो रग ईसो नजर आवै। आगै गढ तो किनेक वात पण दावागीरनै तो उरसमै जाय झपट ल्यावै[10]। तिको उरसरा खेलणहार। गढारा भेळणहार[11]। अणपूछिया ही दीसै[12]। राडरा म्होरी अैहीज होय विसवा वीसै[13]। तिको औ नो सदाई कवांरी घड़ारो[14] भेळणहार। रिणरो रिझवार। चवरी उपर वींद जाय जिण भांत

१ मूढासू – मूंहसे।
२ मरजीदान – कृपा-पात्र।
३ घणो ··· झडसी – अनेक तलवारोंका असीम प्रहार होगा। सीरोही और फूलधारा तलवारोके भेद हैं।
४ जागड्या अर ढाढी – जागड और ढाढी, राजस्थानकी विशेष गायक जातिया हैं।
५ केयक ··· सुणाया – कई षमायची और कई सिधू रागके दोहे सुनाये।
६ छक – तृप्ति।
७ अमल करावै छै – अफीम खिलाते हैं।
८. पर गैलरा ··· चितावै छै – पीछे रहने वाले अर्थात् निरुत्साही साथियोमें उत्साह और चाव प्रकट करते हैं।
९ निपट ताता ··· चढ्या – निपट तेज, झाप खाने वाले और टापोंका प्रहार करने वाले कच्छी घोडो पर सवार हुए।
१० पण ··· झपट ल्यावै – किन्तु विरोधीको तो आकाशमें जाकर भी झपट लावें।
११ भेळणहार – नष्ट करने वाले।
१२. दीसै – दिखाई दें।
१३ राडरा ··· वीसै – मानो युद्धमें अग्रणी वास्तवमें यही हो।
१४ कवारी घडारो – नहीं लडी हुई, अछूती सेनाको।

विहसतो विळकुळतो अळवळियो भवर[1] हुवो थको तापडो[2] कवरारा साथनू लेन तुरी तोरिया[3]। जका पैलारा घणा थाटमै ओघाट घाट जिकण उपर ओरिया[4]। जठै पडणहार पडिया। अर सिरोहियारा सार झडिया। चढिया घोडा गाव भेळ दीधो[5]। नीसाण[6] आपरो पडो कीधो।

पाछामू तोपपानो नै हरोळरो साथ[7] आयो, तिका गाव तो भेळयो हीज पायो। रावत प्रतापसिंघ वडा सामान नै वडी फौजारा घसार[8] लीधा थका गढ आण लागा। अर विसररा त्रिवागल ठोड ठोड वागा[9]।

दोहा–पगा उलघा कर पिवै[10], चीत असगा चाय[11]।
वागा सीधू वीर डक[12], लग्गा रावत आय॥ १
चडिया छोह[13] बहादुरा, जडिया जरद[14] जवान।
रूडिया त्रबक राडरा[15], अडिया भुज असमान[16]॥ २

---

१ अळवळियो भवर – अलबेला युधक।

२ तापडो – पुष्ट तेज, तगडा।

३ तुरी तोरिया – घोडे चलाये।

४ पलारा आरिया –विरोधियोंकी भारी सेनामें जो विशेष वीर थे उन पर आक्रमण किया।

५ गाव भेळ दीधो – गाव नष्ट कर दिया।

६ नीसाण – निशान, चिन्ह ध्वजा।

७ हरोळरो साथ – हरावल अर्थात सेनाके अग्रभागका साथ।

८ घसार – समूह।

९ विसररां वागा – युद्धके नगारे स्थान-स्थान पर बजे।

१० पगा पिव – अपार वीरतासे तलवारें चमकाते हैं।

११ चीत चाय – चित्तमें शत्रुओंसे लडनेकी चाहना करते हैं।

१२ वागा डक – सिंधूराग होने पर और युद्धके नगारे बजने पर।

१३ छोह – क्षोभ क्रोध।

१४ जरद – जद रक्त वर्णके तमतमाते हुए रंगके।

१५ रूडिया त्रबक राडरा – युद्धके नगारे बजे।

१६ अडिया भुज असमान – भुजाए आसमानके (आकाशके) जा लगीं।

हर गीतड़ा[1] गवावणा ।

दोहा–उतर घोड़ा आविया, उछाछला अरीठ[2] ।
अगा चाक चहोड़िया[3], धिपती तोडा ढीठ[4] ॥ १

बात

ईण भात वात कहता तो वार लागै। रजक जागी[5] । कना तोप-पानारी ईक पलीती दागी[6] । हर गोळा छूटी । अर अै पण तोपारा आगोळा । किना भूपा नाहरारा सा टोला[7] । दागिया बाण किना आकासरा सिचाणरी नाई तूटा[8] । जिण समै बीरहाक किलकार वागी[9] अर महा प्रळै काळरी सी घडी जागी । जठै माहिलो वदूका छूटै छै । जको येक येक गाळी दस दस आदम्यामैं फूटै छै । लोथ पर लोथ पडै छै । अर मोतियाकी सी माळा झडै छै । जका लोथियारा पगथिया[10] कर कर घणा हेतू भाई भतीजा वाप बेटा उपरा पग धरता अर घणो हरष[11] करता कोटमैं पडणनु धावै छै । त्या उपरा अपछरारा विमाण घणा साघणा अडबडाव छै[12] । यारो छछोहापण[13] इसो सो अपछरारा

---

१ गीतड़ा – गीत राजस्थानी भाषामें काव्य सम्बधी छन्द विशेष जिसके कई रूप होते हैं । कहावत है कि नाम गीतड़ांस् होव ।'

२ उछाछला अरीठ – चञ्चल शूरवीर ।

३ अगा चाक चहोड़िया – अगोंमें वीरता धारण कर ।

४ धिपती तोडा ढीठ – वीरता और दृढता प्रकट होती थी (?)

५ रजक जागी – बाती जलाई गई (?)

६ ईक पलीती दागी – एक पलीता दागा गया, पलीता=तोप चलानेके लिये जलाया जाने वाला कपडका टुकडा ।

७ नाहरांरा सा टोला – शेरोंके से झुण्ड ।

८ सिचाणरी नाई तूटा – बाजकी तरह टूट । सिचाण शब्द से सचानका अपभ्रंश रूप है ।

९ वागी – बजी ई ।

१० पगथिया – सीढियां सोपान ।

११ घणा हरष – बहुत प्रसन्नता ।

१२ अपछरारा विमाण अडबडाव है – अप्सराओंके विमान बहुत समीप आवाज करते हुए उडते हैं ।

१३ छछोहापण – तेजी ।

विमांण ही पाछै रहै छै। अर यारी कटारियां हंस हालिया पछै[1] कोटनू जाय जाय वहै छै। तिको अपछरा माळा पकडिया चक्रत चित[2] होय रही छै। मन माहि आधारै छै[3]। म्हे तो ईणनु अठै वरियो[4] पण ईणरी कटारी तो कोटनु जाय जाय वहै छै। ईण भात पड़ता लड़ता लडपडता नीसरणीया लगायनै चढै छै। कितराहेक पाछै छै तिके आगै होयनं चढै छै। तिके आगै चढचा तिकांरां कांधा पीठ उपरा पग दे दे नै आगानु परहरै छै[5]। तठै यारो चाव नै धाव देप जमराण[6] पिण डरै छे। मन माहि ओ उसवास[7] धरै छै। कोटकासू मलफनै[8] मो उपर वाहै[9] आय। अै तो आदमी नही कोई महा प्रलयकाळरी लाय[10]। अै तो ईसडा ई वलाय। जिकासू जम ही टाळौ दे जाय[11]।

ईण भांत नीसरणिया चढै छै। अर चढता थका गोळिआं लागै छै सो उलट उलट पडै छै।

दोहा–पिंड[12] गोली लगीया पड़ै, भड़ आछा ऊछाह[13]।
जांणक[14] नट उलटिया, पट हुता पछाह[15] ॥ १

---

१ हस हालिया पछै – प्राण निकलनेके पश्चात। हंस=प्राणको भी कहा जाता है।
२. चक्रत चित – चकित चित्त, भ्रमित चित्त (वीरोके युद्ध-कौशलसे)।
३. आधारै छै – निश्चय करती है। धारणा करती हैं।
४ वरियो – वरण किया।
५. परहरै छै – बढते हैं, चलते हैं।
६. जमराण – यमराज।
७. उसवास – डर, चिन्ता, उच्छ्वास।
८. मलफनै – कूद कर।
९ वाहै – चलावे।
१०. लाय – लपट।
११ टाळौ दे जाय – बच कर जावे।
१२ पिंड – शरीर।
१३ भड आछा अछाह – श्रेष्ठ और उत्साही वीर।
१४. जाणक – जानो, मानो।
१५ पछाह –पीछे।

वात

तिको बारनानू[1] तो वटा तक दीजै दाद[2] । पण माहिलारी[3] भी रजपूती हदसू ज्याद । जिके इण गजबनु चाहनै पाहुणा करै[4] । जिके पिण इसड़ा ईज होय जिको पाणीरो लोटचो रूडाहीज भरै । जिको बारला तो निपट अमामी अनाघात अदभुत अछूती रजपूती करै छै । पण माहिला तो इणरो भै[5] तिल मात्र भी न धरै छै । घणो गुमर[6] नै बोभ लीधा थका बाका वचन वरवरै छै[7] । अर घणी मनवारिय्या[8] करै छै ।

तठै गोळिआरी पड़ै छै ताड़[9] । तिको गडारी मणक[10] किना घणा मेहरी बोछाड़ । इण भात घणी साघणी मार दे छै। अर दारूरा प्याला ल छै[11] । घणा वउ[12] मवाय रम विनासमैं ठाउ हुवा थका[13] आलधा[14] भगर । एकसू एक चढता डोडियारा कबर[15] । घणा नेठाव[16] अर घणा चावसू वादो वाद[17] गोळिया चलाव छै । चोटरी रीभ पर गोठरी होड[18] लगाय छै । माहारिया कर कर टूणा दोढा

१ बारनानू – बाहर वालोंको गढ़ पर आक्रमण करने वालोंको ।
२ दाद – प्रशंसा ।
३ माहिलारी – भीतर वालोंकी, गढ़वासियोंकी ।
४ चाहने पाहुणा करै – चाह कर महमान बनाते हैं अर्थात् जानबूझ कर लड़ते हैं ।
५ भै – भय ।
६ गुमर – गर्व ।
७ वरवरै छै – बोलते हैं ।
८ मनवारिय्या – मनहारें ।
९ ताड़ – तड़ातड़ बौछार ।
१० गडारी मणक – ओलोंकी वर्षा ।
११ प्याला ल छै – मदिराके प्याले पाते हैं ।
१२ वउ – दूसरी बार खींची हुई तेज मदिरा ।
१३ ठाउ हुवा थका – तृप्त हुए मस्त हुए ।
१४ आलुधा – आलुब्ध लोभी ।
१५ डोडियारा कबर – डोडिया राजपूतोंके पुत्र ।
१६ नेठाव – हठ ।
१७ वादो वाद – बड़ा बड़ी प्रतिस्पर्धा ।
१८ गोठरी होड – गोठकी अर्थात प्रीतिभोज देनेकी बराबरीका वचन ।

अमल करावै छै। अर अमामा[1] तीरदाजानै चोप चढावणरी वातां वतळावै छै जिणांरी चोट अमांमी लागै छै। तिणानुं हाथसू प्याला दीजै छै अर रीझा कीजै छै। घणा मीह[2] जामा अतरसै तिलवाय कीधा[3] तिकारा वध छाती उपरासुं पोल दीधा छै। जिके पुल रया छै। घणां मोतियारी माळा नै जवाहरारा जाळ उर उपर रुळ रह्या छै[4]। माहो माह गुलाव छिड़कीजै छै। चनण अरगजा गाता उपर लगाईजे छै। अपछरा वरणनु अर मुरग माहे वधर करणनुं चोप जगाईजे छै[5]। तिको अणपूछिया ही किसडोहेक दीसै। अै तो अपछरा परणे ही विसवा वीसै[6]। कै तो नवल वना आलीजा पनां[7] सेजसू रस भीजिया थका अवारू ही[8] उठ धाया छै। कै चोप रीझ ठाणवानु[9] महल रग माणवानू[10] अवै उठ धाया छै। जरकसी वादळारी पाघां जिकांरा ढीला पेच उपरा लावा पटारा पेच वडा पेचासू वाध राप्या छै। जिकामै उळझिया थका मोतियारी लडारा पेच केया केया न्हापिया छै[11]।

तिके ईण भात वणिया थका छैल नजर आवै छै तिकौ अै सारा ही मगरूररा फैल[12]। वेपरवाह हुवा थका वाह करै छै[13]। जिण भात वाग माहि हदफरी चोट धारै[14] ईण भात ईण वेळामै चोप

---

१. अमामा – तेज, कुशल।
२ घणा मीह – वहुत महीन।
३ तिलवाय कीधा – तर किये।
४ रुळ रह्या छै – विखर रहे हैं।
५. चोप जगाईजै छै – इच्छा प्रकट की जा रही है।
६ विसवा वीसै – पूरी तरहसे, अवश्य ही।
७ आलीजा पना – आली जहांपनाह, आदरसूचक प्रयोग।
८ अवारू ही – अभी ही।
९ ठाणवानु – निश्चयके लिये।
१० महल रग माणवानु – महलमें आनन्दोपभोगके लिये।
११. न्हापिया छै – डाले हैं।
१२. मगरूररा फैल – मगरूरके तुफैल।
१३ वाह करै छै – प्रहार करते हैं।
१४ हदफरी चोट धारै – चादमारीका, गोली चलानेके अभ्यासका प्रहार करते हैं।

धारे छै । हाथां माम बंदूका नवनामी[1] ज्यौ लीधा फिरै छै[2] । जिवा बदूकारै म्होरीयारै[3] फूलारा हार नै मोतियारा तुररा नार बाध दीधा छै । जिके जाणीजै क कंद्रप[4] कोटेक[5] रूप कीया छै । अर आप आपरा नीसाण हाथ लीधा छै । वठै कठै ही पिलवतरी रवामा माहै तीरवारा[6] । तठै खबर रहै न्यारा न्यारा । जिण गायणया पातरिया तवायफारो थाट[7] ।

तिरानू होळीरा दिनामें होळीरा ख्याल[8] गावै छै । तिका पण प्यारा पाव छे । अर गोळियारी नागा थका रजपूत नट कुळट[9] खेलै छै । तिरानू तमासा दिखावै छै । केई केई तायफ[10] लोग न डर छै । वे पण गोलिया वावणरी हाम धरै छ[11] । तिको यासू ईण भात प्यारामें रगमे हम रह्या छै । महा मगरूरीसु बीरमै अर अगमे फम रह्या छै । केई केई मोटियार घणा दारूरा माता[12] । रगमे राता । पटा-छूट[13] हुवा । आपरा महलामें जुवा जुवा[14] । ऐक हाथसू गळबाही न्हाख्या[15] [illegible] हाथसू ही गोळी वाहै छ । माहो माह मोतियारी माळा

---

१ नवनामी – नव प्रकारकी ।
२ लीधा फिर छ – लिए फिरते हैं ।
३ म्होरीयार – [illegible] मालीके ।
४ कंद्रप – कंदर्प कामदेव ।
५ कोटेक – करोड़ों ।
६ वठै कठै ही [illegible] तीरवारा – कहीं पड़ावके निवासमें [illegible] तिवारे है ।
७ गायणया [illegible] थाट – गायिकाओं पातुरियों और तवायफोंका समूह । पातुरियों आदिके लिए विशेष देखिये मारवाड़ मरदमशुमारी रिपोर्ट भाग ३ सन १८९१ ई० ।
८ ख्याल – [illegible] गीतोंका एक प्रकार । ख्याल राजस्थानी लोक-नाटकोंको भी कहा जाता है । विशेष देखिये–लोक कला निबंधावली भाग १ भारतीय लोक कला मण्डल उदयपुर ।
९ नट कुळट – एक प्रकारका [illegible] खेल ।
१० तायफ – तवायफ ।
११ हाम धरै छ – [illegible] कामना [illegible] रखते हैं ।
१२ दारूरा माता – मदिराके नशामें मस्त ।
१३ पटाछूट – बिखरे बालोंवाले ।
१४ जुवा जुवा – अलग अलग ।
१५ गळबाही न्हाख्या – गलेमें हाथ डाल ।

रीझ रीझवार वार न्हापै छै। अरु गोलीरी चोटनु सराहे छै। केई केई सिरदार (गोलीरी चोटनु सराहे छै) गौळी वाहतां आपरी राणिआं ठकुराणिआ हेत-हासीरी[1] वातां करै छै। जौ अपछरा म्हानू वरणरी मन माह धरै छै। सो काई हुवो। अपछरा आसी। थांरी तो हुई रहसी दासी। अर करसी षवासी[2]।

तिको ठकुराणिआ भी हसनै कहै छै। अपछरा म्हारी वरोवर मुरातव[3] क्यौ कर लहै छै। ईण भांत चोंप चाव माहो माह हित हरप वढावै छै। बंदुका अर प्याला एकण साथ भर रह्या छै[4]। केई केई वारला[5] आय कोटरी भीतसू निपट नेडा[6] भिडिया छै। अर कटारीआंसू पोदवानै[7] अडिया छै।

त्यारै उपरै केसर पतंग रंगरी धार पिचकारिआं तीरकसांमै[8] घाली थकी छूटै छै। अर वंदुकांरा भी मारिआ फूटै छै। कांगरां ऊपरांसू गुलाळां अबीरारा थैलांरी घमरोळ पडै छै। अर मतवाळा भी गुड़ै छै।

ईण भांत फांग नै पागरो[9] षेल दोन्यू ही मांच रह्या छै[10]। गेहर[11] पिण नाच रह्या छै। अर कठै ही म्हांभारथ[12] भी वांच रह्या छै[13]। केई केईक सासत्रोक विधांन अवसांण समैयारै उपरै निरकुरा[14]

---

१ हेत हासीरी – प्रेम और हसीकी।

२ पवासी – पासमे रहनेकी सेवा।

३ मुरातव – सम्मान, पद।

४. वदुकां रह्या छै – वन्दूक और प्याले एक साथ भरे जा रहे हैं। इन शब्दोसे मुगल शासनके अन्तिम कालके युद्धोकी पतनोन्मुख स्थिति प्रकट होती है।

५ वारला – वाहरके।

६. निपट नेडा – वहुत निकट।

७ पोदवानै – खोदनेके लिये।

८ तीरकसामै – तरकसोंमे।

९. पागरो – तलवारका।

१०. माच रह्या छै – मच रहे हैं।

११ गेहर – होलीके दिनोमे पुरुषो द्वारा छडिया वजाते हुए नाचा जाने वाला एक वृत्त-नृत्य।

१२. म्हाभारथ – महाभारत, राजस्थानमें महाभारथ नामक एक कथा गीत अर्थात् पवाडा भी प्रचलित है। सभवत यह प्राचीन महाभारतका ही प्रचलित रूप है।

१३. वाच रह्या छै – पढ रहे हैं। स०-वाचन।

१४. निरकुरा – वैरागी, उदासीन।

हुवा थका विष्णु सिव इष्ट अरचा करै छै। अर सामगरी विना लीधा थका तीण चोषरी भी चरचा करै छै। केई केईक तो केसरआ करै रग गहरै छै।

अर किलादार जिका ऊपर किलारो भार। जिका सोनारी कुचिआरी[1] माळा वर कर पहरै छै। म्हानू ईण सहनाणसू[2] लहसी। अर आ तीपरी वात घणा दीन रहसी। कहै छै कवाड पोल जिण वपत तरवारआ वाहा अर काम आवा तिण वपत तरवारियारी चोट वाहता र वहावता ईस्ट सुमरण कर नाम लेणा। अर आघा वधता[3] पावडा देणा। तिको पावडै पावडै अस्वमेधरो फळ पावा। चोप तीपरी वाता काम आया पछ स्पर्ग[4] माहे गवागा। अर मुकत[5] तो जावा ही जावा।

तिण समै कोई कहै छै। रजपूतीरा साधिक[6] नै ईष्टरा अराधिक[7] ठाकुरे पहली कही थकी तो ओर सी लागै। पण कहिया विना चोप चाव भी न जागै। माथो पडिया पछै तो तरवार वहै। अर पडतो माथो राम नाम कहै। वरनै आगनी ही धाव[8] रहै तो रजपूत वदज्यो[9]। काई कहै छै परतै माथै तो कटारी वाहू। अरु पडतो माथो हाथमैं झेल सिवनै चढाउ तो रजपूत वदज्यौ। इण भात चोप चावसू वाता करै छ। आप आपरा ईष्टरी वानौ अलकार धरै छै। तुळसीका मजरारा मोड बणाव छ। ब्रह्मचरज[10] ले छै। दान दे छै अर वेद

---

१ कुचिआंरा – कांचियोंकी।
२ सहनाणसू – निशानसे।
३ आघा वधता – आगे बढ़ते।
४ स्पर्गां – स्वर्गमें।
५ मुकत – मुक्त मोक्ष।
६ साधिक – साधक।
७ अराधिक – आराधक, आराधना करने वाला।
८ आगना ही धाव – आगकी ही दौड़।
९ वदज्यो – कहना।
१० ब्रह्मचरज – ब्रह्मचर्य।

भणावै छै[1] । सो ईण भात तो नेठाव[2] अर चावसू गढ मांहिला लडै छै ।

अर वारला तो निपट पाता पडै छै[3] । झडै छै सो तो झडै छै । अर पड़ै छै तिकौ भी आघोई उळज उळज पडै छै । वारला कितराहेक तो गोळियांरा मारिया मतवाळा हुवा थका घूम रह्या छै । अर कितराहेक नीसरणीया[4] लूव रह्या छै[5] । कितराहेक तो फूट गया छै । अर कितराहेकका हाथ पग तूट गया छै । तिको पण वाळकरी तरह गोडांरै ही वळ ध्यावै छै । कितराहेकांका तिग[6] तूट गया छै । तिके रिगसता थका लफ लफ कोटरै जाय जाय कटारी लगावै छै । केहक सावता[7] पगां आगैं जाय जाय कोटसू लागा छै । तिकानैं चींप जितावै छै । कहै छै देपो ताता पडो[8] । हर कोटमै जाय पडो । म्हे थां पहली घडेक[9] सुरग जावा छा । पण थानू भी लेणनै सतावी हीज[10] आवां छा । वै पण हसनै कहै छै । ठाकुरा सुरग सिधारीजै । सतावी कीजै । म्हारै वास्तै भी सुरगमै नवा नवा पारपरा[11] विमाण आछा आछा तजवीज कीजै । म्हे पण आया । जितरै म्हारा वाटैरा[12] अमृतरा प्याला थे हीज लीजो ।

केहकारैं सुमार लागी छै[13] । जिकामै वोलणरी तो वकाय[14] रही

---

१ भणावै छै – पढाते हैं ।
२. नेठाव – हठ, दृढता ।
३. पाता पडै छै – शीघ्रता करते हैं ।
४. नीसरणीया – सीढियां ।
५ लूव रह्या छै – लटक रहे हैं ।
६. तिग – तग, घोडे पर काठी कसनेका साधन ।
७. सावता – सावित ।
८. ताता पडो – तेजीसे चलो ।
९. घडेक – घडी एक ।
१०. सतावी हीज – जल्दी ही ।
११. पारपरा – परीक्षाके, प्रकारके ।
१२ म्हारा वाटैरा – मेरे हिस्सेके ।
१३. केहकारैं छै – कईके अधिक चोट लगी है ।
१४. वकाय – बोलनेकी शक्ति ।

नही पण मूठा हाथ फेर फेर साथियानु कोटमैं पडणरी मन[1] करै छै। पिंड[2] तो थक्यो पण जीव तो ईणरो भी कोटमैं पडणरी धक धरै छै[3]। कोई सुमार लागा पडतो थको तडछ पावै छै[4]। तिको भी नुळतो थको[5] कोटरी हीज कानी[6] जावै छै।

दोहा–ईल लुट्टै[7] फिर उलट्टै, घाव न घटै धीर।
सिर सट्टै षट्टै सुजस[8], नह मिट्टै वरबीर ॥ १

वात

ईण भात कतराहेक नीमरणिया चढै छै। तिकानू माहिला भालामू माझै[9] छै। जिके दोय दोय तीन तीन आदमी भाला पहर साजणवाळानु जाय जाय आवै छै। उणा माहिलाकी गिरवान[10] पकड पकड ल्यावै छै। तिको कुही कुळगरी सी चाट दिपावै छै। इण भात कटारियारी अमरोळ[11] पडै। लोटपोट हुवा तिको आलात चक्करी सी लीक बधी[12] न जाणजे भेळा[13] छै क जुवा जुवा।

ईण भात आप आपरी रजपूतीरी भात स कोई[14] दिपावै। सो वात कहता तो वार लागै। पण म्होकमसिंघन कठै सुहावै। कह्यो

---

१ मन – सकत।
२ पिंड – शरीर।
३ धक धरै छै – उत्साह धारण करता है।
४ तडछ पावै छै – तडाछ खाता है गिरते हुए चक्कर खाता है।
५ नुळतो थको – झुकता हुआ।
६ कानी – तरफ ओर।
७ ईल लुट्टै – धरती पर लटते है।
८ सिर सुजस – सिरके बदलमें सुयश प्राप्त करते हैं।
९ माझ – सम्हालत।
१० गिरवान – गरेबान गलका कपड़ा।
११ अमरोळ – मार।
१२ आलातचक्करी बधी – अग्निचक्र जैसी लकीर बंध गई।
१३ भेळा – शामिल।
१४ स कोई – सभी कोई।

ठाकुरे घणी हुई। मो उभा[1] ईतरी वार लागी[2] अर गढ तूटयो। इतरी कही अर दोडियो।

सो रंजकरी[3] रपट। वाजरी झपट। लायरी लपट[4]। चीतारी दपट। वज्र कर मकर किना विह्मनो चक्र छूटो। कैतो ईतरी वात कही र कै दोडतो चढतो नजर ही न आयो। कोटा मांहि तरवार हीज वही। ओरा मोरचारा घणा पाता[5] लागा छा तिका माथा धूण कियो। ठाकुरे वो म्होकमसिंघ कोटमै उड पड़यौ[6]। तरवारियारी कडा कड सुण्या। ईण भात तो वारला कही।

अर मांहिला तो चक्रत चित रह गया। जाण्यो क प्रळैकाळरी वीज[7] पडी। किना परमेसर पीजियो[8] सो आकाससू तरवार वही।

कवित–मक्र[9] सीस मेटवा चक्र ही कौप चलावै।
कनां सक्र कर क्रोध वज्र पहाड़ां पठावै॥
धरे रोस धज धमल[10] आंचकां करण आछटे[11]।
अंग दहणूं[12] अभग असुर सिर जांण उपटे॥
कर हाक रीठ देतो कहर, वीर डाक वग्गं समौ[13]।
अण संक[14] जोम षड़ियो[15] अनड़[16] कूद वीच पडियो कमौ॥ १

---

१ मो उभा – मेरे खडे रहते।
२ ईतरी वार लागी – इतनी देर लगी।
३ रजकरी – वारूदकी।
४ लायरी लपट – आगकी लपट।
५. पाता – तेज।
६ उड पडयौ – उड पडा।
७ प्रळैकाळरी वीज – प्रलयकालकी विजली।
८ पीजियो – क्रोधित हुआ।
९ मक्र – मकर, गर्व।
१०. धज धमळ – अग्रणी योद्धा।
११ आचका करण आछटे – हाथसे तीर चलाते है।
१२. दहणू – जलाने वाला।
१३. वीर डाक वग्ग समौ – वीर-गर्जना करनेके समान। वीर ५२ कहे जाते हैं।
१४. अण सक – निशङ्क।
१५. पडियो – चला।
१६ अनड – अनम्र, नहीं झुकने वाला।

ईंघ कमौ[1] अहसत्या[2] धूज अग उवर धडके[3] ।
वीरभाल विकराल किना अण काल कडके ।।
मूक सिंधु मरजाद उलट आयो अणपारा[4] ।
किना गजब कौई कहर पडे सिर परम पहारा ।।
हलहले थाट हैकप हुवो भाट अथगा कर झिले[5] ।
कोटरै सीस घमचाल कज[6] प्रलै काल जै ही पडै ।। २
झलके मगल झाल ईला फिर गई उथले[7] ।
पडि गोलो अज गैब काल टोलो कर चले[8] ।।
धाड जम धडहडे[9] मेर पडभडे अचुके ।
वीरभद्र बडबडे हण, हडहडे हसके ।।
वूठो क असण[10] रूठो सकर सीह विछूटो हक समो ।
फूटो क सिंधु तूटो गयण[11] कोट कूद जूटो कमो[12] ।। ३

वात

अठै सफीला[13] उपरा निपट अमामी[14] तरवारियारी भडाझड वागी । तिण भात होळीरा पेल माहे डडेहडारी[15] कडाकडरी घाई लागै तिण भात लागी । घणी अमामी गजर[16] पडै छै । जिण भात

१ ईघ कमो – महोकमसिहको देख कर।
२ अहसत्या – कायर ।
३ धूज धडके – अङ्ग कांपते हैं और हृदय धडकते हैं।
४ मूक अणपारा – समुद्र मर्यादा छोड कर अपार रूपमें उलट आया।
५ भाट अथगा कर झिल – अपार प्रहार सहन करते हैं।
६ घमचाळ कज – प्रहारके लिये ।
७ ईळा उथले – पृथ्वी चलायमान हुई ।
८ पडि चले – तोपसे आश्चर्यजनक गोला गिरता है जिससे काल भी बचकर चलता है।
९ धाड धडहड – आतंकसे यमराज भी कांपता है।
१० वूठो क असण – जसे वज्रपात हुआ हो । स अशनि ।
११ तूटो गयण – आसमान टूटा । स गगन ।
१२ कोट कमो – महोकमसिंह गढमें कूद कर युद्ध करने लगा ।
१३ सफीला – दीवारों ।
१४ अमामी – तेज घनी बहुत ।
१५ डडेहडारी – डांडियोंकी ।
१६ गजर – चोट ।

प्रळैकाळरा लुहार अहरण[1] उपरा घणारी धामधूम दे वादो वाद[2] लोह घड़ै छै। धारसु धार लाग माहोमाह घणी सिरोहियांरो सांवणो[3] मार भड़ै छै। काळजा फीफरा[4] उपरा झपटता ग्रीध जिके झपटमें आयां थकां कटि कटि पड़ै छै। तिण रजपूतारै माथै सीरोहियांरा वाड[5] वरणाटक करता तूटै छै नै लोहियांरी धकरोळ चादरा चलै छै। जको जाणीजे क पहाडां उपराथी गैंगरा पाळ[6] उतरै छै। छोदा छीदा[7] आछा आछा कमणैतारा हाथांसू तीर सरणकै छै। तिको च्यार च्यार पाच पांच आदम्यामैं फूट परां पथरा उपरा जाय जाय पणकै छै। सो जाणे सूधी धारां निमाछलो मेह[8] पड़ै छै। तिण भांत सिरोहियारी धार झड़कै छै अर केई वीच वीच वीजळीरी सी नांई वंदूका भी किडकै छै। घणा नेठावरा[9] वंदूकारा पिलाडी निकां माहोमाह हो उपाडी। जिको पैला आवतांनु हाथसू धकाय[10] म्होरीनु[11] छातीसु भिड़ाय कटारीरी जायगां गोळी लगावै छै। कठै कठै ई माहोमाह वरछियांरी धमरोळ[12] पडै छै। ईण भात माहोमाह सरावै छै[13]। हर चोप जगावै छै। जठै वरछिया अधसळ[14] हुवा थका गळवाथां घाल जमदढा जडै छै[15]। केहक लथोवथ[16] हुवा थका कटारियांसु

१. अहरण – एरिन।
२. वादो वाद – प्रतिस्पर्द्धामें, वारी वारीमे।
३. सावणो – सघन, पास-पास।
४. फीफरा – फेफडे।
५. सीरोहियारा वाड – तलवारोंके पैने भाग।
६. पाळ – नाले।
७ छीदा-छीदा – चौडे-चौड़े।
८. निमाछलो मेह – सं० निर्म्लोच वर्षा, अविरल वर्षा।
९. नेठावरा – हठी।
१०. धकाय – धक्का देकर।
११. म्होरीनु – अग्र भागको।
१२. धमरोळ – मारामार।
१३ सरावै छै – सराहना करते है।
१४ अध सळ (अर्द्ध सिलह) – घायल।
१५. गळवाथां जड़ै छै– गलबाही डाल कर एक प्रकारको भयकर कटारका प्रहार करते हैं।
१६ लथोवथ (लत्थोवत्थ) – गुत्थमगुत्था।

सफीला उपरा[1] लोटण कबूतररी नाई[2] लोटता नजर आवै छै। केहक गिरैवाज[3] कबूतररी नाई गिरह पाता नै पलचर[4] पपिया ज्यू झड-फडाता सफीलासु वरती पडता पहली दोय दोय तीन तीन कटारिया लगावै छै। तठै म्होकमसीघरा तो हाथसू तरवार वहै छै अर ईण भातरी चोट करै छै तिका नजरमैं रापै छै हर वाह वा कहे छै। तिकौ म्होकमसिंघरो नजररो रीपिबो अर रीझरो दापवो। हाथरी उछाग[5] नै पगारी फुरती अर गाढ पर अमट[6] तिको सरदाररी बातानो चार। सो म्होकमसिंघ तो च्याराहीमैं वारपार।

ईण भात म्होकमसिंघ घणौ जाडौ घूमरो[7] आवै छै। जिणहीमै उड उड पडै छै। अर इण उपरै घणौ तरवारियारो गज बोह झडै छै[8]। ईणरा हाथमू घणा निरलग[9] होय होय पडै छै। ईणरै दातै आय चडै छै। जिको मुरगनै ही पडै छै[10]। ईण भात बात कहता वार लागै ओर मोरचारा घणा पाता अडिया[11]। तिके पण ईण समैं कूद कूद पडिया।

च्यारु तरफ ईण ही तरै होळीरी मी चाचर[12] माची। सो दोनु ही तरफारा आकाय तिके कुण पाय लाची[13]। ईण तरै भात भातरा लोह वाहै छै अर अवसाण[14] साधै छै।

१ सफीला उपरा – दीवारों पर से।

२ लोटण कबूतररी नाई – लकी कबूतर एक प्रकारका कबूतर जो आकाशमें लुढ़कता हुआ सा उड़ता है।

३ गिर बाज – गुलाच खाने वाला।

४ पलचर – मांसाहारी।

५ उछाग – उछाल।

६ गाढ पर [थर] अमट – गाढ़ी अर्थात् गहरी, स्थिर और अमिट।

७ घणौ जाडौ घूमरो – बहुत तेजी और अभिमानमें।

८ गज झडै छै – बहुत जोरदार प्रहार होते हैं।

९ निरलग – अंगहीन।

१० पडै छै – चलता है।

११ मोरचारा अडिया – मोरचोंक दबे हुए प्रबल वीर।

१२ चाचर – चचरी, एक प्रकारका होलीके अवसरका नृत्य।

१३ आकाय लाची – पुरुषाथ वालोंमेंसे कौन पीछे हटे।

१४ अवसाण – औसान, मौका।

गीत त्रिकुत[ट]बंध[1]

अणभंग[2] विहु[3] थटपं जुटै, अंग जोस धर कर उपटै ।
सज सकौ आवध[4] अमो समुहां[5], वकारै[6] वर वीर ।
इण भांत धक चंड वोपिया[7], लहरीक किरह हलोलिया[8] ।
कर साह किरमर सुर सम हर ।
अडर अरि हर पछंट[9] सिर पर ।
कससि कैंमर फुट वड़ फर ।
पार कर वर गजर धर हर ।
सीस हथ धर सोंपि जटधर[10] ।
दीध तिह वर[11] चंड पत्र[12] पर
गूंद पल[13] वर धपाड़ै[14] रिण धीर ॥ १
नव नूर[15] चढियो भड़ निलां, गढ लाज वांधी जिण गलां[16] ।
हद विहद कर हथहू विया, नृभै[17] नर नपतैत[18] ।
पंजर[19] रुधारी परलकै, रुधराल पाल[20] सुपरलकै ।

---

१ आढा किसनाजी कृत रघुवरजसप्रकास, सम्पादक श्रीमीताराम लाळस, प्रकाशक राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुरके अनुसार राजस्थानी भाषामें ९२ प्रकारके गीत नामक छद प्रचलित है (पृष्ठ १८६-१८७) जिनमें 'त्रिकुटबध' गीत भी है ।

२ अणभग – अभंग, अजेय ।
३ विहु – दोनो ।
४. आवध – आयुध, शस्त्र ।
५ अमो समुहा – आमने-सामने ।
६ वकारै – ललकारते ।
७. वोपिया – सुशोभित हुए ।
८ लहरीक'' हलोलिया – मानो समुद्रकी लहरोकी तरह हिलोर लेने लगे ।
९ पछट – प्रहार करने वाला ।
१०. जटधर – जटाधारी, शिव ।
११ तिह वर – उस समय ।
१२. पत्र – पात्र, वर्तन ।
१३. पल – मांस ।
१४. धपाडै – तृप्त करते ।
१५ नव नूर – नया तेज ।
१६. गला – बातें, गल्ल, गर्दन ।
१७. नृभै – निर्भय ।
१८. नपतैत – अच्छे नृक्षत्रोमें उत्पन्न ।
१९. पजर – पिञ्जर, शरीर ।
२० पाल – खाळ, परनाला, चमडी ।

पडि सबल दमगल[1], दलण पलदल ।
प्रबल मलफल अटल अचपल ।
निहद[2] छलबल, करत धकबल ।
बहल बीजल, धार बल वल ।
कटि कमल पल, उछल पडि पल ।
तडिछ तड लल, थहे[3] रिण थल ।
रुहिर[4] रल तल, अछड पड अचल ।
जुबल अणियल[5], जुडै करिवा जैत[6] ॥ २
तिण वार दल दुहूवा तणा[7], अति अडै भड अड़ियावणा[8] ।
अवगाह अमहा अनड[9] उभा[10], सूर सिंघ समसाण ।
तन प्रचड रिण अति तापडा[11], वहो लोह वाहै[12] वेभडा ।
पड झाट झड झड, झाट कॅावड ।
छुटै राम छड, ताड तड तड ।
वाण छुट वड, नौक सड मड ।
फूट फिफरड[13], कलिज[14] झड फड ।
अतड उधरड[15], लोथ लड थड ।

---

१ दमगळ – युद्ध ।
२ निहद – बेहद बहुत ।
३ थहे – होती है ।
४ रुहिर – रुधिर रक्त ।
५ अणियळ – सेनाके अग्रभागमें रहने वाले, वीर ।
६ जुडै करिवा जैत – विजय करनेके लिये एकत्रित हुए ।
७ दुहूवा तणा – दोनोंके ।
८ अड़ियावणा – शूरवीर ।
९ अनड – अनम्र उग्र ।
१० उभा – खड़े हैं ।
११ तापडा – प्रबल ।
१२ लोह वाहै – प्रहार करते ।
१३ फिफरड – फेफड़े ।
१४ कलिज – कलेजा ।
१५ अतड – आंतें ऊपर आती हैं ।

उलझ आपड़, रुंड रड़ वड़ ।
पंप झड़ पड, वीर वड वड ।
अछर[1] अड वड, धग धडहड ।
इमो मचि आरांण[2] ॥ ३
दईवाण[3] पत्रवट रापतो, अंणगंज[4] म्होकम आपतौ[5] ।
समराथि[6] निज हलकार, साथी उरडियो अणभंग ।
अवगाढ पोरस उफणैं[7], वहो रीझ करतो जुध वणैं ।
अति रोस उपट, रूकरौं[8] झट ।
थोग सह थट, रूयण द्रहवट ।
कमल[9] केई कट, समल सट पट ।
फवि झपट सिर रंगट मट फट ।
वणैं रिणवट[10], घाट अवघट ।
लड़ै लटचट, कुलट नटवट ।
पलट उलट, पड़त चटपट ।
पहै पग फट, विरद अति पट ।
जीतवा कजि जंग ॥ ४

कवित्त

विहद मचे घम गजर, किरमर[11] अरि सिर गोड़[12] ।
केई केई कर किलक, धजर अरि उवर[13] घमोड़ै ।

---

१. अछर – आकाश ।
२. आराण – युद्ध ।
३. दईवाण – दीवान, प्रतापसिंह ।
४ अणगज – अजेय ।
५ आपतौ – कहता ।
६. समराथि – सामर्थ्यवान ।
७ पोरस उफणे – वीरता उफनती (प्रकट होती) है ।
८. रूकरौ – शस्त्रका ।
९. कमल – मस्तक ।
१०. रिणवट – युद्ध ।
११. किरमर – तलवारोके ।
१२. सिर गोडै – सर काटते हैं ।
१३. उवर – उर, छाती ।

पजर[1] मानल पहर कहर केई ध्रंव कटारा ।
लेता छक छक लहर जियारा ।
फरहरै पार फूटै अणी[2], धार रुहिर रत धरहरै ।
कर कर उछाह गह धर घुमर, नीर अछर मम नडनडै ॥ १

नजे भाट[3] नीजला, काटि पड कम निछूटै ।
तडिछ उठ घट तटै, जोम[4] धक हूता जूटै ।
अमो समा[5] आछटै, छोह उपटै छत्रोहा ।
मिट घटै नह मरट, लहै चहै गल लोहा ।
अरनाड नीर साहस अधिक, दुहू तरफा छक दापवै ।
धड भिडै देप पडिया धग, वाह गाह सिर आपवै[6] ॥ २

चूट[7] लोह विकराल, तूट[8] अग धरा तडफै ।
फूट कलिज फिफगाड, भूल पलचरा[9] भडफै ।
नीर थट[10] नडनडै, चड पत्र[11] भरे चठठै ।
रम रूड नडनडै, मुंड माला हर गठै[12] ।
उफणै छकै नि्लकै अतर, भेलै मिर भर ओभडा ।
अस हथा थाट ठेलै अउर, रावत पेलै रूकडा[13] ॥ ३

---

१ पजर – शरीर ।
२ अणी – शस्त्रोंकी नोक ।
३ भाट – प्रहार ।
४ जोम – वीरता गर्व ।
५ अमो समा – आमने सामने ।
६ आपव – बहता है ।
७ चूट – बरसता है ।
८ तूट – टूट कर ।
९ पलचरां – मांस भक्षी पक्षी ।
१० थट – समूह ।
११ पत्र – पात्र ।
१२ मुंड गठै – महादेव मुंडमाला पिरोते हैं ।
१३ रूकडां – शस्त्रोंसे ।

पड़ै झड़ै पैमार[1], अड़ै सरदार अमांमा[2] ।
केई छक चढिया कड़ै, सूर मलफै[3] त्यां सांमा ।
केहकां सिर कटै, राम मुख उभा रटै ।
धरै धार धड़ लड़ै, प्रगट किरमाल पछटै ।
केई कथा पत्र धरियां करग[4], एकण हत्था आछटै[5] ।
कर वोह सोह चाढै कलां, लोह छाक धरती लुटै ॥ ४
कईक जुट्टै[6] कवर, अउर अणियाचा[7] भमर ।
अंग ज वाहर अतर, रंग केसर रच डंवर ।
चोंप चाव चित चाउ, गुमर धारै गद वहता ।
अछर झाला दिये[8], लड़ै परला लेवंता ।
किरवार धार जद्वार कटि, उड अकास पाछो पड़ै ।
आरती जांण न्हापै अछर, वरवाकजि[9] रथ अड़वड़ै ॥ ५
केई पड़तो झल कमल[10], आंण चाढै[11] सिव आगै ।
झड़ै कटारा कंमध, लटां चहुवा गल लागै ।
कटिया पग भड कि येक, टेक असमर उछटै ।
लत्थ वत्थ होय लुटै, जांण मतवाला झूटै ।
केई कोट मार धरियां कमल, गल कूंची मालां ग्रहे[12] ।
कूंचियां सहत अंग पल[13] कटै, झुंड अछर झौंका कहै ॥ ६

---

१ पैमार – परमार क्षत्रिय अथवा "झड़ैपै मार" के अनुसार गिरे हुए पर प्रहार ।
२ अमामा – वीर ।
३ मलफै – उछलते हैं ।
४ धरियां करग – हाथमें धारण किये हुए ।
५. एकण हत्था आछटै – एक हाथसे ही प्रहार करते हैं ।
६ जुट्टै – एकत्रित होकर ।
७. अणियाचा – सेनाके ।
८. अछर झाला दिये – अप्सरा सकेत करती है ।
९ वरवा कजि – वरण हेतु ।
१०. कमल – मस्तक ।
११. आण चाढै – लाकर चढ़ाते हैं ।
१२ गळ···ग्रहे – गलेमें दुर्गरक्षक चाबियोकी माला धारण कर ।
१३ पळ – मास ।

ईसै जोस अणभग, दुहू तरफा दईवाणा[1] ।
सझै मार साधणी[2], गाडि असमरा[3] उडाणा ।
झकै छकै गीफरै, हुवा भभकत गहकै ।
चोप तीप नह चकै, थहै गिणहूत न थकै ।
वाराह रूप[4] दुहू थट निकट, पग पूनी वाहै पहै ।
चग झडै[5] वैयक पड उपडै, दाण तेण केह कटहै ।

वात

ईण भात कितराहेक तो गोळी तीर वरछियासू फूटा[6] । कितरा हेक कटारियारा मारिया नयोजय हुवा तिके ईण भात उळभिया । सो जुवा किया ही न होय जुवा । सो म्होकमसिंघ कितराहेक सरदार रजपूतानू पकड लीवा । पकडिया तिकानू रावत प्रतापसिंघरी हजूर आण हाजर कीधा[7] । तिकानू घोडा सिरपाव[8] देर छोड दीधा । फुरमायो थान क्यो ओर हर होय[9] तो म्हारी सरकारसू घोडा दिरावा। म्हारी धरती माहे दोडज्यो । अर गढरो जोम होवै तो फेर सामान करो । म्हारी फोज आवै छै । जिणसू हाथ जोडज्यो । अबरकै[10] तो छोडिया छै । जमीदाराकी सापसू[11] हर अबरकै चूकस्यो तो मार हीज नापस्यू[12] । अबै वा जायगा म्हारी दीवी[13] रहसी थाहरै कन[14]

१. दईवाण – दीवाण रावत प्रतापसिंह ।
२ साधणी – नक्री योङ घोडे स्थान पर ।
३ असमरा – तलवारें ।
४ वाराह रूप – सुअरके रूपमें सुअर वीरताका प्रतीक माना जाता है ।
५ झड – झडते हैं कटते हैं ।
६ फूटा – घायल हुए ।
७ प्रतापसिंघरी कीधा – प्रतापसिंहके दरबारमें ला कर उपस्थित किया ।
८ सिरपाव – मस्तकसे पर तकके वस्त्राभूषण ।
९ भोर हर होय – फिर इच्छा हो (लडनेकी) ।
१० अबरक – अबकी बार ।
११ सापसू – साक्षिसे सिफारिशसे ।
१२ मार नापस्य – मार ही डालूगा ।
१ म्हारी दीवी – मेरा दी हुई ।
१४ थांहर कन – तुम्हारे पासस ।

कोई न लेसी । छत्रीधरमरै राह चालस्यौ तो थे हीज पावस्यौ । फेर किणही गरीबनै दुप दीया तो थाहरा किया थे हीज पावस्यौ अर मारचा जावस्यौ । अबकै तो थांनु छोडिया । ईण वासतै कोई आसर[1] किण ही तरैकी रह गई होय तो फेर पेटो करै डोडिया[2] ।

तिण उपरै डोडिया अरज कीधी । म्हानुं आप जीवदांन दीधा अर चाकर कीधा । अबै तो रहस्या म्हे रावळो हुकम माथै पर लीधा । राजसू लडिया ईसडो कुण छै जिणनुं आसर रहै । राजरी रीस झेलै जिणरै दोय सीस होय जको सहै । हर तरवार गहै ।

ईणा ईण भात अरज कीधी । रावतजी वानू विदा कीधी । म्होकमसिघनू बुलाय पाथापणा प्रतोपीज्या[3] अर मनमें घणा रीज्या । घणो हेत कर गळै लगाय कह्यौ । म्होकम भाई मुनौ[4] हेट[5] हेट करै थाहरी रजपूतीरी अधिकाई । सो एकसू एक सवाई । पण बाबा थोडा धीरा[6] रह्या करो । म्हारो हुकम अर म्हे जिण वातमै चैन पावां जिको मन माहे धारचा करो । तू तो ईण भात सदाई राडमै पाथो वहै छै[7] । पण म्हारो जोव तोहीजमै रहै छै सो तू जायनै वपस । अर लै सुजस ।

सो ईणा रावत प्रतापसिंघरी सरकारसुं भी लेपणौ[8] दांन दीधो । अर आपरा घर मांहे छो सो तो सरव ही दीधो । सो ईणारो तो सार नैं आचार घणौ घणो तिको कठा तांई कह्यो जावै । जिणारा प्रवाड़ारो[9] कुण पार पावै । निपट अमांमी[10] अद्‌भुत अछूती रजपूतीरो

---

१. आसर – शक्ति, इच्छा ।
२. पेटो करै डोडिया – डोडिया रजपूत फिर युद्ध कर लें ।
३ पाथपणा प्रतोपीज्या – तेजीको, वीरताको सन्तुष्ट किया ।
४ मु नौ – मुझको ।
५ हेट – धिक्कार ।
६. धीरा – धीरजसे ।
७ राडमै पाथो वहै छै – युद्धमें तीव्रता (वीरता) प्रकट करता है ।
८. लेपणौ – विशेष उल्लेखनीय ।
९ प्रवाडारो – प्रवादोका, वीरतापूर्ण कामोका ।
१० अमामी – बहुत, असीम ।

सरदार। ताता रजपूतामै ही तीप चोपरी वात[1] अपियातरो उवारण-हार[2]। तिको रजपूतारो तो ईण भात रजपूनी अखियात निवान रहसी। अर ईण वातरा रीझवार रीझिया रीझ छै अर रीझ रहसी।

घणा काचा अपणानै[3] तो न उपजै चाव। उलटो पडै सरमदगीरो डाव[4]। अर ताता तीपा रजपूतानै चोप चढावै। अर रग चढावै। त्यौ त्यौ वात पढै त्यौ त्यौ रग चढै।

दोहा

काचा[5] धन साचा[6] किता, चिता न उपज चाव।
मरदा[7] सुण इ[इ]ण वात मन, चव गुण छाक चढाव[8] ॥ १
धाक पडै जिण अरि धरा, डाक वजै जिण दिन[9]।
छाक चढै जिण छत्रवट, व ममताक[10] सु मन ॥ २
जग अथगा जूटवै[11], धज वड बागा[12] धूत।
भिडण भाभरा भूत व्है[13], रीझै सो रजपूत ॥ ३
रहै न तन धन गपिया[ा], कीवा[कीधा] जतन किरोड।
मान लहै मरदा भला[14], महि सुण वात मगोड[15] ॥ ४

---

१ रा प्रति यहासे आगे त्रुटित है।

२ अपियातरा उवारणहार – आख्यातको प्रसिद्ध करने वाला सुयशमें लिख गये काव्यको अमर करने वाला।

३ काचा अपणान – कमजोर कायरो को।

४ सरमदगीरा डाव – लज्जित होना।

५ काचा – कच्चे कमजोर कायर।

६ धन साचा – धनका सञ्चय करने वाले।

७ मरदा – मर्द वीर।

८ चव चढाव – चौगुना उत्साह बढता है।

९ डाक दिन – जिस दिन युद्धका नगारा बजता है।

१० ममताक – मस्त।

११ जग अथगा जूटव – युद्धमें भारी समूह वीरतापूर्वक युद्ध करते हैं।

१२ धज वड बागा – युद्ध वाद्य बजने पर।

१३ भाभरा भूत व्है – अत्यन्त शोभित हो। राजस्थानमें भाभरा नामक शोधी भूतकी कथा कही जाती है।

१४ मान लहै मरदा भला – श्रेष्ठ वीर मान प्राप्त करते हैं। ग और घ प्रतियोंमें दोहोंके पश्चात निम्नलिखित सोरठा अधिक है—

सोरठा—विद्या जां लग चूर भणसी लिखसी वाचसी।
त्यां लग रावत सूर पतो कमो रहसी प्रसिध ॥

१५ महि सुण वात मराड – ससारमे उनकी वीरताकी बात सुनी जाती है।

वीरमदे सोनीगरारी वात

॥दं०[1]॥ श्री गणेशाय नम [नमः] ॥

अथ वीरमदे[2] सोनीगरारी[3] वात लिष्यते[4] ॥

गढ जालोर सोनीगरो वणवीर राज करै छै। वणवीररे कवर २ हूवा। वडा कवररो नाम कानडदे। छोटो राणगदै। टीकै कानडदैजी सोवनगीर[5] राज करै छै।

एक दिन कानडदेजी सिकारने चढीया। सो साथ वीपर गयो। आप जालोरसु कोस ७८ ११ [७-८] उपरे गया तिसै रात पडी। पवास[6] १ वीजीयो कन्है[7] रहीयो। रा[आ]धी रात गई। रावजी उजाडमै पोढीया छै[8]। तिम[ण] समै कामदेव जागीयो। तरै रावजी

---

१. दं० – गुरुके साथ ६ श्री लगानेकी प्रथा रही है। ॥दं०॥ ६ श्री का प्रतीक और परिवर्तित रूप ज्ञात होता है। अक ६को लिखते-लिखते अलकृत करनेके प्रयत्नमें "दं०" रूप प्रचलित हो गया है। अथवा यह चिन्ह ॐका प्रतीक या परिवर्तित रूप है।

२. वीरमदे – कथा-नायकका नाम है। यह वीरमदे "वीरवांण", अपर नाम वीरमायण नामक राजस्थानी काव्यके चरित्रनायक वीरमदेसे भिन्न है।

३. सोनीगरारी – सोनीगरेकी। चौहान क्षत्रियोकी एक शाखा "सोनीगरा" नामसे विख्यात है। जालोर दुर्ग जिस पहाडी पर निर्मित है उनका प्राचीन नाम सुवर्णगिरि कहा जाता है। सोनीगरा चौहानोका मुख्य स्थान भी जालोर ही रहा। सुवर्णगिरिका अपभ्रंश>सोनीगरा हुआ, जिसके आधार पर क्षत्रियोकी सोनीगरा शाखा प्रसिद्ध हुई।

४ ख. प्रतिमें "वात लिष्यतै" के स्थान पर "वार्त्ता लिष्यते" पाठ है।
ग प्रतिमें "॥दं०॥" लिष्यतै" पाठ नहीं है। सभवत प्रतिलिपिकर्त्ताकी असावधानीमे छूट गया है।

५ सोवनगीर – सुवर्णगिरिका (?)।

६ पवास – पासमें रहने वाला सेवक।

७. कन्है – साथमें, पासमे।

८. पोढीया छै – सोये हैं।

कह्यौ । विजडा इण वेला[1] असतरी ल्याव[2] ।

माहाराजा नेडौ[3] तो कोइ गाम न्ही । असतरी कठासु ल्यावु । तरै तामस[4] करनै कह्यौ । तरै पथररी पूतलीरो[5] कह्यौ । तरै कान्हडदेजी कह्यौ ।• उरी[6] ले आव । माहरी छाती उपर मेल दै । मन वैमास[7] छै ।

नरै पूतली पथररी आणे नै कानडदेरै छाती उपरा मेली । तिसै छातीसु भीडता[8] पथररी पूतली मानव देह हुई । तरै बोली । माहाराजा हु अपछरा[9] छु । अकन कुवारी[10] छु । राजन परणीया पछै[11] सुप भोगवसु[12] ।

कानडदेजी राजी हुवा । प्रभातै[13] घाडै चाढनै[14] गाम बडाडा[15] माहै सापलो सोमसिंघ घररो धणी छै तिणरै घरै ले जाय उतारी

१ इण वेला – इस समय वेला (स) ।

२ विजडा ल्याव – क स्थान पर ख प्रतिमें यह पाठ है— 'बीजडिया रांणी तो काई हाजर नहीं न नींद आव नहीं । त काईक लुगाई ल्याव ।'

३ नेडौ – निकट ।

४ तामस – क्रोध ।

५ पूतलीरो – पुतलीकी बात ।

६ उरी – समीप ।

७ वैमास छै – विश्वास है (कि यह पत्थरकी पुतली भी सजीव हो जावेगी) ।

८ भीडता – लगाते हुए ।

९ अपछरा – अप्सरा ।

१० अकन कुवारी – अक्षुण्ण कुमारी ।

११ परणीया पछै – परिणयके पश्चात विवाहके बाद ।

१२ सुप भोगवसु – सुख भोग करूंगी । ग प्रतिमें यह प्रसङ्ग इस प्रकार है—'तारां रावजी न बीजडियो साम्या जगलर विच एक देहर आया । वासो लीयो । देहरेमें पाखाणरी पूतळी, सा घणी रूडी रूपरी कान्हडदेजी उणर रूप दिसो घणो गोर करि जोवण लागा । तिण सम कोई देवर जोग उवा पूतली थी तिका अपछरा हुई । तर रावजी कह्यो थे कुण छो । तर उवा बोली अपछरा छू मैं थांने वरिया छ । पिण म्हारी आ बात किणी आग कही तो परी जासू ।'

१३ प्रभात – प्रातःकाल ।

१४ चाढनै – चढ़ा कर ।

१५ ख और ग प्रतिमें गांवका नाम 'बराडो' लिखा गया है ।

नै विजडै पत्रान कहीयो । इणनै कानडदेजी परणीजण आवसी[1] ।

सोमसी सापलै सारी सभाई[2] कीधी । वरी-विसाणो[3] रावजी लेनै आया । गोधूलक समै[4] परणीया । गतिवासै पोढीया । प्रभातै सुपपालमै[5] वैसांणनै[6] गढ जालोर ले आया । अलायदो[7] मैहल करायो । तिण माहै घणा सुप भोग विलास करै । अतर सुंवा अरगजा माहै गरकाव रहै[8] ।

इण भांति वरस २ हूवा । तरै वेटो हूवो । तीणरो[9] नांम कवर वीरमदे दीधो । आगै रांणी तीणरै वेटी हूई । तिणरो नाम बाई वीरमती दीधो । वरस सात माहे वीरमदे हूवो । तिसै मा गडपे[10] सारा टावर रमै छै[11] । पागती लोक उभा छै[12] । तिसै हाथी छूटो सो पाधरो[13] टावरां माहे आयो । देपनै वीरमदे दोडीयो । यु लारै हाथी दोडीयो । तिनै रजपूतां कूको कीधो[14] । कंवर मारीयो २ । इसो सवद अपछरा झरोपै वैठी सुणीयो ।

आगै धरती साम्हो जोवै[15] तो वीरमदे नै हाथी लपेटीयामै छै । तिसै झरोपै वैठी हाथ पसारनै वीरमदेनै उचो लीधो । तिको रजपूता देपनै इचरज[16] हूवो । ठाकुरै मिनप तो न्ही ।

---

१ परणीजण आवसी — विवाह करनेके लिये आवेंगे ।

२. सभाई — सजाई, सजावट ।

३. वरी-विसाणो — ख. वरी चुडो, ग चूटो वरी, विवाहके लिये वस्त्र-चूडा आदि ।

४. गोधूलक समै — गोधूलिकाके समय, सायङ्कालमें ।

५. सुपपालमै — एक प्रकारकी पालकीमें ।

६ वैसांणनै — वैठा कर ।

७. अलायदो — अलहदा, अलग ।

८. अतर…रहै — इत्र, अरगजा आदि सुगंधित पदार्थोंसे भरे हुए रहें ।

९. तीणरो — उसका ।

१० गडपे — गढ़ पर ।

११. टावर रमै छै — बालक खेलते हैं ।

१२. पागती…उभा छै — एक ओर पंक्तिबद्ध लोग खड़े हैं ।

१३. पाधरो — सीधा ।

१४. कूको कीधो — हल्ला किया, शोर मचाया ।

१५. जोवै—देखती है ।

१६. इचरज—आश्चर्य ।

आ वात राणगदेजी साभली[1]। तरै पूछियो। हठ घणो कीधो। तरै भेद अपछरारो बतायो।

मझ्या मम[2] रावजी महिला पधारीया तरै अपछरा मुजरो करे नै सीप मागी[3]। अबै तो माहिजजी मोनै लोका दीठी[4]। राज पीण हकीगत कीही सो म्हे ता जावमु। रग भोग विलास करनै अनाप हुई[5]। जाती थकी कहीयो माहरा वेटारी छायामै छानी थकी रहसु[6]। तिगे वहिनै जाती रही।

अब वीरमदजी पजू पायक का मिम्नूरा [मिम्रा][7] घाव राव सीपै। पजूसू घणा हेत वधाणो।

वरसा १६ माहे वीरमदेजी हूवा। तिम जेसलमेररो धणी भाटी राव लापणसी एक दिन गोपै वेठो थो। तिमै सवणी बोलीयो[8]। रावजी सलामत सवा पोहर दिन चढीया सोनिकरा कान्हडदेन विस होसी[9]। इसो साभलेनै राव लापणसी कागद लिपनै वीरा राडकानै[10] कह्यो। बोराई साट ताती छै[11]। तिण चढन जालोर जा। सवा पोहर दिन चढीया मोहर जाए[12]। तोनै सावास देसा। परवानो कान्हडदेजीरे हाथे दीयो। इसो कहिनै चापरसु[13] चढीयो। जेसलमेरसु जालोर कोस

---

१ साभली — सुनी।

२ मझ्या मम — मध्याह्नके समय सायङ्काल।

सीप मांगी — छुट्टी मांगी, जानेकी स्वीकृति चाही।

४ मोनै दीठी — मुझे लोगोंने देख लिया।

५ अनाप हुई — लुप्त हुई अतर्ध्यान हुई।

६ छानी थकी रहसु — गुप्त रूपमें रहूंगी छिपी हुई रहूंगी।

७ मिम्नूरा [मिम्रा] — प्रारम्भिक मन्त्र सिखावे (?)।

८ सवणी बोलीयो — भविष्यवक्ता शकुनी बोला (?) या न प्रतियोंमें तावण बोल्यो। किस जिनावर सवो (म्यो) कह्यो' पाठ है। स्वपनोंमें तात्पर्य शकुन तथा भविष्य बताने वाले पक्षीसे है।

९ विस होसी — विष दिया जायगा या ... होगा।

१० राडकानै — ऊंट सवारको।

११ बोराई साट ताती छै — समीपकी (?) ऊंटनी तेज चलने वाली है।

१२ मोहर जाए — पहले आना।

१३ चापरसु — ... (?)।

७६ हुवै। घडी ५।६ दिन चढीयो नगर जालोर कोस १ रह्यो अर सांढ थाकी।

तरै साढीयै उपरणीरो फररो कीयो[1] आवतां विरमदेजीरी नीजर आयो। तरै कह्यो। ठाकुरे कोई ओठी तारी सांढ पडीया[2] आवै छै। तिसै साढीयो पीण आय पोहतो[3]।

तरै पूछीयो तू कठारो छै। तरै कह्यो। जेसलमेर रहु छुं। रावल लापणसीजी मेलीयो छै[4]। रावजीसु काम छै।

कान्हडदेजीसु मीलीयो। परवानो वाचीयो[5]। हकीकत साभली[6]। वात मन माहै राषी। उ[ओ]टीनै डेरो दीयो[7]। तिनै अमल करनै विराजीया छै[8]। तिनै दूध मिश्री पवास ले आयो। रावजीरै मन माहै चमक थी[9] तिणसू दूध नै मिश्री कुतरानै पाई[10]। घडी १ तड-फडेनै प्राण छूटा।

तरै रावजी पवासनै पूछीयो। साच बोल म्हानै जेहर किण दिरायो छै। तरै कह्यो माहाराजा गुनो माफ हुवै। अणहुतो कीणरो नाम लेउ[11]। तरे पवासरा जांम २ पीलीयो[12]।

---

१. उपरणीरो फररो कीया – दुपट्टे, ओढनेका सकेत (?) किये हुए।

२. पडीया – चलाते हुए।

३. ग प्रतिमें इसके पश्चात् यह पाठ है 'नै आवंत सना पूछियो, रावजी दातण करिनै आरोगियाके नहीं आरोगिया। तद पूछणवाळै कह्यो, रावजी अवै अमल करिनै दूध मिश्री आरोगसी। तरै पोळियै माहे रावजीनै गुदरायो . ।"

४. मेलीयो छै – भेजा है।

५. वाचीयो – वाचन किया, पढा।

६ साभली – सुनी।

७ उ[ओ]टीनै डेरो दीयो – ऊंट सवारके ठहरनेका प्रबन्ध किया।

८. अमल . विराजीया छै – अफीम लेकर बैठे हैं।

९ ग. प्रतिमें आगे ऐसा पाठ हे—"नै तिरवाळा निजर आया। तरै खवासनै कह्यो, औ दूध मिश्री तू हीज पीव जा। खवासनै पहलै दिन चोट घाली थी। तिण रीसनू खवास विस घाल्यौ दूध पिवै नहीं।"

१०. कूतरानै पाई – कुत्तेको पिलाई।

११. अणहूतो . लेउ – बिना कारण किसका नाम लू।

१२. जाम २ पीलीयो – शरीरका प्रत्येक भाग पेल दिया। ख में "जांम २ पीलीयो" के स्थान पर "जनवचौ पीलायौ" और ग. में "जनवचौ पी लियौ" पाठ है।

राव लापणसीजीनै पाछा परवाना लिपनै ओठिनै सीप दीवी । रावजीनै रसाल मेली[1]। घणो हेत हूवो। परवाना रावजी वाचीया पूस्याली[2] हूई ।

एक दिन कान्हडदेजी कहीयो। आपासु राव लापणसीजी गुण कीधो[3]। हिवै[4] आपै बाई विरमती दीजै तो भलाई ज छै। तरै गणगदेजी कह्यो। माहाराज फूरमावो सो प्रमाण छ[5]। गढपती सगा छै।

इसो आलोच[6] करनै घोडा १५ नालेर २ सोना रुपारा परधान साथै आसामी[7] १० ठावी[8] देनै जेसलमेर मेलीया। सो जेसलमेर आया।

रावजीसु मालम हूई जे सोनिगरारा नालेर आया छै। आ वात सुणन रावलजीनै घणो सोच हूवो। रावजी कहे म्है तो सोनिगरासु भलो कीयो थो पिण माहरै ही गलामै डोर नाषी छै[9]। हिवै ठाकुरे की करा। कैन पूछा[10]।

तरै परधानै कह्यो। रावलजी सलामत मोढीजीनै पूछीया[11]। हा सावास भली कहीया।

---

१ मनी – भेजी।

२ पूस्याली – प्रसन्नता।

३ गुण कीधो – गुण किया, भलाई की।

४ हिव – अब।

५ प्रमाण छ – प्रमाण है, ठीक है।

६ आलोच – विचार।

७ आसामी – आदमी।

८ ठावी – मरूय विश्वासपात्र।

९ नांषी छ – डाली है। 'माहर ही नांषी छ' के स्थान पर ख प्रतिमें 'माहिज गल मलथद छोकरीरी न्हांषी' और ग प्रतिमें 'माहिज गळ मलथदो छोकरीरो नालियो' पाठ है।

१० हिव पूछां – अब ठाकुरों ! क्या करें किससे पूछें ?

११ सोढाजीनै पूछीया – सोढी रानीको पूछिये। आगे ग प्रतिमें यह पाठ है 'आग रावजीरै ऊमरकोटरी सोढी रांणी छ। तिका डील माहै माती घांणीरे फेर छै। रूप कुढबी छ पिण रावलजी सोढी के वस छ तर रावळजी कह्यो मूवां पूछां कि पाछा मलां ता भूडा दीसां।'

रावजी मैहला दुमना विराजीया[1] । तरा सोढीजी वोलीया । रावजी सलामत नालेर वादीयां के न्ही[2] । तारे रावलजी वोलीया । म्है तौ नालेर पाछौ मल देसा ।

तारा सोढी वोली । हूवा साठी नै वुध नाठी[3] । डोसा[4] गढपती-यारा नालेर पाछा मेलो मती ।

तारा नालेर झालीया[5] । परधाननै सीप दीधी । लगन जोयनै जान चढी[6] । तरा सोढी कहीयो । सामोलो मोढारो वपाणज्यौ[7] । हथलेवो[8] सोढीरो वपांणजो । पिण सोनिगरारै घरै जीमजो मती[9] । तारा रावजी कह्यौ । भला ।

जान चढी । आगै वधाई दीधी । तरै सामेलो कीधो । सोनीगरासुं रांम २ हूवो । तिसै रावजी अठी उठी देपने वोलीया । सांमेलो नीपट सपरो[10] पिण क्युहीक सांमेलो मोढारो सकस[11] । विरमदै जाणीयो । जाणै तो मन जाणै ।

---

१ दुमना विराजीया – उदास होकर बैठे ।

२. नालेर न्ही – नारियल स्वीकार किये अर्थात् विवाह-सम्बन्ध स्वीकार किया अथवा नहीं ?

३ हूवा नाठी – साठ वर्षके हुए और बुद्धि भागी, एक राजस्थानी कहावत है । आगे ग प्रतिमें यह पाठ है "किस् पुखता हुवा छो, राडोचानै करिस्यो किस्यूं, खाणै पीवणै पोहचा नहीं, थे रीसावो मती ।"

४. डोसा – वृद्ध, मुख्य ।

५ झालीया – ग्रहण किये ।

६. लगन चढी – लग्न देख कर बरात (वरयात्रा) रवाना हुई ।

७. सामोलो वपाणज्यौ – सोढोके स्वागतकी प्रशंसा करना ।

८ हथलेवो – पाणीग्रहण, विवाह-संस्कारकी एक क्रिया ।

९ जीमजो मती – भोजन मत करना ।

१० नीपट सपरो – बहुत उत्तम ।

११ सकस – बढ़कर । आगे ग प्रतिमें यह पाठ है—"पिण सोढारै सामेळारी होड व्है नहीं । इतरो सांभळत समो वीरमदेरा डीलमें आग लागी । सोढारो नेस (नाश) छै तिके दोडा छै । भोमिया-भूव, धरतीरा वासी त्यांरो, सांमेलो आछो, तो रावळ मांहे परमेसर नहीं, गवैड़ाकी बूझ छै । सुणीयौ यौ त्यूहीज छै । तरै वीरमदेजी आगै वुधि [वधि] गढ आया, तठे रावळजी तोरण पण त्यूहीज कह्यौ ·· ।"

तिसे तोरण वादीयो[1]। आरती कीधी। चवरी वीराजीया। हथलेवो दीधो। तरै रावजी बोलीया। हथलेवो तो सोनीगरीगे मपरो पीण सोढीरी होड[2] न करै।

ईसो सुणनै वीरमदेजी जाणीयो। सगपणमैं पोटा पाथा[3]। रावलमैं लपण पीलोरीरा छै[4]। सोनिगरी रीसायनैं सुम घालीयो[5]। हथलेवो छूटा पछै रावलसु घरवास करू तो भाइ वीरमदेमु करू। परणीजता विरस हूवो। छेहडा छोडीया[6]। चाचड[7] पधारता राव लापणरो वेगारो[8] हूवो। सीप मागी।

हठ घणो कीधो। रहै न्ही। तरै कान्हडदेजी राणगदेजी रीसाणा[9]। रावलजी चढै नैं चालीया। तरा वीरमदेजी कह्यो। बाईने मेला न्ही। तरै कान्हडदेजी कह्यो। एक वार जेसलमेर पोहचावणी मदामद[10] रीत छै।

असवार १०० नैं राजडीयो पवास नाई साथे दैनै बाईजीरो रथ जोतरीयो सो जालोरमु कोस ४० पोहता[11]। गाव माडलरो तलाव तठै रथ छोडीयो। वलरी[12] तयारी करे छै। केइक टेव टालणनै[13] गया छै।

---

१ तोरण वादीयो – तोरण बांधा। तोरण बांधनेकी परपराका सम्बन्ध तोरण राक्षसकी एक पौराणिक कथासे जोडा जाता है।

२ होड – बराबरी।

३ सगपणमैं पोटा पाथा – विवाह सम्बन्धमें भूल हो गई।

४ पीलोरीरा छै – खिलोरी(?)के है।

५ सोनिगरी घालियो – सोनीगरी राजकुमारीने हठ कर निश्चास लिया।

६ छेहडा छोडीया – बन्ध हुए वस्त्रोंके कोने खोले गये। विवाह संस्कारमें वर वधुके हुपट्टे साडीके कोने एक साथ बांध जाते हैं।

७ चाचड – ग्राम काल।

८ वेगारो – विवाद झगडा।

९ रीसाणा – रुठ गये।

१० मदामद – परंपरागत मर्यादा।

११ पोहता – पहुंचे।

१२ वलरी – व्यालुकी भोजनकी (?)

१३ टेव टालणनै – प्रातः टालनेके लिए शौच आदिके लिये।

तिसै सोनीगरी वीरमती छोकरीनै[1] कहीयो। तू पाणी भर ले आव। तरै छोकरी झारी भरनै ले आई[2]। तिसं वाई पूसली[3] भरनै देपै तो पाणी माहें तेल हीज तेल दीसै। तरै कह्यौ। हाथ धोयनै झारी भरी न जायै। तरै छोकरी कहीयो। वाईजी साहिब। कोइक सीरदार सांपडै छै[4]। तिणरा तरवाला आपा[5] तलावमै दीसै छै।

तरै सोनिगरी कहीयो। कठारो सिरदार छै। काई नाव छै। तू पूछनै आव। तरै छोकरी आयनै पूछीयो। तरै ढोली बोलीयो—

निवो सैवालोत[6]। साप राठोड। धिणलागे धणी[7]। लापांगे लोडाउ[8]। रूलीयागे जोड[9]। रांकारो मालवो[10]। अधणीयांरो धणी[11]। परभोम पंचायण[12]। सयणांरो सेहरो[13]। दूसमणांरो नाटसाल[14]। वडो झोकाइत[15]।

इसो सुणैनै छोकरी जायनै पाछौ कह्यौ। सोनिगरी पाछी मेली।

---

१ छोकरीनै – दासी को

२. ग प्रतिमें यह पाठ है "तरैं दासी झारी भरणनै गई। आगै देखै तो नीवो सिवालोत सात-बीसी साईनारी साथसूं झूलै छै। तिके केवा, चपेल, अरगजारी पांणी माहे लपटां आवै छै। केसररा रगसू पाणी वदळ गयो, रंग फिर गयो छै। दासी झारी झकोळ पाणीसू भरी नै सोनगरीनू दीधी।

३ पूसली – अजली।

४ सापडै छै – स्नान करता है।

५ आपा – सारे।

६ सैवालोत – सैवाल (शिवलाल ?) का वशज।

७. धिणलारो धणी – धिणलाका स्वामी।

८ लापारो लोडाउ – लाखोको मारने वाला।

९ रूलीयारो जोड – बिछडे हुए, भटकने वालेको मिलाने वाला।

१०. राकारो मालवो – रको, निर्धनोके लिये मालवा। मालवा समृद्ध प्रान्त माना गया है।

११ अवणीयारो धणी – जिनका कोई स्वामी न हो, उनका स्वामी।

१२. पर भोम पचायण – दूसरोकी धरतीके लिये पञ्चानन, सिंह, वीर।

१३. मयणारो सेहरो – समझदारोका मुखिया।

१४ दूसमणारो नाटमाल – शत्रुओंको छकाने वाला।

१५. वडो झोकाइत – बहुत मनमौजी। ग प्रतिमें यह पाठ है—"तरै एकण चाकर कह्यौ, साखि राठोड, नींवो सिवालोत, लाखांरो लोड़ाउ, वडो झोकाऊ, सैणारो सेहरो, दुसमणरो साल, जाता-मरतांरो साथी, लाखारो लहरी।

तू जा पूछे आव । राव "लापणसीरी परणी[1] सोनिगरा कान्हडदेरी बेटी थाहसु[2] "ापणी आवै तो थाहरै घरै आवु"[B] ।

इसा समाचार छोकरी कह्या । तरै निवै सेवालोन वोलीयो । चढनै आवो । म्है थानै ले जावना ।

तरै छोकरी जायने कह्यौ । रथ जोतायन[3] सोनिगरी चाली । तिसै निवाजी अधकोस सामा आया । घोडासु उतरनै रथ माहै पधारीया । सोनिगरीसु मीलीया ।

तिसै रथरै लारै[4] साथ चढीयो । आगै असवार दीठा[5] । सात वीस[6] असवारासु साफ तो वागो[7] । राजडीयो पवास वाजनै[8] काम आयो[9]। निवोजी फतै करनै[10] गाव धीणलै पधारीया । वधामणा[11] हूवा ।

वेढरी[12] वात कानडदेजी सुणी । विरमदेजी पीण जाणीयो । निवै घणी कीधी[13] । पिण राजलमै पिरोगीरा लपण[14] था तिणसु परणी गई और सावास नीवानै । माहरै माटो सगो छै । म्है मनमै इण वातरो आटो[15] कोड रापा न्ही ।

---

१ परणी – परिणीता (स) विवाहिता ।

२ थांरसुं – तुमसे ।

२॥ ग प्रतिमें पाठ इस प्रकार है—थारमांो नाम छ तिको फेरांरो दोष लागो छ । जो थांसू मोर परम घासणी थाँव तो हूं घावू ।

३ रथ जोतायन – रथमें बैल जुड़वा कर ।

४ लार – पीछे ।

५ असवार दीठा – अश्वारोही दिखाई दिये ।

६ सात वीस – सात बीसी अर्थात १४० ।

७ सा वागो – लोह बजा लड़ाई हुई ।

८ वाजन – लड़ कर ।

९ काम आयो – मारा गया ।

१० फतै करनै – विजय कर ।

११ वधामणा – बधाईयां स्वागत ।

१२ वेढरी – लड़की ।

१३ घणी कीधी – बहुत किया विजय प्राप्त किया ।

१४ पिरोगीरा लपण – फिरांगी (दिग्गजन) के लक्षण ।

१५ आंटो – वैर ।

राव लापणसी पीण साभलियो[1] जे सोनिगरीने ले गयो । लोहारानै बुलाया । इसो भालो घडो[2] तिणसु एथ[3] बैठा निवलानै मारां ।

तरां लोहार साराई दुचिता बैठा[4] । तरै मिरधारी[5] बेटी बोली । बापजी दुचिता वयु बैठा छौ । तरै कह्यौ रावल भालो घडावै सौ भालो न हूवौ । तरै डावडी[6] कह्यौ लोह नै मैनतरा[7] दाम उरा ल्यौ[8] नै घर काम करो नै हू रावलजीनै जाव देसु[9] ।

तरै भालारा रुपीया ले आया । मास ६ हूवा तरै रावलजी कह्यौ भालो उरो ल्यावो । तरा लोहाररी बेटी हाथ जोडनै कह्यौ । रावलजी साहीब भालैरो मोनै घणो सोच छै । रावलजी तो पूपता[10] छै नै निवौ तो मोटीयार[11] छै । कदेस भालो पकडनै पूठो[12] रावलजीनै वावै[13] तो म्है किसुण करा ।

तारा रावलजी कह्यौ । हा म्हारी नाहर, भलो वेगौ कह्यौ । भालो भाभरालो[14] देपीयो निवलो ले जायलो । रावलजी लोहारानै परची दिराई । भालो भजायो[15] ।

रावलजी सोनिगरी गमाय बैठा[16] ।

---

१ साभलियो – सुना ।
२ भालो घडो – भाला बनाओ ।
३. एथ – यहा ।
४ तरा बैठा – तब सभी लोहार चिन्तित हो बैठे ।
५ मिरधारी – मिरधा नामक व्यक्तिकी (?) ।
६ डावडी–लडकी ।
७ मैनतरा – सहिनतके ।
८. उरा ल्यौ – पासमें लो ।
९ जाव देसु – जवाब दूगी, उत्तर दूगी ।
१० पूपता – पुरुता, परिपक्व, वृद्ध ।
११ मोटीयार – जवान, युवा ।
१२. पूठो – पीछेसे, वापस ।
१३ वावै – चलावे ।
१४. भाभरालो – वडा, जबरदस्त, भाभरा नामक क्रोधी भूतकी कथा प्रसिद्ध है ।
१५. भंजायो – तुडवाया ।
१६. गमाय बैठा – खो बैठे ।

सोनिगरीरै दोय बेटा हूवा। वीरमदेजी नै कागद आवै नै जावै। भाई बैहनरे घणो हेत[1] छै।

वरस १० वीता तरै वीरमदेजीरै छोटी बैहन तिणरा नालेर दहीयानै मेलीया। साहो थाप्यौ[2]। निवाजीनै चावल मेलीया। प्रोहितनै मेलनै बाई वीरमतीनै गढ जालोर ले आया। दिन ५ साहा आडा था[3] तरै वीरमदेजीनै बैहिन कह्यौ। थाहरा बैनोइनै बुलावो ज्यु थाहरै नै उणारै चितपात भाजै[4]। मानै अमर काचली[5] दीधी।

तरै रावजीनै पूछनै कूगतरी मेली[6]। निवोजी वाचेनै घणा राजी हूवा अोर पाछा कागल[7] लिप्या। तिणमै घणी मनवार लिपी नै वलै[8] कहीयौ। मोनै रजपूत लेपवीयो[9] पिण मोनै तो पजू पायक आयनै ले जायै तो हू मुजरो करू[10]।

इसा समाचार वीरमदजीनै कह्या। तरै पजू पायकनें कह्यौ। थे सिधावो[11]। निवाजीनें लें आवौ।

तरै पजू कयो। ये देसोत[12] छो। मन माहै दगो[13] रापो तो मोनै मेलो मती[14]। पछै आपण रस[15] रेहसी न्ही।

---

१ हेत – हित प्रेम।
२ साहा थाप्यो – विवाह लग्न निश्चित किया।
३ आडा था – सामने थे, शेष थे।
४ चितपात भाज – मनोमालिन्य दूर हो।
५ अमर काचली – अमर सुहाग। कांचळी अर्थात आधी बांहकी चोली सुहागकी प्रतीक मानी गई है।
६ कूगतरी मेली – कुंकुमपत्रिका। निमंत्रणपत्रिका भजी।
७ कागल – कागज पत्र। राजस्थानीका अन्य रूप कागद।
८ वल – फिर।
९ लेपवीया – आलेखित किया जाना।
१० मुजरो करू – अभिवादन करू।
११ सिधावो – सिद्ध करो चलो।
१२ देसोत – देशपति।
१३ दगा – दगा, धोखा।
१४ मोने मेलो मती – मुझे मत भेजना।
१५ रस – आनन्दमय सम्बन्धसे तात्पर्य है।

तरै वीरमदेजी पजूनै वचन वोल दैनै निवाजी कनै मेलीयो ।

पजूनै निवै घणो आदर सनमान देनै वीजै दिन[1] चढीया सो लग्नरै दिन जालोर आया । राव कानडदेजीसु राणगदेजीसु वीरमदेजीसु जुहार कीधो । डेरो दिरायो[2] । मोदी भलायो[3] ।

दहीयो परणीयो तिणरो[4] महिल गढ माहे करायो । वीरमदेजीरै नै निवाजीरै घणो हेत । पजूपायक नीवाजी कन्है वैठो रहै[5] ।

एक दिन राजडीयारो वेटो वीजडीयो वीरमदेजीरी पवासी करै छै[6] । तिसै वापरो वैर याद आयो तरै आप भरी[7] । तरै देपनै वीरमदेजी पूछीयो । क्यु तोनै कीण दूप दीन्हौ[8] ।

तरै विजडीयो मुजरो करनै वोलीयौ । कवरजी राज सरीपा धणो[9] । तिणसु मोनै दूप कुण दै । पिण निवो सेवालोत धणीयारो हासो[10] करावै नै आप ही करै । वलै गढ माहै पैपारो करैनै पोढै[11] । तिका मन माहै आई ।

तरै वीरमदेजी कह्यौ । म्है पजूनै वाह[12] दीनी छै तिणसु काई कैहणी आवै न्ही । थारै वापरै वैरमै मारै तो मार उतार ।

इसो सुणनै वीजडीयै कयौ । धणीयांरा माथै हाथ छै तो सागै[13]

---

१ वीजै दिन – दूसरे दिन ।

२. डेरो दिरायो – ठहरनेका स्थान दिलाया ।

३ मोदी भलायो – भोजनादि सामान इच्छानुसार ठिकानेकी ओरसे देते रहनेके लिये मोदीको (दुकानदारको) ताकीद की ।

४ तिणरो – उसका ।

५ दहीयो परणीयो वैठो रहै – पाठ ग प्रतिमें नहीं है ।

६ पवासी करै छै – पासमें रह कर सेवा करता है ।

७ आँप भरी–आँखोमें आँसू भरे ।

८, क्यूं दीन्ही – क्यो ? तुमको किसने दुख दिया ?

९ धणी – स्वामी ।

१० हासो – हँसी ।

११ पोढै – सोता है ।

१२. वाह – वचनसे तात्पर्य है ।

१३ सागै – वास्तवमें ।

मारू तो चाकर । इसो मचकूर[1] करने उठीया ।

तिमै बीजै दिन वीरमदेजी गोठरी[2] तयारी कीवी । तरै निवोजी वीरमदेजो पातीयै[3] वैठा । तिसै वीरमदेजीनै कानडदेजी बुलायो । तिसै उठता थका कह्यौ । वीजडीया पुरसगारो[4] करै हु आयो ।

तिमै बीजडीयारा हाथम वीरमदेजीरो खाडो[5] हूतो सो नीवाजीनै वायो । आध नेत्र सहीत माथो तूट पडीयो ।

थाभारै ओलै वीजडीयो उभो[6] तिसै नीवेजी तरवार वाई[7] सो थाभो कटेनें वीजडियारा दोय टूक हूय पडीया । तरै चारण कहै ।

दूहो

नही नहतै वाह, नर थाभो निंभोडीयो[8] ।

निबडा तणै नेठाह[9], मार्यो बिजडीयो मुणस[10] ॥१

तिसै गढ माहे हाको हूवौ । नीबाजीरा साथरै गुलीवढ तरवारा थी[11] तिणासु काई सभीयो न्ही[12] । साथ सगळो[13] ही नीवाजी कन्है

---

१ मचकूर – निश्चय (?)

२ गोठरी – गोष्ठिकी प्रीतिभोजकी ।

पातीय – पातीय पर भोजनके लिये पंक्तिबद्ध बठनेके लम्बे वस्त्रको पातीया कहते हैं।

४ पुरसगारा – भोजनके विविध पदार्थ सामने रखना ।

५ खाडो – खड्ग (स) विशेष प्रकारकी दुधारी तलवारको खांडो' कहा जाता है ।

६ थाभारै उभा – स्तंभकी ओटमे बीजडीया खडा था ।

७ ग प्रतिमें यह पाठ है – तिको नींबाजीरो माथो अलगो जाय पडियो न बीजडियो थांभार उल आय गयो । तदि नीबेजी आपरी तरवार माय पडिय पछ आडी वाही ।

८ निभोडीया – काट दिया ।

९ निबडा तणै नेठाह – नींबाजीकी हठ वीरता ।

१० मुणस – मनुष्य । ग प्रतिमें दूहका पाठ इस प्रकार है–

वही वही त वाहि नर थांभो नीभोडियो ।

नीवडा तण नठाहि मरिय बीजडिय मुणस ॥१

११ गुलीवढ तरवारा थी – गुलीवढ (?) तलवारें थीं । ग प्रतिमें नींबाजीरा तरवारा थी के स्थान पर यह पाठ है–नींबाजीरा साथ उमरावांरा हथियार सिकलीगरर दीधा था सठ गुलरो बाढ दिरायो थो ।

१२ सभीयो न्ही – बना नहीं सफलता नहीं मिली ।

१३ सगळा – समग्र सारा ।

पडीयो । सोनिगरा बेटा दोनु ही लेनै थिणलै आई ।

ओ चूक पजू पायक सुणीयो । तरै घोड़ै चढ नीसरयो । सो दीली अलावदी पातिसाहसु[1] मिल्यो । पातसाहनै सिरूंरा घाव डाव[2] सीखाया । तरै पातसाह रिझीयो[3] ।

एक दिन पातसाहसु रमता कह्यो । A अरु वै[4] पजू तो बराबर खेलै तैसो कोई पातसाहीमै है कै न्ही । तरै पजू कह्यो । जालोरमै कांनडदेरा बेटा वीरमदे मोनै वी कुछ सरस है[5]।

तरै जालोर परवाना मेल्या[6] । कानडदेजी परवांना वाच्या[7] ।A घणो सोच हुवो नै जांण्यो औ पजूडारा काम छै[8] । पातसाहसु जोर लागै न्ही[9] ।

सपरो[10] मोहरत सपरा श्रावण[11] हुआं असवार हजारदसु[12] चढीया सो दीली आया । पातसाहनै मालम हुई । अवपासमै[13]

---

१ अलावदी पातिसाहसु – अलाउद्दीन बादशाहसे ।

२. सिरूंरा घाव डाव – सिरके अर्थात् उच्च श्रेणीके अथवा शूरके, आरंभके (?) घाव-दाव ।

३. रिझीयो – प्रसन्न हुआ ।

४ वै – सम्बोधनके लिये खड़ी बोलीका हीनतासूचक प्रयोग ।

५ मोनै · सरस है – मुझसे भी कुछ बढ कर है ।

६ परवाना मेल्या – एक प्रकारका पत्र, आदेशपत्र भेजा । ग प्रतिमें आगे यह पाठ है—'तिण माहे लिखियो, तोनै हो सिरदार हजूर आवज्यो नहीतर हमकू फेरा दिरावोगे ।'

७ वाच्या – पढा (वाचन–स) A–A प्रस्तुत अशकी राजस्थानी मुसलमान पात्रोंसे सम्बद्ध होनेसे खड़ी बोली प्रभावित है ।

८ ख प्रतिमें यह पाठ है—'औ पजूरा चाळा छै । तरै तोनै ही आलोच्यो । जो बैस रहीजै तो दिल्लीरा धणीसू पोच आवां नही । नै हजुर गयां काई वात झूठी साची रफै दफै करिस्या, यौं जाण घोडा हजार १ री गाठ करि सवरै मोहरत सपरा सावण चढीया ।'

९ पातसाहसुं · न्ही – बादशाह पर बलका प्रयोग नहीं किया जा सकता ।

१० सपरो – अच्छा ।

११ श्रावण – श्रवण, सुने जाने वाले शकुन (?)

१२. हजारदसुं – सहस्त्रार्द्ध (स.), आधा हजार, पांच सौ ।

१३. अवपासमै – आम खासमे । मुगल सम्राटोके दो दरबार होते थे । दीवान-ए-आम और २ दीवान-ए-खास ।

बुलाया। दोनु भाई नै वीरमदेजी मुजरो कीधो। पातसाह डेरो[1] दिरायो।

एक दिन पातसाह रमणरो[2] हूकम वीरमदेजीनै दीयो। उमराव रेतीमैं[3] उभा छै[4]। पजू पगाग अगुठा नीचै पाछणौ[5] बाधीयो छै।

तिसै वीरमदेरी मा अपछरा वीरमदेनै कह्यौ। तू पाछणौ बाधनै रमै। उणग डाव हू टाल देसु नै थार हाथे पजू मरसी। हिवै दोनु जणा[6] रमै छै।

तरै कानडदेजी राणगदेजी उभा भजन करै छै। तिसै कूकडाझट[7] पेलता वीरमदे पाछणो काळजानै चलायो। घणा राजी हूवा[8]।

हमेस पातसाहरी हजुर आवै। तिन वीरमदेजीरै पगारी मोजडी[9] करणरो हूकम मोचीनै दीयो[10]। मोती लाल चुनी कलावतू मकतूल मूपमल देनै मोचीनै सीप दीधी।

मोची परवाण[11] माफक मौजडी करै छै। तिसै पातसाहरी असाह[12] बेगम तिणरी छोकरी मोजडी मोची कन्है करावणनै आई थी। तिण मोजडी देपनै पूछीयो। या मोजडी किणरी है। तरै मोची कह्यौ–कवर वीरमदेरी मोजडी छै।

---

१ डरो – ठहरनका स्थान।
२ रमणरो – खेलनेका।
३ रेतीम – रेत पर खाली जमीन पर।
४ उभा छ – खड़ ह।
५ पाछणो – शस्त्र।
६ दोनु जणा – दोनों व्यक्ति।
७ कूकडाभट – मुर्गेका वार (?)
८ ख प्रतिमें यह पाठ है— तिस दोनूं धमतां २ वीरमदे इसो डाव पेल्यो तिको ऊछलतो सांम कालजा माहे पजूर दीधो। तिको प[ये]ट फाडि घांत ऊभ्र फेफरा निकल दूर हुवा। धरती पडीयो। पातिसाहजी क्यु मनसायो। पिण पेत माहे घाय डाव मोटीयारगो फुरत तिणसु कष कह्यौ नहीं।'
९ मोजडी – मोचड़ी, जूती।
१० मोचीन – जूती बनाने वालको।
११ परवांण – परिमाण नाप।
१२ असाह – सम्भवत बगमका नाम है।

तरै मोजडी साह वेगमनै दिपाई। तरै छोकरीनै कह्यौ तिण कवरनै देपने आव तरै उडदावेगण[1] वीरमदेने देपनै राजी हुई। सागै गेहणी जलाल छै[2]। पातसाहोमै हूवै तो बताउ। तरै छोकरीनै कह्यौ दरवार आवै तरै मोनै दिपावै।

तिसै दूसरै दिन दरवार आवता वेगमनै विरमदे दिपायो। तिसै कवरने देपने सनेह जागोयो सो पुरवला भवरो पावद छै[3]। वासलै भवै[4] कासी वाणारसी माहै एक साहूकार तीणरै एकाएक वेटो। जवान हूवो तरै परणायौ[5]। तिसै एक दिन सपाडो करता[6] मुहडा आगै वहू उभी छै[7]। तिण समीयै आधी आई। तिसै असतरी घर माहे गई। साहूकाररो डील रजसु भरीयो। तरै जाणीयो असत्री माहरा जीवरी न्ही[8]। रीसमै[9] उठनै कासी करवत छै तठै गयो। करवत लेतां कह्यौ। आधा अगरो इणहीज साहूकाररै घरै पुत्र होज्यौ। डावा अगरी अरधंग्या होयजो[10]। असत्री तो वेह हूई[11]।

उण साहूकाररै पुत्र उपनौ[12]। आधा अगरी असत्री हूई सो परणीयो। एक दिन वलै[13] सपाडो करतां आधी आई। तिसै असत्री आपरा वसालूसु[14] लपेटीयो। तरै साहूकार हसीयो। साहजी क्यु

१. उडदावेगण – उडदा नामकी वेगम (?)
२ सागै · जलाल छै – वास्तवमें गहाणी जलाल है। 'जलाल' एक राजस्थानी प्रेमाख्यानका नायक है। विशेष जानकारीके लिये 'मरुभारती' पिलानी. वर्ष ६ अङ्क ३ में प्रकाशित मेरा एतद्विषयक निबन्ध अवलोकनीय है।
३. पुरवला · पावद छै – पूर्व जन्मका पति है।
४ वासलै भवै – पिछले जन्ममें।
५ परणयो – विवाह किया, (स. परिणय)।
६. सपाडो करता – स्नान करते।
७ मुहडा उभी छै – मुंह आगे वहू खडी है।
८ तरै जाणीयो जीवरी न्ही – तब जाना स्त्री मुझसे प्रेम नहीं रखती।
९. रीसमै – रोषमें, क्रोधमें।
१० डावा होयजो – बायें अगकी अर्द्धांगी-स्त्री होना।
११ वेह हूई – विधवा हुई (?)
१२ उपनौ – उत्पन्न हुआ।
१३ वलै – फिर।
१४. वसालूसु – सालूसे, दुपट्टेसे।

हसीया। तर कह्यौ गोपडै[1] बठी थाहरी जेठाणी छै। माहरी असतरी छै। अवार वालो[2] समयो थो। तरै आप दोड घर माहे गई। हू रस[ज]सु भरीयो। तरा करवत लेता माग्या था सो आधा अगरा आप हूवा छो। तरै अै जतन कीवा।

आगनी असतरी सुणनै मेहलसु उतरनै करवत लीन्हौ। करवत लेता कह्यौ। इणहीज भरतारनी असतरी होयजो। इतरो केहत पाण[3] धरती पडी सौ पडता गायरो हाड पगै लागौ[4]। सौ अलावदी पातसाहरै घरै जामो पायो[5]। साहूकाररा बैटानै कह्यौ थारी भोजाई नेम धारनै[6] करवत लीधो। तरै माहरै बैटौ [ट] करवत लेता कह्यौ। मोटा रावजीरै घर जामो पावज्यो। इण असतरीरो वाड काटो[7] देजो मती। देह छाडत पाण जालोर गढै कानडदेजीरै कवर वीरमदे हूवै। तिणसु नेह वधाणो।

तरै बेगम पातसाहनै अरज कीधी। मैरो व्याह वीरमदेसु करो। भला खूब है[8]।

एक दीन पातसाह अवपासमै विराजीया छै[9]। तिसै कानडदेजी आया। पातसाह घणो सनमान देने बतलाया[10]। कानडदे वीरमदेनै हमारी लडकी दीवो[11]।

---

१ गोपड – झरोखमें।

२ अवार वालो – अभी वाला अभी जसा।

३ इतरा केहत पांण – इतना कहते ही।

४ गायरो पग लागी – गायकी हड्डी परों लगी।

५ जामो पाया – जन्म प्राप्त किया।

६ नम धारन – नियम धारण कर।

७ वाड काटा – सम्बन्ध रूपी दुख।

८ मरो व्याह खूब है – इस अंश पर खडी बोलीका प्रभाव अवलोकनीय है। ख प्रतिमें 'मरो व्याह खूब है' के स्थान पर यह पाठ है—'म वीरमदे सोनिगरान कबूल कीधो। मरा व्याह तिका करो। मरा खावन्द सिरमौर जालोरका धणी है। पातिसाह कह्यौ–बेगम ऊ तो हिंदु है। मेरी तरफस गाढ भाति २ सु करिस्यु विण भलो तो पुदाईव हाथ है।'

९ विराजीया छ – बैठ हैं।

१० घणो बतलाया – बहुत आदर दे कर बातचीत की।

११ हमारी लडकी दीधी – अपनी लडकी दो खडी बोली और राजस्थानी भाषाका मिश्रण अवलोकनीय है।

तरै कानडदेजी कह्यौ । हम तो हजरतकं नोकर है ।[1] तरै पातसाह घणो हठ कीधो । तरै कानडदेजी कह्यौ नां हजरत मै न जाणु । वीरमदे जाणै । उणरी रजावधीरी वात छै । तरै पातसाह इनाम देनै वीदा कीधा ओर कह्यौ । सवा वीरमदेकु ले आईयो ।[2]

कान्हडदेजी डेरे आया । रांणगदेजी वीरमदेजीने हकीगत कही । तरै वीरमदेजी कह्यौ । रावजी कबुला न्ही[3] तो पातसाह[4] अठे हीज मारै । हूं पातसाहसु वात कर लेसु ।[5]

प्रभात हूवां कान्हडदेजी राणगदेजी कवर वीरमदे पातसाहरे हजुर[6] गया । मुजरो करनै बैठा । तिसै फूरमायो । वीरमदे तुम हमारी लडकी व्याहो । वीरमदे सलाम करनै कह्यौ । हजु[ज]रत सलामत मे तो घररा धणी[7] रजपूत छा । साहिजादी माहरा घरां लायक न्ही । पिण हजरत फूरमावै तौ सिर ऊपर कबूलायत छै[8] । पिण जालोर जाय जान करनै[9] पातिसाहारै घरै आवा तिसौ म्हा कन्है[10] पजांनो न छं । तिणसु नाकारो[11] कीजै छै ।

इसो सुणनै पातिसाह १२ लाप रुपीया दिराया । तीन वरसरी सीष दीधी । हिदू गीराहमै परणावेंगे[12] । सताव[13] आईयो । सीप दीन्ही ।

---

१ ख. प्रतिमें यह पाठ है–पातिसाह दीन दुनीरा छो । हु पादरीयो घररो धणी रजपूत छु । पातिसाहांरा सगा वलक रोम सुम विलायतरा धणी छै । हु तौ वदगी करूं छु ।

२ सवा · आईयो – सुवह (?) वीरमदेको ले आना । 'आईयो' ग्राम्य हिन्दीका विशेष प्रयोग है ।

३. कबुला न्ही – स्वीकार न करें ।

४. ख प्रतिमे पातसाहके स्थान पर 'तुरकडौ' पाठ है ।

५ वात कर लेसु – वात कर लूगा ।

६ हजुर – दरबारमें ।

७ धणी – स्वामी ।

८ सिर छै – सर पर धारण करने योग्य है, आज्ञा स्वीकार है ।

९ जान करनै – बरात चढा कर । 'जान' शब्द सस्कृत 'यान' का अपभ्रश है ।

१०. म्हा कन्है – हमारे पास ।

११ नाकारो – मना, नाही ।

१२ हिंदू · परणावेंगे – हिन्दू ग्रहोमें विवाह करेंगे ।

१३ सताव – शीघ्रतासे ।

तगा साह वेगम पातिसाहनैं कह्यौ । हजर[त] कान्हडदे वीरमदेनैं सीप द्यो । इणका चचा राणगदेकु ओलमे[1] रपो । हिंदू है आवै कै नावै ।

पातिसाह कह्यौ पूव कही ।

कान्हडदे सोनिगरो सीप मागणनै आयौ तरै पातसाह कह्यौ । भाई राणगदेकु हमारै पास रपो । कानडदेजीरो घोडो देवासी[2] छै । आसो चारण नै एक पवास तीजा राणगदेजी । अै तीन जणा रापैनै चालीया ।

तरै राणगदेजी कह्यौ । ठाकुरा आगैं तो सोनारो पोरसो[3] छै नै वारै लाप रुपीया ले जावा छौ तिणरा गढ करावजो । आपणं तो पातिसाहसु नावो करणो छै[4] । मोनैं वेगो[5] समाचार देजो ।

इसी वात ठहरायनैं कूच कीधो जालोर पोहता[6] । सपरो[7] मोहरत जोयनैं गटरी राग दीधी[8] । गढरी ताकीदी कीधी ।

वासैं तगा मीलकरी[9] हवेलीमे राणगदेजीनैं रापीया । राणगदेजीरो जाप्तो कीजो । आसो चारण पईसा २ भर अमल[10] लीया करै । राणगदेजी अमल कर कमर वाधनैं भीया[11] घोडा उपरै चढै नैं पुरी करावै तरै अमल उगै[12] ।

राणगदेजी दिन ५ ऽ ७ पातसाहरैं मुजरैं जायैं पातिसाह घरारा

---

१ ओलम – बधक रूपमें ।
२ देवासी – देव-स्थानका ।
३ पोरसो – पारस पत्थर ।
४ नावो करणो छै – नाम अर्थात सघर्ष करना है ।
५ वेगो – शीघ्र वेग (स) ।
६ पोहता – पहुंचे ।
७ सपरो – श्रेष्ठ अच्छा ।
८ गढरी राग दीधी – गढ़ निर्माणका कार्य प्रारंभ किया ।
९ तगा मीलकरी – नजरबन्द करने वालेका नाम है ।
१० अमल – अफीम अहिफेन (स) ।
११ भीया – घोड़ेका नाम ।
१२ अमल उगे – अफीमका नशा आवे ।

समाचार पूछै। तरै मास २ ऽ ३ गढ जालोर पोहतांरा[1] समाचार आया वले आवसी। तरै पिण हजरत वीरमदे दोड गयो थो सो दोड पिण गयो न्ही नै सेहर पीण गयो न्ही तिणरो घणो सोच छै[2]। च्यारै दिस आदमी दोडीया छै। एसा समाचार आया। वले आवसी तरै मालम करसु[3]।

मास १ ऽ २ नै वलै पूछीयो। तरै कह्यौ काइ पवर न्ही। पातसाहरा मुहडा आगै नाकरो न कर सकै पिण परो गयो दीसै छै। मांहरै घरमै इतरोइज चादणो हूतो[4]। इसी वात पातसाह आगै कही। वीरमदे भागो सो गम न्ही[5]।

तरै साह वेगम वे[वो]ली। हजरत काफर वैह नावणाया[6]। पातसाह सलामत रांणगदेका जावता करीयो। इणकै तांई पवर है[7]। पातसाह तोगवैसो छोडयौ[8]।

तिण समीयै वलकरै पातसाह अलावदीनै भैसो १ निपट मातो मेलीयो[9]। जिणरा सिघ[10] पूठो ढांकनै पूछडै जाय लागा छै। तिको भैसानै झटकासु मारज्यौ। जवै[11] करो मती।

दिली आया। पातसाहसु मिल्या। परवाना दीधा। हकीकत वाची। भैसौ मारणरै वासतै पातसाह दरीपांनो[12] करैनै विराजीया[13]। मीरजादा जवांनानै हुकम कीया सो भैसा उपरै थेट

---

१ पोहतारा – पहुंचनेके।
२ तिणरो घणो सोच छै – उसकी बहुत चिन्ता है।
३ वले करसु – फिर आवेंगे तब निवेदन करूगा।
४ इतरोइज···हूतो – इतना ही प्रकाश था।
५. वीरमदे · न्ही – वीरमदे भागा जिसका दुःख नहीं।
६ वैह नावणाया – दोनो नहीं आनेके है।
७. इणकै ताई पवर है – इनको सूचना है।
८ तोगवैसो छोडयौ – पैरोमे बेडी पहिनानेकी आज्ञा दी। (?)
९. निपट मातो मेलीयो - बहुत मस्त भेजा।
१०. सिंघ – सींग।
११. जवै – जिबह, हलाल।
१२. दरीपानो – अनौपचारिक बैठक।
१३ विराजीया – बैठा।

पुरसाणरा पाडा तूट पडीया[1]। पठाणजादा हार छूटा। भसो मरै न्ही। मास ५ ऽ ७ रापेनें सिरपाव देनै पाछी सीप दोधी। सो हालत[ता] हालता[2] जालोर आय उतरीया।

तिसै वीरमदेजी वाग पधारता था नै विचै जमराणारो देठालो हूवो[3] नै भैसारो तमासो देपनै वीरमदेजी उभा रहीनै[4] पूछीयो। मीया भैसो कठै ले जावो छौ।

तरै सिपाई बोलीया। बालकरै[5] पातसाह दिलीरा पातसाह कहै मारणनै मेलीयो थो सो किणहीसु मुवो न्हीं[6]। पातसाह न्ही है पटैल[7] राज करै छै।

इसो साभलनै[8] वीरमदेने रीस चढी[9] तीको पूठासु[10] आयनै तरवार व [वा] ही सीगा नै पूठा विचै तिणसु माथो तूट पडीयो। वलकरा सिपाई वाह २ कहिनें वीरमदेनै देपता हीज रह्या।

भसो मारनै वीरमदेजी गढ सिधाया[11]।

भसा वाला सिपाई पाछा दिली आया नै भैसारो माथो पातिसाहनै दिपायो। तरै कहीयो हजरत एसा सिपाई हजूरमै रापीजै। वीरमदे कवर भैसानै मारीयो सो जाणीजै बकरानै लोह कीधो[12]।

पातसाह पुस्याल हूवा[13]। वलकरा सिपाइ वलक गया।

---

१ पेट तूट पडाया – ठेठ खुरासानके खांड टूट पडे। खाडा = एक प्रकारकी तलवार, जिसके दोनों ओर धार हो।

२ हालत हालता – चलत चलते।

३ विच हूवो – बीचमें यमराजरूप (भसेसे तात्पय है) सामना हुआ।

४ उभा रही न – खडे रह कर।

५ बालकर – बलसके।

६ किणहीसु मुवो न्ही किसीसे मरा नहीं।

७ पटल – किसानोंका मुखिया।

८ सांभलन – सुन कर।

९ रीस चढी – क्रोध आया।

१० पूठासु – पीछेसे।

११ सिधाया – चल।

१२ बकरान लोह कीधो – बकरेको मारा।

१३ पुस्याल हूवा – प्रसन्न हुआ।

दूहौ – सुध पूछै सुरतांण, कोलाहल केहो कटक।
कै हाथी ठांण उथंडोयौ[1], कै रीसवीयौ रांण[2] ॥ १

पातसाहनै मालम हूई। तगानै मारनै राणगदे भागो। लारै तो बावीसी[3] विदा कोधी नै कह्यौ। तुमारै लार मै आया। जलदी करीयो। जाण न पावै[4]।

दिलीसु रांणगदेजी घडी ४ दिन चढतै नीकल्या सो रात घडी ४ थाकतां[5] सोझतसुं कोस ९ आथवणी कांनी[6] आया।

तरै डोकरी[7] १ गोबर वीणती[8] थी तिणनै पूछीयो। डोकरी तै कांइ वात सुणी। तरै डोकरी कह्यौ। वेटा ! राणगदै तगानै मारनै निकलीयो। वासै[9] बावीसी चढी छै।

इतरो सुणनै राणगदेजी कह्यौ। फिट झीथडा[10]। तो पैहला वात आई।

फिटकारो सुणतां घोडारो प्रांण छूटो तिणरै नाम गाव झीथडो कहीजै छै। आगै तो तूरकारी ढांणी थी। आगै सिकोतरीनै[11] कह्यौ।

---

१. कै · उथडीयौ – या तो हाथी अपने स्थानसे छूट भागा है।
२. कै रीसवीयौ राण – अथवा राणगदे क्रोधित हुआ है।
३ वावीसी – सेनाकी बाईसो टुकड़ियां। बादशाहो और राजाओंके यहा विविध महक्मो के २२ विभाग रखनेकी प्रथा रही है।
४. तुमारै लार···न पावै – प्रस्तुत अश पर खड़ी बोलीका प्रभाव है।
५ थाकता – थकते हुए।
६ आथवणी कानी – पश्चिमकी ओर। राजस्थानी भाषामें चारो मुख्य दिशाओके नाम इस प्रकार हैं– १ ऊगमण (पूर्व), २ आथमण (पश्चिम), ३ धराऊ (उत्तर), ४ लङ्काउ (दक्षिण)।
ख प्रतिमें 'रात·· कानी आया' के स्थान पर यह पाठ है–'राति घडी ४ पाछली थकां रोहीठ गांवसु उरै कोस ४ एक गांव आयौ'।
७ डोकरी – वृद्धिया।
८ वीणती – चुनती, एकत्रित करती।
९ वासै – पीछेसे।
१० फिट झीथडा – झीथडा घोडे ! धिक्कार है। झीथड़ा गांव जोधपुर डिविजनमें है।
११. सिकोतरीनै – शाकिनी (एक प्रकारकी तांत्रिक स्त्रीको) अथवा शकुनोत्तरी, भविष्यवाणी करने वालीको।

मोनै जालोर पोहचावणो । रोहीठसु उलीका न्ही[1] । कोसा चार गाव ढाहरीया सासण[2] राणगदे सोनिगरै दीधी ।

उठासु गढ जालोर पोहता[3] । कान्हडदेजीसु मिलीया । दिलीरी हकीगत सारी ही कही । गढरो घणो जावतो करणो । रजपूतारो बारै वरसारो रोजगार चुकाय दिन्हो नै कह्यो । गढरी सरम थाहरै भुजै छै[4] । गढ घणो फूटरो[5] दीसै[6] त्यू करणो ।

तरै रजपूत बोलीया । रावजी सलामत । राजगे लूण घणो फूटरो दिपावसा[7] ।

साह वेगमने साथे लनै पातिसाह ाप १ घोडासु जालोर नेडा[8] कोसा ४ उरे[9] डेरा कीधा । मोरचा लगाया । नालीया चाढी[10] । गढरै ग्रास पास फोजा लागी[11]।

वरस १ राड[12] हुई । गढ हाथ ग्रावणरो ढग कोई न्ही । तरै पातसाह वेलदार[13] ५०० बुलायनै गढरै सुरग दिराई ।

---

१ रोहिटसू उलीका न्ही – रोही को (जगल प्रदेशको) उलांघे नहीं (?)

२ सासण – शासन, दानमें दी हुई जमीन ।

३ पोहता – पहुचे । ख प्रतिमें पाठ इस प्रकार है–तर सीकोतर सांपलो हुईन कह्यो म्हारी पूठि ऊपरा चढो । तर राणगदे पूठ ऊपरा चढो न सीकोतरि उडी तिका रात घडी २ पाछिली थका गढ माहे मेलहीयो । सोकोतरी पाछी ग्राई । तठा पछ भोपडारो थडो कराय भोपडार नाम गाम वसायो तिको ग्रबाए कुवाजोरो भोपडो कहीज छ ।'

४ गढरी भज छ – गढकी लज्जा तुम्हारी भुजाग्रों पर ह ।

५ घणो फूटरो – बहुत ग्रच्छा, श्रेष्ठ ।

६ दीसै – दिखाई दे ।

७ राजरा दिपावसां – ग्रापका खाया हुग्रा नमक बहुत ग्रच्छी तरह दिखावेंगे ।

८ नेडा – समीप ।

९ उरे – इधर इस ग्रोर ।

१० नालीयां चाढी – तोपें चढाई गई । तोपें मुख्यत मुगलकालीन युद्धोंमें प्रचलित हुई थी ।

११ ख प्रतिका पाठ इस प्रकार है–'जर घडी २ नालां सो जू[क]ट जूतै तिसो सईकडांबंध लीधी । जिके दोय मण तीन मणरो गोलो पाय । हाथी पूर टल्ला दे तर पिस तिसो नालां लीधी । ग्रोर नालांरी किसी गणत छ । ग्रगन वरस । इसी भांतिसु फोजरो घणारो लीयां गढ लागा । साह वेगमरो चकडोल साथे छ ।'

१२ राड – राड, लडाई ।

१३ वलदार – भवन निर्माणमें काम करने वाले मजदूर ।

तिण समीयै उमादै राणी थाल माहं मोतीयांरो हार पोवती थी सो सुरगरो धको लागो । सो मोती पडहडीया[1] ।

तरै रांणी जायनै वीरमदेजीनै कह्यौ । अठै सुरंग लागी दीसै छै । तिसै तेल मण हजार उनो करायने[2] तइ[3] कीधो छै । तिसै सुरंगमै बारी हूई तिणमै तुरत उन्हो तेल नवायो[4] । तिको पालो[5] साथ ३०००० तेलसुं वल भस्म हूवा[6] ।

तरै वीरमदेजी जांणीयो इण मोरचै गढ भीळसी[7] । कंवरजीरै रसोडै रजपूत जीमं तिकै सोनारा थाळमे जीमें । चलू करनै[8] उठ जायै । वाघ वानर जीमै थाली मंजायनै थाळरै चिबठीरा ठोलारी[9] मारै सौ आगल २ री टीकडी उड पडै । सोनार सांधै[10] । तिसे कवरजीनै रसोडदार कह्यौ । वाघ वांनर मनमै पोरस[11] घणो जाणै छै । हमेसा थाल भांजै । रसोडदारनै रीस करनै परो मेलीयो[12] ।

पछै वाघ वानरनै वुलायनै सूरगरो मोरचो दीधो । पिण कवरजी एक अरज छै । लोह एक वार चलावसु[13] तिण वास्ते तरवार कटारी हजार २ ऽ ३ मो कन्है मेलावो[14] पछै रजपूतरा हाथ देपीजै । इसी

---

१. मोती पडहडीया – मोती हिले, मोती चलायमान हुए । यह प्रसङ्ग ख. ग प्रतियोमें नहीं है ।
२ उनो करायने – गरम करवा कर ।
३ तइ – तैयार, बहुत गरम ।
४. नवायो – नहाया, बहाया ।
५. पालो – पैदल सिपाही ।
६. यह प्रसङ्ग ख. और ग. प्रतियोमें आगे दिया गया है ।
७. भीळसी – नष्ट होगा ।
८. चलू करनै – आचमन कर, पानीसे मुंह साफ कर ।
९. चिबठीरा ठोलारी – अगुलीके जोड़के उठे हुए भागकी ।
१०. सोनार सांधै – सोनी जोडता ।
११. पोरस – पुरुषार्थ ।
१२. यह प्रसङ्ग ख. और ग प्रतियोमें नहीं है ।
१३. लोह'' चलावसु – एक हथियारका प्रयोग एक बार ही करूंगा ।
१४. मो कन्है मेलावो – मेरे पास रखवाओ ।

वात सुणनै वीरमदेजी मनमें रापी[1]। अलावदी पातसाहनै १२ वरस हूवा गढ भिलै न्ही[2]।

किणहेक पातसाहनै कह्यौ। हजरत गढ माहै सामान नीठीयो दीसै छै[3]। आ पबर वीरमदेजीनें हुई। तरें दूधरी पीर करायनै दोना भरनै फोज दीसा नापीया[4]।

तिरै पातसाह देपनै कह्यौ। मैंरा बैटा काफर अजसैं[5] तो गढमे पीर पावै छै। सामान वोहत वरसके है।

पातसाह पाछो कूच कीधो। मोरचा उठाय दीया। जालोरसु कोस ४ उपरै डेरा दीधा। दुजैं[6] दिन पडप भवराणी डेरा हूवारो हलकारै[7] आयन कह्यौ।

तरैं गढरी पोल पोलनै सैंदाना[8] वागा[9]। दरीपानो कीधो[10]। जाचक जिन[11] विरद बोलै छै। तिसै गोठ[12] तयार हूई। तरैं सारो ही साथ जीमै छ[13]। वीरमदेजी ने वेंनोई[14] दहीयो भेला जीमे छै।

आगै दहीया २ मूल दीया था। तिकारा मुहडा आमा सामा देपनै

---

१ यह प्रसङ्ग ख और ग प्रतियोंमें आगे दिया गया है।
२ भिल न्ही – नष्ट नहीं होता विजित नहीं होता।
३ नीठीयो दीस छ – समाप्त हुआ दीखता है।
४ फाज दीसा नांपीया – फोजकी ओर डाले। ख प्रतिका पाठ इस प्रकार है 'तर वीरमदे[रो]कूतरी ब्याई थी तिकारो दुध लन पीर कराई। तिक पातलांर पोर लगायन ल्हसकर दोसी नांपी।'
५ अजस – अब तक।
६ दुज – दूसरे। स द्वितीय गुज बीजा।
७ हलकार – सवाददाताने।
८ सदाना – नक्कारे।
९ वागा – बजे।
१० दरीपानो कीधो – दरबार किया।
११ जाचक जिन – याचकजन।
१२ गोठ – प्रीति भोज, स गोष्ठी।
१३ जीम छ – भोजन करता है।
१४ वेंनोई – बहनोई।

वीरमदेजी मसकरी कीधी। आज दहीया मतो भुंडो करै छै[1]। सही तो गढ भेलावसी।

इसो सुणनै वैनोइ कहै। कवरजी मुवांसुं[2] किसी मसकरी करो। तरै वीरमदेजी कह्यौ। थे तो मुवांरा जीवता भाइ छौ। थे मदत करो। भायारो वैर वालो[3]। तरै दहीये कह्यौ। मोटो बोल साहिबनै साजै[4]।

गोठ जीमतां वेरस[5] हुवो। उठासु उठनै मांणस तो मारोठ परवतसरनै पोहचाया। आप नीकलनै पातसाहसु मीलीयो। हकीकत सारी कही। माहे तो सामांन पूटो। राज पाछो कूच करो। हू गढरो भेदू[6] छुं। गढ भेलावसु।

प्रभाते[7] कूच हुवो सो जालोरगढ दोला[8] डेरा दीधा। मोरचा लागा। सुरंगमै दारूरा[9] थेला भराया। पछै लगाई। सोर उडीयो। तिणसु गढरै वारो[10] हूवो।

तणी सुरंगरै मोरचै वाघ बानर बैठो छै। तिण सुरंगमै पैदल साथ चढनै गढरै वारै आवै तिणनै वाघ बानर धाव करै सो मरै। एक लोह करै। मारता मारतां हजार ४ पैदलरो गरो हूवौ[11]। सगला आवध नीठीया[12]। तुरक होकारो[13] कर करनै आया। तरै तरवार विनां

---

१ मतो भुंडो करै छै – बुरा विचार करते हैं।

२ मुवासु – मुर्दोसे, मरे हुएसे।

३ भायारो वैर वालो – भाइयोंके वैरका बदला लो।

४. ख प्रतिमें यह पाठ है 'वडा सिरदार नर नींदवीजै नही। नरांरी अणमापी राशी छै। चाहै ज्यू करै। नै म्हे तो याहरा भलचींत छां। पिण मोटा बोल तो श्री नारायणजीनै छाजै।'

५. वेरस – मनमुटाव।

६. भेदू – भेदिया, भेद देने वाला।

७. प्रभाते – प्रात कालमे।

८. दोला – चारो ओर।

९. दारूरा – बारूदके।

१०. वारो – छेद।

११. गरो हूवो – ढेर हो गया।

१२ सगला आवध नीठीया – सभी आयुध (शस्त्र) समाप्त हो गये।

१३. होकारो – किलकारी।

वाघ वानर उभो। फोज आई देपनै हाथ पछाडीयो सो वैणी माहसु[1] हाथ झड पडीयो। हाड तीपो नीकलीयो तिणसु लोह करै। तिको जाणै कटारी वावै छै। इण भात ४० ऽ ५० पाडनै[2] आप पडीयो।

तरा वीरमदे कह्यौ। आलम पना। रजपूतरो वट हिंदु पत्री धरम[3] जिण मुहडै राम जपीयो तिण मुहडै कलमो न कैहणी आवै। पिण श्रीरामजी करै सो कबूल छै[4]।"

इसो सुणनै पातिसाह बोल्या। हम तो व्याह हिंदुकै राह कबूलाया[5] था। पिण तुमारै तो नका पढणैकी दिलमै आई[6]। जावो वीरमदेकु सपडावो[7]। काजी बुलाय नका पढावो।

चाकर वीरमदेने दूजै[8] डेरै ले आया। कमर पोली। वागारा चहिरबध[9] पोलीयां। तरै आतारो ढेर हूवो नै वीरमदे नेत्र फेर दीया।

तिसै चाकरा पातिसाहनै कह्यौ। हजरत। वीरमदे पेट परनालनै[10] आया था सो भिस्तकु पोहता[11]।

आ वात वेगमकु कही। तरै वेगम कह्यौ। आलम पना वीरमदेका सिर काटनै ल्यावो। उनका सिरसु फेरा लेउगी। मैरा पैहला भवका पावद[12] है। इणकै वास्तै मै करोत लीधी। आगै छ वेला इणनै

---

१ वणी माहसु – कनाईमेंसे।
२ पाडन – गिरा कर मार कर।
३ पत्रा धरम – क्षत्रिय धम।
४ ख प्रतिमें यह पाठ है गऊ पुजा। तुलछी मांा। श्रीसालगरांमजीरो चरणा मत ल्यां। ब्रामण षटदरसणर श्राधीन रहा न जिण मुपसु श्रीराम राम जप्यौ तिण मुपमु श्रसुर मत्र कलमौ कहिणी नाय। पिण श्री परमेस्वरजी कर तिकू प्रमाण छ।'
५ कबूनाया – कबून करवाया स्वीकार करवाया।
६ ख प्रतिमें यह पाठ विशेप है साहिब एक है। राह दोह कीया है।'
७ सपडावो – स्नान करवाम्रो।
८ दूज – दूसरे।
९ वागारा चहिरबध – वागावे (एक प्रकारकी मुगल-कालीन घेरदार अगरखीक) बधन।
१० परनालन – चीर कर काट कर।
११ भिस्तकु पोहवा – भिस्तको (वहिश्तको) पहुच।
१२ पहला भवका पावद – पूव जन्मका पति।

परणी छु[1] । आ सातमी वेला[2] छै ।

दूहौ– मरूं मुंछ मटकडै[3], अवरस नांपुं झार ।
वर वसं[रू]तो वीरमदे, रहुँ तो अकन कंवार[4] ॥ १

पातिसाह आगै वात सगली[5] कही । वीरमदै नमीयो नही । वीरमदेरो माथो काटनै साह वेगम कन्है थालमै घालनै[6] ले गया ।

वेगमे सांमी[7] आई तरै मुहडो फिर गयो । तरै वेगम कह्यौ । कवरजी साहि[व] मैं तो करोत लैतां भव २ तंहीज[8] भरतार माग्यौ है नै राज इणहीज भव मांग्यौ । जे इणसुं वाड काटो देज्यो मती[9] । राज तो रुसणो जिसोहीज निरभायो[10] । हूं तो फेरा ले[11] सती होसु ।

इतरो सुणतां मुहडो फिरीयो । साह वेगम फेरा लैनै पातसाहनै कह्यौ । मोनै दाग द्यौ[12] ।

तरै पातसाह कयो । सात भवरो पांवद छै । सत करण द्यौ[13] ।

---

१. परणी छुं – विवाह किया है ।

२. वेला – समय, सस्कृत शब्द है ।

३ मटकडै – मरोड ।

४. अकन कंवार – निपट कुंवारी, कन्या ।

यह दूहा ख. और ग प्रतियोमें नहीं है ।

५ सगली – सारी समस्त ।

६ घालनै – डाल कर ।

७ सांमी – सामने ।

८ तूहीज – तुमको ही ।

९ वाड काटो देज्यो मती – वाड कांटा मत देना, एक मुहावरा है, जिसका तात्पर्य किसी प्रकारकी बाधा नहीं देनेसे है ।

१० राज तो ' निरभायो – आपने तो अपना रोष वैसा ही निभाया ।

११ फेरा ले – विवाह कर, विवाह-सस्कारमें अग्नि-परिक्रमा की जाती है ।

१२ मोनै दाग द्यौ – मुझे जलाओ, मेरा दाह-सस्कार करो ।

१३ सत करण द्यौ – सती होने दो ।

चदणरो घर करनै गोदमै धड माथो मेलनै[1] सती हूई। साह बेगमरै नै वीरमदेरै रूसणो भागो[2]। पातिसाह पाछो दिली गयो।

इति श्री वीरमदे सोनिगा[गरा]री वात सपूर्ण[3]।

---

१ मेलन – रख कर।

२ रूसणो भागो – आपसका रोष दूर हुआ। रूसणो <स रोष भागो <स भग्न।

३ ख ग और घ प्रतियोंके अन्तमें यह पाठ है वडी वढ (ग वठ) हूई। रावजीरा राजपूत हजार ८ (ग पांच) काम (ग काम) आया। हजार २ (ग दोय) लोहा पडीया न पातिसाहजीरा सिपाई हजार १५ कां[म] (ग काम) आया। हजार १० ऽ ११ लोहा पडीया (ग पडिया) वडो (ग वडो) गजगाह हुवो (ग हुवो)। इण समीयारा गीत गुण भावन घणा ही छ। पछ पातिसाह दिल्ली गयो (ग पातिसाहजी दिली गया)। सवत १३०० जालोर (घ जालोर) वसीयो। सवत १४१६ गढरी नीव दीधी। सवत १४३७ अलावदीन पातिसा (घ पातिसाह) जालोर (घ जालोर) लीधो ॥ इति श्री वीरमदेजीरी वार्त्ता सपूण।

भावन–स्व श्री सूयकरणजी पारीकने गुणगान' ग्रथ दिया है (राजस्थानी वार्ता पृष्ठ १०३)। प्रेम अथवा समान प्रकट करनके लिये रचित राजस्थानी काव्यके एक विशेष प्रकारको 'भावन' कहते ह।

ग प्रतिमें सवतवार घटनाओंका उक्त लेख नहीं है और पुष्पिका लेख इस प्रकार है इति श्री वीरमदे सोनिगरारी वात पूण।

घ प्रतिका पुष्पिका लेख इस प्रकार है—'इति श्री वीरमदेजीरी वार्त्ता सपूण ॥श्री॥ मुनि खुस्यालचद लपि कृ [कृत] सवत १८३६ वर्षे ॥ फागण वदि ११ बुधवासरे ॥ श्री गुदवच नगर मध्य ॥' आगे यह कवित्त है—

"कवित्त – किसो चद्र विण रयण, किसो पान वीण तरवर।
किसो पुरष वीण नार किसो हस विण सरवर ॥
किसो देवल वीण देव किसो दव विण पुजारो।
किसो ग्रन्थ विण वात किसो वात विण पगारो ॥
किसो खडग विण वीजो रूधा रापनसो।
कवि गद कहै हो राय हर, विण दीधां कीरतो कामी। १

पडारो – पाण्डित्य, स।

परिशिष्ट

प्रस्तुत पुस्तकमें प्रकाशित वार्ताओंने सम्बद्ध विशेष कृतियोंके कतिपय उद्धरण पाठकोंकी जानकारीके लिये यहा दिये जाते है ।

१ वगडावत–

"वगड़ावत" नामक महाकाव्य राजस्थानी जनतामें मौखिक परपरासे गाया जाता है। प्रस्तुत महाकाव्यमें सगीत और काव्यकी प्रारभिक स्वाभाविक रमणीयताके दर्शन होते हैं। काव्यका प्रासङ्गिक परिचय पुस्तककी सम्पादकीय भूमिकामें दिया गया है। वगडावत काव्यके कतिपय विशेष अश साहित्यानुरागियोंकी जानकारीके लिये नीचे प्रकाशित किये जा रहे है। संपूर्ण काव्यका गठन एक विशेष लय (तर्ज) पर आधारित है।

[मङ्गलाचरण]

पैला ही कणी देवने सिवरजै और कुणीरा लीजै नाम ।
पैली अणगड देवने सिवरो और गणपतरा लीजै नाम ।

* * *

सारदा ब्रह्मारी डीकरी, हस बैठी वजावै वीण ।
खातो सवरे खतोडमे, एरण धमता लवार ।
बेटो रजपूतरो आपने सवरे,
उगतडे परभात नीली पाखर पर माण्डे झून ।

* * *

समरू देवी सारदा, नमण करूं गणेस ।
पांच देव रच्छा करे, ब्रह्मा विस्नू महेस ।

[रावत भोजा-वर्णन]

लेणा हररा जी नाम, परभाते भोजने गावणा ।
लेणा भोजरा नाम, भोज दातारारो सेवरो ।
मतवाळारो मोड, भोज दातारांरो सेवरो ।
ऊचा वधावे देवरा, सोनारा कळस चढाय ।
मोनाने काटी तोलणा, रूपाने लेणो ताय ।
रूप उधारो नी मले, मर्‌या न जीवे कोय ।

मर जाणो ससारमे, कई य न आवे लार ।
खावो न खूव्या करो, करो जीवरा लाड ।
जीवडा सरीखा पावणा, मले न दूजी बार ।
चुणियोडा देवळ ढस पडे, जनमियोडा नर मर जाय ।
काचा घडा नरजन पूतळा, काची मरदारी देही ।
असी चूडी काचरी, फूटे न फटीको होय ।
उगियोडा सूरज आथसी, फूलियाडा कुमलाय ।

[सूम वचन]

कई न आवे लार, सूमरे गाडी भरिया लाकडा ।
खाडी हाडी लार, सूमने जाय खेतरा उतार दो ।
गरूदेवरी आण, सूमसू धरती मेलो ढूआरजो ।
गुरूदेवरी आण सूमरा धूआ धूधला नीकळे ।
गुरूदेवरी आण, पाछो मलोजी भोळा रामजी ।
अतलोकरे माय पाछो मलोजी भोळा रामजी ।
कोठामे रह गयो धान, म्हारे गडिया रह गया टूकडा ।
धूळ व्हियो धन माल, सगो कोई नी रे बेटो बापरो ।
पूत न परवार, सगो कोई न जो घररी गोरज्या ।
सगो है न ससार, सगो कीजै रे अगनि देवता ।
वा लली सुधार सगी कीजो जी वनरी लाकडी ।
उठ जलेली लार, सगी कीजो जी वनरी लाकडी ।

[रावत भोजाकी दानशीलता और ऐश्वय]

गुरुदेवरी आण, ऊचा वधाऊ जी हररा दवरा ।
गज गरियारी नीव, म्हैं तो कूडा खुदाऊ रे बावडी ।

* * *

मायाने किण विध साय रे मायाने ऊडी गाड दा ।
दो ने शीगो ढळाय, मरदा काळ दुकाळा काढमो ।
गुरुदवरी आण, ताळा जड दो वीजळमाररा ।
वगड जडो कुमाड, मरदा काळ दुकाळा काढमो ।
गुरुदवरी आण आपा माडल ढावा मालवो ।
आपा यळता ढावा मेवाड, रे जानोडो परजा ढाउ ला ।

गुरुदेवरी आण, घोडीरै पगां ठळकती नेवरी ।
चांदीरी खुरताळ, घोडीरे हरियाला नेवर वाजणा ।
घमके घूघरमाळ, घोडी नानासणारी नेवरचा ।
गुरुदेवरी आण, घोडीरे झूल वणी जगाल जी ।
गुरुदेवरी आण, घोडीरे दुमची फूदा पाटका ।
गुरुदेवरी आण, घोडी ताजी जुगको ताजणो ।
सतजुगरो पलाण, घोडीरे लाख लाखरा पागडा ।
गुरुदेवरी आण, घोडीरे सिंगाडो सोने जडचो ।
हीरा तपे ललाड, घोड़ीरे मोती वालां जडचा ।
लाला जडी लगाम, चावडने तुर्रा तो ओपे घणो ।
तुर्रे तार हजार, रे वेलामे चमके वीजळी ।

[जयमती विरह-वर्णन]

गुरुदेवरी आण, हीरा काजळसूं काळी पडूं ।
रूप देहीरो जाय, छोरी काजळसू काळी पडू ।
वावा हाथरी मूदडी, छोरी रळकण लागी वाय ।
फूलांसू फोरो पडू, छोरी गेलामे आई नीद ।
नजरसू देख् रावत भोजने, जदी खाऊं धान ।
पछ मगरारा मोर, आज मीठा घणा वोल्या ।
घणा वोल्या दादर मोर समन्दरा हस जी ।
दियाडो घणो रूंडो लागे ओ हीरजी ।
छै दनरी ली रजिया भोज, यो छटो महीनो जाय ।

[जयमती सौन्दर्य-वर्णन]

भूल गया भगवान, भाभी ! वण साँचे दो घड़चा ।
भूल गया भगवान, भाभी ! नही देवळ फूतळी ।
नही नारामे नार भाभी ! नही देवळ फूतळी ।
गुरुदेवरी आण, भाभी जाघ देवळरो थभ जी ।
पिण्डी वेलण होय, भाभी एडी तो सुपारो वणी ।
नाक वणी तलवार, देवी मुख गंगा खळक रही ।
गुरुदेवरी आण, राणीरे गोडामे गुणेशजी ।
गोडामे गुणेशजी, देवीरी कमर केळीरी कामडी ।

पेट पीपळरो पान, देवीरे दात दाडम कर बीजड़ा ।
गरुदेवरी आण, देवीरे नेता सुरमो मारणो ।
कोया काळी रेख, देवीरे नेताजी सुरमो मारणो ।
गुरुदेवरी आण, देवीरी जीभ कमलरो पानड़ो ।
होठ फेफरा फूल, राणीरे जीभ कमलरो पानड़ो ।
कोया काळी रेख, देवीरी चोटी गई पनाळ ।
गुरुदेवरी आण, अगमरो झालो आवसी ।
अगमरो झोलो आवसी, पच्छमने लुळ जाय ।
पच्छमरो झोलो आवसी, अगमने लुळ जाय ।
चोफेरा वाजे वायरा, टूक टूक हो जाय ।
थने सूवो झपट ल जाय, हसनी बोल बेण जी ।
गुरुदेवरी आण, राणी सीप भर पाणी पिव ।
गुरुदेवरी आण राणी बोळ्या पानम जीमसी ।
गुरुदेवरी आण धणारी झोपड़ीमें खाय ।
चोथो दाणो चावता तो राणी पेट फाट मर जाय ।

[युद्धसज्जा और युद्ध]

गुरुदेवरी आण, भाटी नूताजी जगलमेररा ।
भीलवाडरा भील, मरदा गढ देवलरा देवड़ा ।
भीलवाडरा भील, मरदा गढ चित्तोड़रा चीतला ।
गुरुदेवरी आण, काळू मीया सनवाड ।
काळू मीया सनवाड, चढ़ ने वेगो आवजे ।
महाभारतरे माय, काळू चढ़ने वेगो आवज ।
गुरुदेवरी आण काळूरे ढाल उडे आग फरे ।
गूजर गावे गीत, काळूरी बरछी मागे आतड़ा ।
तग बगी तरवार, काळूरे छुरियां चमके बीजळी

* * *

रे जोधो नगमाल, नानी थवरो वाळवयो ।
हुयो जोध असवार, गयो पागीरे खतमें ।
भारत करता लागो सूरमा, धरती रगत धपाई ।
ए महीनारो भारत भूभियो, मागो देवी सीधा ।

के नीयाजीरो माथो चांवड माळामे पोयो ।
नीयाजी घोडो ऊवटा रगमहलांमे आवे ।
सूती हो तो जागजो नियारी आरती लीजो उतार ।
गज मोतीडा थाळ, गढरी गूजरचा आई ।
गूजरचा देखे वेप नीयाजीरे माथो नहीं ।

* * *

कै भड भाई चोईस, हुया घुडले असवार ।
कै रण भाग्त माचियो, खारीरे ढावे पास ।
देवी चावडा खप्पर खाण्डो ले ऊतरी ।
ऊतरी धर वदनोरासू आज वगडावतारी फोजमे ।
चोईमारा माथा काट, झट माळा पहरली ।
गण गण माथा तोड, बैठी वदनोरांरी ढाळमे ।

[देव नारायण]

देव पधारिया दसा वावडी, गावो मगलाचार ।
वधावा गावो परथीनाथरा, गावो मगलाचार ।
गूजर करे आरती, घणी खमा नारायण हीदे पालणे ।
पुजारा करे आरती, ओ नारायण हीदे पालणे ।
खारीरा भोमिया थारी आरती, भदेरचा भेरू थारी आरती ।
मातासरी ओ थारी आरती, वदनोरी चावडा थारी आरती ।
खूमाणा स्याम थारी आरती, काळी काळका थारी आरती ।
जोगडारा धणी थारी आरती, भूत्या सूक्या थारी आरती ।
तेतीस करोड देवता, थांरी वोला आरती ।
कासीरा वासी, ने वारा ही पुजारा वोला आरती ॥

२ महाराजा वहादुरसिंह कृत ख्याल

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके पुस्तकालयमें किशनगढ महाराजा वहादुरसिंह प्रणीत ख्याल परक एक नवीन कृति हालहीमें प्राप्त हुई है । यह कृति पुस्तकालय रजिस्टरमे क्रम संख्या १३७५२ पर अङ्कित हुए गुटकेमें लिखित है ।

ख्यालके कतिपय अश पाठकोकी जानकारीके लिए प्रकाशित किये जाते है ।

* श्री गणेशाय नम *

अथ ख्याल महाराज वहादुरसिंहजी कृत लिख्यते

राग रामकरी

सुतडीनं काही छेडो रूडा महान आळमियो हो आवै ।
द्रिग हिय महार पागा छुवावौ या नहो वात सुहावै ॥ १
हो लाडीजी श्री कई विसडी सुभाव ।
पिय आधीन रहैं कर जोडया तोहा भौंह चढाव ॥ २

राग ललित

उणीदा छो जी रातरा ।
वण स्थिल अरु नण भुक्या ही आवै, लग उठा परभातरा ।
पलका पीक अधर फीक रग, रम अळमाया गातरा ॥ ३

राग भर्‍ऊ

उणीदा वोलो घणा घूमै छ ।
झपक उझक मिल लालच नुभाव छ ।
अजव छरणवी भमै छ ।
उणीदी आपडल्या वर घूम छ ।
लालच लगी झमव मिल भपक ।
लाज दवी भुवि भूम छ ॥ ४

* * *

आज हुवो छ मनरी भायो, राज गहेनो व्है गुण गास्यां ।
पता गालग्रह कुवर पावणा, फिरघो दिन वद पास्या ॥
पुसी जनमरो माहि जनम फल, वयातणो जितास्या ।
या वेसरथान लडाय वर छरस्या, ग्रौर छरास्या और छरास्या ॥ ५२

नवल सखीजी भन आया हो राज ।
सांभो काज फून वीणण पायोजी पन्र आज ।
इहि वन फूनो सी फिरत अवेली तू आली सांवरी है ।
सांझीवौं फून गरैं डोगी हग पन मर भर भारी है ॥ ५३

रहै दोऊ उन्न निहार ।
फून स्याम सगी इत उत स्यामा सुकुमार ।
लता विन्नमें रह गये इन उत गर्म करौ न निहार ।
नागरिया मिल नन दुहागे वडे ठगन ठगनार ॥ ५४

पना मारूजी आजो जी प्यारा पावणा हो राज ।
पना मारूजी काछी चढज्यो कूदणे हो राज ।
पना मारूजी हाथे चावक मावल माज ॥
पना मारू धण थारी ओलू करै हो राज ।
पना मारू किणनै कहा दुख जियको आज ।
पना मारुजी मेह बूझा हरक हातमै हो राज ॥ ६२

* * *

मेहडलो लूवियो राज अजव झड रगरी मचो ।
नेह मेहरी झूम झूममै मतवालो मौज सचो ।
इद्र नीलमणिरै मधि नायक कुदन रेप पचो ।
घण दामणरो कियो घण उपमा लचो कचो ॥ ७१

* * *

हो गोरीजीरा वालम सेझडली लुभाया रग राता रै ।
लोयण झुक झुक उझक लजाता रै ।
लपि छकि छकि हरपा [ता] रै ।
झिझक देपि उठत छाता धुकै रुक मदमाता रै ।
कुवर पना किण नही भावो अलमाना मुमकाता रै ॥ ७९
महारा आलीजाजी थारी छवि भावै ।
मदछक राग गवाना महला वरछा थेगा देता आवै ॥ ८०
हरिया वनडा नेहडला लगा ।
अलभ लाभ धन भाग मान छकि वनडोकै चाव जगा ॥ ८१

उक्त ख्याल गुटकेके पुस्तकाकार ६ पत्रोमें लिखित है। इसमें कुल ८१ गीत हैं जो विभिन्न राग-रागनियोमे गेय है। सम्भवत लेखनमें ख्याल अपूर्ण रह गया है। उक्त ख्याल राजस्थानी भाषामें गीतिनाट्यके विकासको सूचित करने वाला एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण है, जिस पर उत्तर मुगलकालीन कलाका प्रभाव पूर्णरूपेण प्राप्त होता है।

३ वीरमदे सोनीगरारी वात—

सोनीगरा चौहान कान्हडदे, वीरमदे और राणगदे नामक वीरोके विषयमें अनेक साहित्यिक कृतियाँ राजस्थानी भाषामें उपलब्ध होती हैं, जिनमेंसे महाकवि पद्मनाभ विरचित काव्यग्रथ, कान्हडदे प्रबन्धका प्रकाशन राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालामें प्रतिष्ठान द्वारा पहिले किया जा चुका है और वीरमदे सोनीगरारी वातका प्रकाशन प्रस्तुत पुस्तकमें

किया जा रहा है। राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर द्वारा हालहीमें प्राप्त किए गए इन्द्रगढ़ (कोटा) के सरस्वती भंडारके हस्तलिखित ग्रन्थोंमें एक चारण गीत संग्रह भी है जिसमें उक्त सोनीगरा चौहान वीरोंके विषयमें भी गीत और दूहे लिखे गये हैं। पाठकोंकी जानकारी और संदर्भ हेतु उनको नीचे उद्धृत किया जा रहा है—

गीत वीरमदे सानगराको

सर सेल कटारी पट [पेट] न सबीया,
उरपीयो हर अहर दुप।
फुरत भलो वीरमदे फुगेयो
माथो पीड विण परा मुख ॥
पोहोप पटोळे वीर पुजीयो,
देप क वरज माहि दीवाण।
आणीया पछो हूवो अगराठो
सुदतायी मोभ वदी सुरताण ॥
रगि वंवरि न रचे अने रडे
गव प्रभतायी तणो रुप।
चरवा कजि उठि सीम ऽऽनो
मुप देप फररीयो मुप ॥
छ चोक छतीस पोहोरकी छेटी,
वीर तहु ऽ वोनगीया।
थाढीया पछो भतो वीरमद
फटि फटि [फाट फाट] कह नमल फरीयो ॥ ५२३

गात जतो सोनगरारो

जुग च्यार पद गा मुझ जोवता
गाजि वन रहना दोऽ गति।
आनि महार जिर उगाम,
जुगा देव नवो या जानि ॥
याहिव धाहि वतन आणाया,
गा जाप म ऽिठ मऽ।
रमळा मगो वऽऽ ऽऽवनो
रिम मिगीयो पिम वाग घटै ॥

मह रामायण सीस लीया म,
आप ईस मकत्तिसु येम ।
जाय आणिया स ताहि तु जाणे,
कहन आणिया सजाण केम ।।
उतवग अनत आणीया आगै,
नाथ कह माम्हळि नीय नारि ।
दीयणहार न मीळीयो दुजो,
सीघ समो भूम[प] तिस्यो सैसारि ।।
आप तणे त्रिय तणों आपरी,
भड भटनेर पडन भारि ।
सीर व्यहु वजसिये सोनंगर,
दीधा मुड वडै दातारि ।। ५२५

दूहा

वुतवग अरधंग ता, वधे कठ लडीयो वयम ।
जोय अचिरज जैसा नाडुळा, नर हर नयम ।। १
राणगा रुणझुणतेह, राय आगणि रमियो नही ।
पाय वेडी पहरेह, वाजंती वाणाउत ।। १ [२]
तगो न जांणै तोल, मूरप मछरीका तणो ।
कारणि हेक कुवोल, मारे काय आपे मरे ।। २ [३]
तगा तगाई झिणि करै, वोलै मोह सम्हालि ।
नाहर अर रजपूतनै, रैकारै ही गालि ।। ३ [४]
कथ कवियण साचो कहै, राणिगहवै सम्हालि ।
काय कर घाति कटारिया, काय पग आठी वालि ।। ४ [५]
जमडढ काढ्या जाय, चूवती उभै चौहटै ।
अमर न आडा थाय, रांणिगदेरा ताकिया ।। ५ [६]
सांकि कहियो सुरताण, यो कोलाहळ कासु हुवै ।
सदि रीमाणो रांण; काय मैगल पभ मरोडियो ।। ६ [७]

उक्त दूहोंमेंसे २, ३, ४ और ६ सख्यक दूहे मूल वार्तामें आ चुके हैं, शेष ३ दूहे नव हैं। सग्रहमें ५२४ सख्यक 'गीत राणगदे सोनगरारो" शीर्षकके अतर्गत दिया गया है कि यह वास्तवमे अमरसिंह राठौड़का है। गीतकी प्रथम पक्ति "सम्हारी जेम राणिग सोनग होनेसे लेखकको भ्रम हो गया है।